सुरेन्द्रनाथ सक्सेना

आप होंगे कामयाब

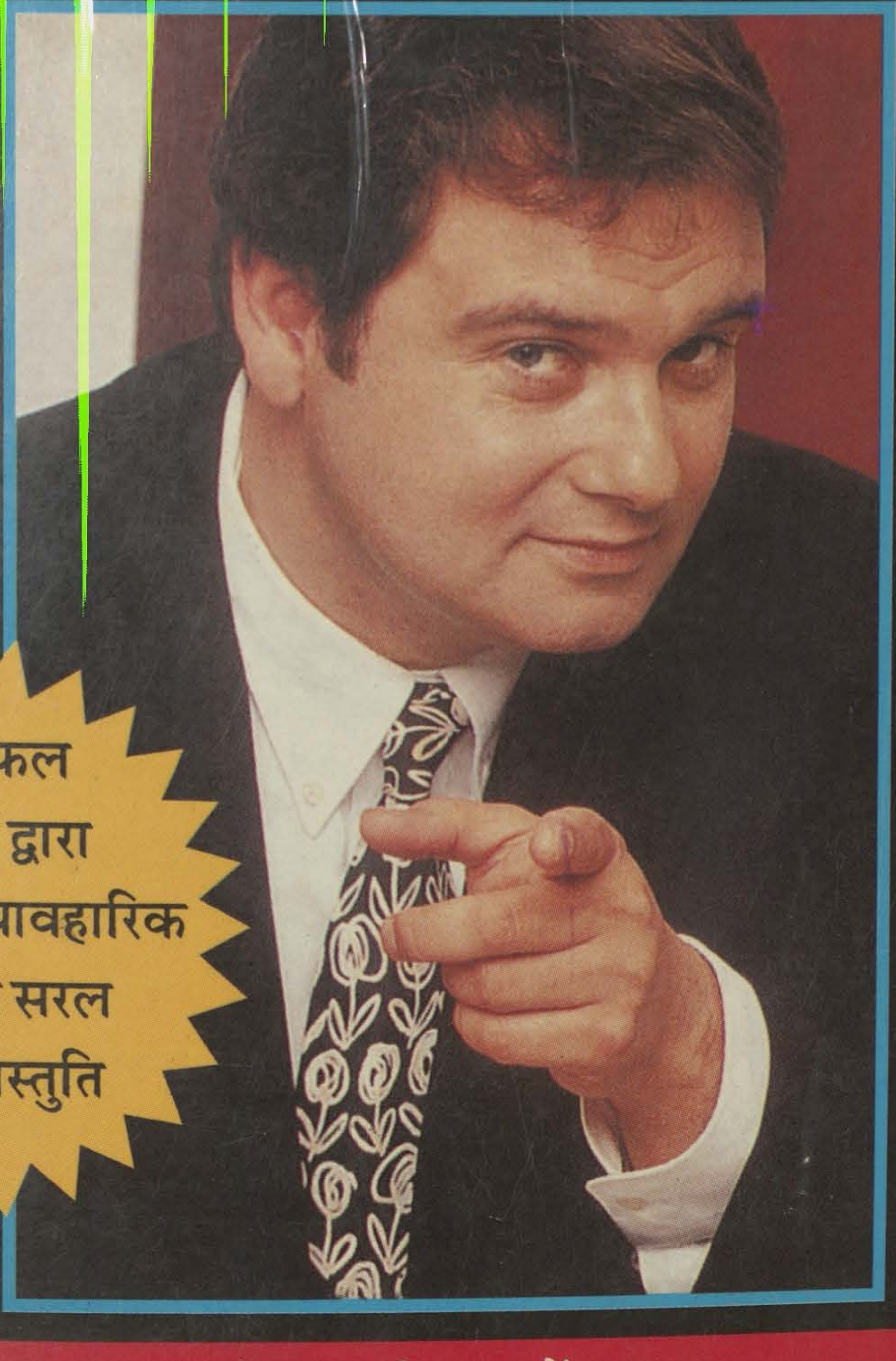

सभी सफल
व्यक्तियों द्वारा
अपनाए गए व्यावहारिक
नियमों की सरल
शब्दों में प्रस्तुति

ज़िन्दगी का राज़ जानें ख़ुद ही ख़ुद में डूबकर
ज़िन्दगी ख़ुद राज़ अपना खोलती हर वक़्त है

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आप होंगे कामयाब

आपकी उन्नति और सफलता की
सौ प्रतिशत गारंटी

संसार में सभी कुछ एक निश्चित प्रक्रिया में घटित होता है। जिन नियमों की व्याख्या कर ली जाती है, वे विज्ञान की सीमा में आ जाते हैं। जो घटना जो बुद्धि की पकड़ में नहीं आ पाती, उसे 'बाइ चान्स' का नाम दे दिया जाता है।

कामयाब होने के कुछ निश्चित नियम हैं। जो व्यक्ति उन नियमों को अपनाता है, सफलता उससे दूर नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, असफल होने का अर्थ है—जाने-अनजाने में उन नियमों का पालन न हो पाना, जो सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। कामयाब लोगों के जीवन का बारीकी से अध्ययन करने पर इसी बात की पुष्टि होती है।

इस पुस्तक में एक विशेष कैरेक्टर के जीवन की विभिन्न घटनाओं को पेश करते हुए लेखक ने कामयाबी का गणित समझाने का प्रयास किया है। लेखक की कोशिश रही है कि भाषा-शैली सरल, सहज और ग्राह्य हो। प्रत्येक अध्याय के बाद लेखक ने पाठकों को कुछ विशेष निर्देश भी दिए हैं, ताकि वे उन नियमों को पुस्तक पढ़ते समय ही अपनाना शुरू कर दें।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक अपनी कसौटी पर पूरी तरह से खरी उतरेगी। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी!

—प्रकाशक

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

किसी भी ताले को खोलने के लिए दो स्थितियां हो सकती हैं—एक, आपको ताले की सही चाबी दे दी जाए और दूसरी, चाबियों का भारी-भरकम गुच्छा थमा दिया जाए। पहली स्थिति के लिए कुछ ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है जबकि दूसरी स्थिति में समय के ज्यादा लगने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। ताला तो खुल ही जाएगा।

यह पुस्तक आपके सौभाग्य के विभिन्न क्षेत्रों के बंद तालों को खोलने की एक ऐसी 'मास्टर की' है जिसमें दिए गए नियमों को अपनाकर पहले ही प्रयास में—

आप होंगे कामयाब!

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आप होंगे कामयाब

सपनों को साकार बनाने वाले

अचूक दिव्य मंत्र

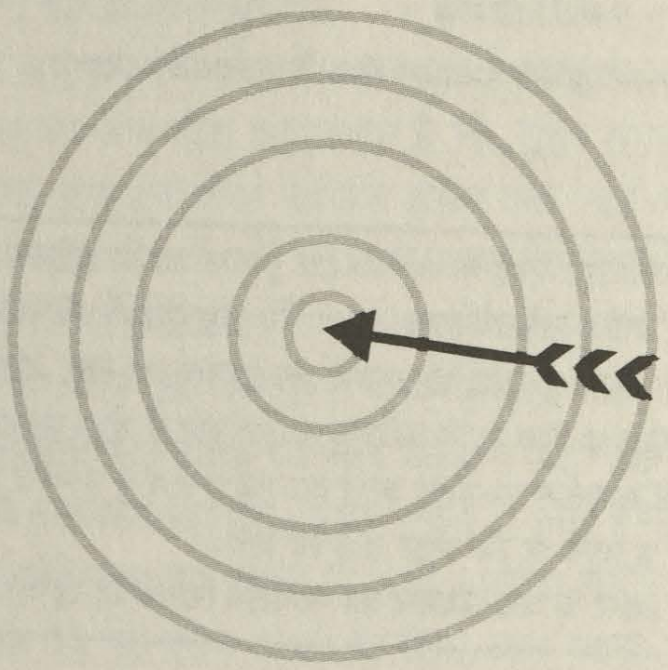

लेखक

सुरेन्द्रनाथ सक्सेना

मनोज पब्लिकेशन्स

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी,
दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349 फैक्स : 27611546
मोबाइल : 9868112194
ईमेल : manojpublication@mantraonline.com

भारतीय कॉपीराइट ऐक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की सामग्री तथा रेखाचित्रों के अधिकार 'मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-84' के पास सुरक्षित हैं, इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल-डिजाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार वे स्वयं होंगे।

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

संस्करण :
2003

~~मूल्य : 100/-~~

मुद्रक :

आदर्श प्रिण्टर्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

लेखक की ओर से

यह पुस्तक साधारण पाठकों के लिए नहीं है। इसकी रचना उन्हीं साहसी और महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लिए है जो जीवन में सफलता, धन, यश तथा महानता प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं।

यदि आपमें यह इच्छा है तो इसे अवश्य पढ़ें अन्यथा यहीं छोड़ दें।

आपके लिए यह जान लेना आवश्यक है कि *सुंदर सपने देखने या महान विचार रखने अथवा ज्ञान प्राप्त करने का उस समय तक कोई अर्थ नहीं जब तक आप अपने सपने, महान विचार और ज्ञान को अपने व्यवहार में नहीं लाते।* ज्ञान एवं महान विचार की सार्थकता तभी है जब उसे आप अपने जीवन में उतारें अन्यथा सुनहरे सपने कौन नहीं संजोता? महान विचार और नवीनतम ज्ञान भी गधे पर लदे उस खजाने की तरह है जिसका उपयोग वह गधा नहीं कर सकता।

परमात्मा को धन्यवाद कि हम-आप मनुष्य हैं और हमसे यह आशा की जाती है कि हम अपने ज्ञान का जीवन में सही उपयोग करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक का पूरा लाभ उठाने के लिए आप पहले इसे उपन्यास की तरह पढ़ डालिए। दूसरी बार पढ़ते समय अपने पास डायरी और कलम रखिए। **आपको जो बातें अच्छी लगें उन्हें डायरी में नोट करते जाइए। जो पंक्तियां हृदयस्पर्शी अनुभव हों उन्हें रेखांकित कर दीजिए।**

रात को हल्का भोजन करिए ताकि आप अपने जीवन लक्ष्य को पाने से संबंधित लिखी बातों पर चिन्तन-मनन कर सकें।

सबसे पहले यह विचारिए कि इस पुस्तक में जो लिखा है वह ठीक है या नहीं? यदि ठीक है तो उसे अपने जीवन में उतारिए। अगर ठीक नहीं अथवा आप पर लागू नहीं होता तो उसे छोड़ दीजिए।

पुस्तक में दी गई प्रेरणापूर्ण सामग्री **केवल पुरुषों के लिए ही नहीं, नारियों के लिए भी है।** वे भी सफलता के सिद्धान्तों को अपनाकर अपने जीवन को महान तथा सफल बना सकती हैं।

अपने जीवन लक्ष्य अथवा महान स्वप्न को साकार करने के लिए **एक**

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

समय सीमा निश्चित करिए। यह सीमा पांच वर्ष से अधिक नहीं हा, फिर इस पंचवर्षीय योजना को एक-एक वर्ष की 5 योज़नाओं में विभाजित कर लीजिए। पुन: एक वर्ष की योजना को तीन माह के चार-चार खण्डों में बांटिए।

योजना बनाते समय अपने लक्ष्य से संबंधित **सभी तथ्यों** को एकत्रित कर लीजिए। अपनी योजना से संबंधित किसी **सफल और अनुभवी व्यक्ति से सलाह अवश्य लीजिए।**

हर रात सोने से पहले अपनी डायरी में लिखिए कि आपने कौन-कौन से कार्य अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए किए? क्या-क्या गलतियां हुईं और उनसे भविष्य में कैसे बचा जा सकता है?

अपनी गलतियों या कमियों से कभी निराश मत होइए। अपने मन में सदैव इस विचार को दोहराते रहिए कि **''परमात्मा की कृपा से मैं दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा हूं।''**

इस पुस्तक को एक उपन्यास जैसी रोचक शैली में लिखने का प्रयत्न किया गया है। वास्तव में यह मेरे अभिन्न मित्र श्री के.एल. बग्गा के वास्तविक जीवन पर आधारित है और पुस्तक में दी गई लगभग सभी घटनाएं सच्ची हैं। वह एक ऐसे सफल व्यक्ति हैं जिन्होंने अपना कैरियर साइकिलों की मरम्मत करने वाले एक किशोर के रूप में शुरू किया और आज वे न केवल कई फाइनेंस कंपनियों का संचालन कर रहे हैं वरन् अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के भी महत्वपूर्ण पदाधिकारी हैं। उन्होंने इस पुस्तक के लेखन-प्रकाशन में पूरा सहयोग दिया है।

आज के युवकों के सामने सबसे बड़ी समस्या नौकरी पाने अथवा कोई व्यवसाय शुरू करने की होती है, इस समस्या के समाधान में यह पुस्तक उन्हें सैद्धान्तिक रूप से बहुत प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन दे सकती है।

परन्तु एक सत्य का सदैव ध्यान रखें। प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन भी वही व्यक्ति प्राप्त कर पाता है जो उसके लिए मानसिक रूप से तैयार हो।

पुस्तक को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए अनेक सफल महापुरुषों के दृष्टान्त भी शामिल किए गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहे कोई साधारण व्यक्ति हो अथवा महापुरुष उसके व्यक्तित्व के दो प्रमुख पहलू होते हैं। एक विधायक (Positive) और दूसरा नकारात्मक (Negative)।

बुद्धिमान पुरुष जिस प्रकार नाली में पड़े सोने को भी उठा लेते हैं उसी प्रकार सफलता पाने की साधना करने वाले, हर व्यक्ति से गुण की बात ग्रहण कर लेते हैं। आपको भी ऐसा ही बनना है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मेरा प्रारंभ से यह प्रयत्न रहा है कि *यह पुस्तक आपको कामयाब बनाने के हर तथ्य को सामने लाए।* वास्तव में पुस्तक के लेखन का संपूर्ण श्रेय श्री बग्गा को जाता है क्योंकि वे शुरू से इस बात पर जोर देते रहे कि पुस्तक में उनके वास्तविक अनुभवों का उपयोग इस प्रकार हो कि वह दूसरों को कामयाबी का रास्ता दिखा सके। उन्हें उत्साहित कर सके।

उनके अनुभवों को मुख्य रूप से चुनने का एक कारण यह भी रहा है कि वे हम सबकी तरह साधारण व्यक्ति लगते हुए भी अपने आपमें असाधारण हैं और अपने क्षेत्र के सफलतम लोगों में हैं। उन्होंने फुटपाथ से उठकर अपने महान सपनों को साकार किया है। आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं वरन् जीवन के अनेक क्षेत्रों में उन्होंने महान सफलताएं प्राप्त कीं।

यदि वह भारत विभाजन के बाद सब कुछ नष्ट हो जाने और घोर कठिनाइयों तथा आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए अपने जीवन में कामयाबी हासिल कर सकते हैं तो आप कामयाब क्यों नहीं हो सकते?

मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर आपने पुस्तक में दिए सफलता पाने के सिद्धान्तों को अपनाया तो निश्चित रूप से आप होंगे कामयाब।

कामयाबी पाने की राह पर आप यहां तक आ गए हैं, एक कदम और आगे बढ़िए, एक कदम और...एक दिन आप अपनी कामयाबी की मंजिल जरूर पा लेंगे।

परमशक्ति परमात्मा से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वह आपको कामयाबी पाने के गुणों तथा कर्मों से युक्त करे। आपको कामयाब बनाए।

सुरेन्द्र नाथ सक्सेना
फोन : 7483111
2614795

उद्यमेन ही सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा।

प्रयत्न करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं केवल मन में विचार करने से नहीं, सोए हुए सिंह के मुख में हिरन स्वयं नहीं प्रवेश करता।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आप क्यों नहीं

* **श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**—जब एक गरीब मछुवारे परिवार का पुत्र अपने अटूट परिश्रम, सतत प्रयत्नशीलता, लगन और बुद्धिबल से देश का राष्ट्रपति बनने में कामयाब हो सकता है। तो फिर आप क्यों नहीं?

* **लाल बहादुर शास्त्री**—जिस बच्चे के पास स्कूल जाते वक्त नदी पार करने के लिए पैसे नहीं होते थे और वह उसे तैर कर पार करता था, जिसने जीवन में घोर संघर्ष करने के बावजूद अपनी ईमानदारी, देशभक्ति और त्याग की राह नहीं छोड़ी तथा अंत में भारत का प्रधानमंत्री बनने में कामयाब हुआ। तो फिर आप क्यों नहीं?

* **मोहन सिंह ओबराय**—उन्होंने अपनी जिंदगी एक साधारण क्लर्क से शुरू की परन्तु अपनी अथक मेहनत, सूझ-बूझ और लगन से भारत के सबसे बड़े होटलों के स्वामी तथा संसद सदस्य बनने में कामयाब हुए। तो फिर आप क्यों नहीं?

* **धीरूभाई अंबानी**—जिन्होंने बहुत थोड़ी पूंजी से अपना व्यापार शुरू किया और अपनी दूरदृष्टि, व्यवहारकुशलता, जनसाधारण की आर्थिक उन्नति करने की भावना के बल से देश के चोटी के लोकप्रिय उद्योगपति बनने में कामयाब हुए, तो फिर आप क्यों नहीं?

* **कपिलदेव**—हरियाणा का यह साधारण युवक क्रिकेट खेलने के प्यार में पड़ गया। उसने अपनी सारी इच्छाशक्ति, परिश्रम, लगन, सूझ-बूझ क्रिकेट खेलने की कला में लगा दी और एक दिन पूरी दुनिया में इसे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। सफलता, धन, यश और लोकप्रियता उसके चरण चूमने लगी। जब एक साधारण युवक इतनी बड़ी कामयाबी पा सकता है फिर आप क्यों नहीं?

* **गुलशन कुमार**—'टी' सिरीज कैसेट कंपनी के संस्थापक स्व. गुलशन कुमार कभी फलों के रस की दुकान चलाते थे। परन्तु उनमें जीवन में कुछ महान बनने और करने की ज्वलंत इच्छा थी। अपने बुद्धिबल, परिश्रम तथा समय की

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मांग को समझने वाले इस युवक ने सफलता प्राप्त कर पूरे देश को चकित कर दिया। फिर आप क्यों नहीं।

* **सरदारी लाल बाहरी**—जयपुर गोल्डन ट्रांसपोर्ट कंपनी के संस्थापक ने अपना जीवन संघर्ष ग्यारह-बारह वर्ष की आयु में बर्तन पर कलई करने वाले बालक के रूप में शुरू किया। फिर ड्राइवर बने और फिर अपने अटूट परिश्रम, लगन, सूझ-बूझ और सबको साथ लेकर चलने की कुशलता से पूरे भारत की सबसे बड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनी चलाने का गौरव प्राप्त किया। फिर आप क्यों नहीं ?

* **स्वामी विवेकानन्द**—एक मध्यमवर्गीय शिक्षित युवक थे परन्तु स्वामी रामकृष्ण परमहंस से प्रेरणा और दीक्षा पाकर उन्होंने अपनी साधना, संयम, आत्मविश्वास से सारे विश्व में वेदांत का डंका बजा दिया। आज रामकृष्ण मिशन द्वारा किए जाने वाले कल्याणकारी कार्य लाखों लोगों को लाभ पहुंचा रहे हैं। फिर आप क्यों नहीं ?

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अनुक्रम

1.	आपका लक्ष्य क्या है	13
2.	प्रेरणा के प्रकाश स्तम्भ	17
3.	संसार में असम्भव कुछ नहीं	21
4.	विभाजन की अग्नि परीक्षा	24
5.	पहले कदम—स्वास्थ्य और संयम	28
6.	अपनी कल्पनाशक्ति का सदुपयोग करें	35
7.	जनसम्पर्क बढ़ाइए—सफलता पाइए	38
8.	अशुभ लक्ष्मी के लोभ से बचिए	42
9.	जब मैं सर्वनाश से बचा	44
10.	आपसी सहयोग के सूत्र	47
11.	शुभ संकल्प की शक्ति	49
12.	अपने में शुभ संकल्प की शक्ति कैसे जगाएं	51
13.	आप कौन-सा व्यवसाय करें	53
14.	हौसला नहीं हारें	57
15.	एक साथ दो नावों में पैर मत रखो	59
16.	हंसते-हंसते मरना	61
17.	मृत्यु के बाद के अनुभव	63
18.	प्रशंसा ही नहीं, निंदा भी सुनें	69

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

19. भूतों का माया-जाल 72
20. जब पसीना गुलाब था 77
21. अनजाने में हुईं गलतियां 81
22. अंधेरे में एक किरण 84
23. मातृदेवो भव 88
24. भाषण कला का जादू 91
25. विजय पाने का रहस्य 97
26. जीवन की चुनौतियों का सामना कीजिए 99
27. एक पत्र जो पतवार बन गया 102
28. जब मुझे परमात्मा का अनुभव हुआ 105
29. कामयाबी के विविध रूप 108
परिशिष्ट 112

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कामयाबी का यह अर्थ हरगिज़ नहीं,
कि 'बस हो गया'
कामयाबी सीढ़ियों की एक ऐसी लंबी श्रृंखला है,
जो कभी ख़त्म नहीं होती,
हां, फ़र्क़ इतना होता है कि
यह धीरे-धीरे स्थूल से सूक्ष्म होती जाती है।

—वेदान्त तीर्थ

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

1

आपका लक्ष्य क्या है

** कोई भी यात्रा शुरू करने से पहले यह जानना बहुत जरूरी है कि आपकी मंजिल क्या और कह ां है? इसी प्रकार जीवन में सफलता पाने के लिए सबसे पहले यह निश्चित करना आवश्यक है कि आपका अंतिम लक्ष्य क्या है?*

—डी. कारनेगी

** बिना निशाना तय किए तीर छोड़ते जाना केवल मूर्खता है।*

—नेपोलियन हिल

गर्म लू से दोपहर में दिल्ली की सड़कें ऐसी सुनसान लग रही थीं मानो कंक्रीट की इमारतों के उस महानगर में रहने वाले कहीं बाहर चले गए हों। धनवान हो या गरीब सब जून की उस तपती दोपहरी से बचने के लिए अपनी-अपनी तरह से कोशिश कर रहे थे। कोई एयरकण्डीशंड की शरण में था, कोई पंखे के नीचे तो कोई घने वृक्ष की छाया में। लेकिन उस आग-सी तपती दोपहरी में भी रोशनारा रोड के किनारे बनी एक छोटी-सी साइकिल की दुकान के आगे एक नवयुवक किसी साइ़किल की मरम्मत में जुटा हुआ था। उसे न तो गर्म धूप की परवाह थी और न आग-सी तपती गर्म हवा की।

वह एक नई साइकिल थी जिसमें हैण्डिल और ब्रेक्स में कुछ गड़बड़ी रह गई थी। इस साइकिल को उस युवक ने और दूसरी स़ाइकिलों के साथ एक फाइनेंस करने वाली कंपनी की आर्थिक सहायता से खरीदा था। साइकिलों को वह अपने ग्राहकों को मासिक इंस्टालमेंट्स पर दे दिया करता था और इससे उसे कुछ लाभ हो जाता था। आधे घंटे में ही उसने साइकिल को पूरी तरह ठीक कर दिया।

अपने शरीर का पसीना पोंछ कर, पानी पिया और पास के पेड़ की शीतल

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

छाया में भोजन करने का विचार बना कर अपना टिफिन उठाया। तभी पास से एक कार धूल और धुआं छोड़ती फर्राटे से निकल गई। नवयुवक का सारा शरीर धूल से भर गया। उसने पलट कर झुंझलाहट से दूर जाती हुई कार को देखा। एम्बैस्डर कार थी बिल्कुल नई। उसने मन ही मन निश्चय किया कि एक दिन वह उससे भी शानदार कार खरीदेगा पर कभी ऐसे नहीं चलाएगा कि दूसरों पर धूल की परत जम जाए।

मुंह-हाथ-पैर धोकर वह अपना भोजन करने लगा। उसकी बुद्धि में एक प्रश्न उठा—क्या कभी वह कार खरीदने के अपने सपने को सचमुच में साकार कर पाएगा?

प्रश्न का उत्तर दिया उसके हृदय ने—

''जोश तन में, होश मन में हो अगर
कुछ नहीं मुश्किल भुजाओं के लिए।
लौह इच्छाशक्ति है तो
सैकड़ों द्वार हैं संभावनाओं के लिए।''

यह किसी प्रसिद्ध कवि की काव्य पंक्तियां थीं जो उसे बहुत अच्छी लगती थीं, उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा-शक्ति देती थीं। पुस्तकें पढ़ने का उसे बहुत शौक था। प्रेमचंद का उपन्यास हो या गुलशन नन्दा का, वह उसे पूरा पढ़े बिना नहीं छोड़ता। वह उन्हें पढ़ने में इतना लीन हो जाता था कि सब कुछ भूल जाता। महान पुरुषों की जीवनियां उसमें जीवन में आगे बढ़ने की लालसा जगाती थीं, विशेष रूप से ऐसे महापुरुष जिन्होंने अपने जीवन की शुरुआत बहुत गरीबी से की थी लेकिन अपने गुणों और परिश्रम से उन्नति की महान ऊंचाइयों पर पहुंच गए थे। उसके आदर्श पुरुष थे—अब्राहम लिंकन, नेपोलियन बोनापार्ट, सरदार पटेल और स्वामी विवेकानन्द। इन महापुरुषों की जीवनियां पढ़ते-पढ़ते वह अपने आपसे ही प्रश्न करने लगता—'' *क्यों? क्या तुम ऐसे महान नहीं बन सकते? क्या तुम इन गुणों को अपने अंदर विकसित नहीं कर सकते?* ये महान लोग भी तुम्हारी तरह शुरू-शुरू में साधारण व्यक्ति थे वैसे ही जैसे तुम हो। फिर तुम क्यों नहीं बन सकते महान? *अब्राहम लिंकन तो एक बढ़ई का पुत्र था। जंगल से लकड़ियां काट कर गुजारा करता था। उसके पास पुस्तकें खरीदने तक के लिए पैसे नहीं होते थे। लेकिन अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, परिश्रम और बुद्धिबल से वह एक दिन अमरीका का राष्ट्रपति बन गया।''*

वह मन ही मन निश्चय करता है—'' *मैं भी धनवान और महान बनूंगा।*

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दुनिया में कुछ ऐसा सुन्दर और श्रेष्ठ कार्य करके जाऊंगा कि लोग मुझे याद रखें। मेरे जीवन से प्रेरणा लें।" और उसे अनायास मैथिलीशरण गुप्त की कविता याद आ जाती है—

"जान लो कि मृत्यु हो
न मृत्यु से डरो कभी।
मरो, परंतु यों मरो
कि याद जो करें सभी
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए
मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे।"

वह सोचता कि मानव सेवा करना, दीन-दुखियों की सेवा करना ही ऐसे कार्य हैं जिनसे व्यक्ति महान बनता है। केवल धनवान बनने से ही कोई आदमी संसार की दृष्टि में महान नहीं बन जाता। चोर-डाकू, स्मगलर, वेश्याएं, बदमाश भी तो धनवान होते हैं परन्तु उन्हें कोई महान नहीं कहता। लेकिन जो व्यक्ति अपने धन, ज्ञान या शक्ति से मानवजाति की सेवा करता है वही महान माना जाता है। इसलिए वह एक ऐसा व्यक्ति बनेगा जो अपने धन और ज्ञान से दूसरों की सेवा करे, उनके दुख-दर्द को दूर कर उनमें नया उत्साह, नई शक्ति जगाए। इसलिए वह अपनी जीविका कमाने के साथ-साथ पढ़ाई करता जा रहा है। साहित्य रत्न की परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है। जब समय मिलता है अपनी पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने में लग जाता है। इण्टर मीडिएट में तो वह पास हो गया था। अपने पाठ्यक्रम की पुस्तक उठा कर उसके नोट्स बनाने में लग जाता है। वह इतनी तन्मयता से पढ़ता है कि पुस्तक में दिए वर्णन में उसका मन रच-बस जाता है।

> **जहां तुम्हारी गहन प्रेरक आकांक्षा है, वहीं तुम हो।**
> **जैसी तुम्हारी आकांक्षा है, वैसा ही तुम्हारा अभिप्राय है।**
> **जैसा तुम्हारा अभिप्राय है, वैसा ही तुम्हारा कर्म है**
> **और जैसा तुम्हारा कर्म है, वैसा ही तुम्हारा भाग्य है।**
> *—बृहदारण्यक उपनिषद्*

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

निश्चित जीवन लक्ष्य (अपने को जांचिए)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए और उन पर विचार करिए—

1. आपकी तीन मनपसन्द रुचियां क्या हैं, उनको अपनी पसन्द के अनुसार लिखें—

1. 2. 3.

2. आपको किन तीन कार्यों को करने में सबसे अधिक आनन्द आता है। यह ऐसे कार्य होने चाहिए जिन्हें आप बिना थके कम से कम 6 घंटे तक कर सकें अथवा जिन्हें करते समय आप समय को भूल जाएं।

1. 2. 3.

3. आपको सबसे अधिक प्रेरणा कौन-से तीन महापुरुष देते हैं—

1. 2. 3.

4. वे कौन से तीन विषय हैं जिनमें आपको सबसे अधिक अंक मिले हैं—

1. 2. 3.

5. आपके सबसे प्रिय तीन सपने कौन-से हैं—

1. 2. 3.

6. क्या आपने किसी विशेषज्ञ से अपना व्यवसाय अभिरुचि परीक्षण (Aptitude Test) कराया है। उसके परिणाम क्या हैं?

आपको व्यापार करना पसंद है या उच्च स्तर की नौकरी करना? कारण भी लिखिए।

7. क्या आपको दूसरों के साथ मेल-जोल करना अच्छा लगता है?

8. आपको दूसरों को अपने विचारों से सहमत कराने की कला आती है?

9. आपके पिता या बुजुर्ग क्या सलाह देते हैं?

अब आप उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर अपना एक निश्चित जीवन लक्ष्य बना सकते हैं। बनाइए और उसे स्पष्ट लिख डालिए। इसे नित्य सुबह-शाम पढ़िए और उस पर विचार करिए, योजना बनाइए।

ध्यान दें—लक्ष्य बनाते समय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य आपकी अभिरुचि और ज्वलंत इच्छा है।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

2

प्रेरणा के प्रकाश स्तम्भ

उसने अपनी डायरी में विभिन्न महापुरुषों और सफल व्यक्तियों की जीवनी के प्रेरणापूर्ण अंशों को लिख रखा है। इन्हें वह नित्य दिन में एक बार सोने से पहले और सुबह उठते ही अवश्य पढ़ता है। इससे उसे नित्य नवीन प्रेरणाशक्ति और उत्साह मिलता है। इनमें वह नए-नए सफल स्त्री-पुरुषों के उदाहरणों को जोड़ता जाता है। यह प्रेरणापूर्ण सामग्री आज भी उसके पास है।

इस सामग्री के प्रेरणाशक्ति और उत्साह देने वाले अंश हैं—

** बिड़ला उद्योग समूह के संस्थापक श्री जी.डी. बिड़ला और टाटा उद्योगों के संस्थापक श्री जमशेद जी टाटा—अपने जीवन के प्रारम्भ में बहुत ही साधारण आर्थिक स्थिति के व्यक्ति थे, परंतु उन्होंने अपने परिश्रम, बुद्धिकौशल और सूझ-बूझ से आर्थिक जोखिम उठाने के साहस से धीरे-धीरे अपने-अपने क्षेत्रों में महान आर्थिक सफलताएं प्राप्त कीं।*

फिर आप क्यों नहीं सफल हो सकते हैं?

** अमरीका का अरबपति एन्ड्रू कारनेगी किशोर अवस्था में स्टील मिल में एक मजदूर था। परंतु उसने परिश्रम करके धन कमाया, बचत करके उसे जोड़ा और बढ़ाया फिर उसे विभिन्न उद्योगों के शेयर्स खरीदकर उनमें लगाया। वह अपनी लगन और सूझ-बूझ से उन्नति पथ पर लगातार बढ़ता गया।* **उसे धन कमाने से उतना ही प्यार था जितना किसी प्रेमी को अपनी प्रेमिका से होता है।** *अंत में वह अमरीका के बड़े पूंजीपतियों में गिना जाने लगा। परंतु इससे भी उसे मानसिक शांति नहीं मिली। उसका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। मानसिक शांति पाने के लिए उसने अपने को मानव कल्याण और विकास के कार्यों में लगा दिया और करोड़ों रुपये इन कार्यों के लिए दान कर दिए।*

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

यदि एक मजदूर अरबपति बन सकता है, दानवीर बन सकता है तो निश्चित रूप से आप भी बन सकते हैं।

* स्व. मोहनसिंह ओबराय ने अपना जीवन होटल के एक साधारण क्लर्क के पद से शुरू किया। अपने परिश्रम, बुद्धिबल तथा व्यवहारकुशलता से वह होटल मैनेजर बने फिर उन्होंने वह होटल ही खरीद लिया। इसके बाद उन्होंने भारत में ही नहीं विश्व के अनेक स्थानों पर पांच सितारा होटल स्थापित किए। उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ होटलों के मालिक के रूप में होती थी। वे तीन बार सांसद बने और 103 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ।

* जब एक साधारण क्लर्क भी करोड़ों का स्वामी और यशस्वी बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। हर हालत में आप अपने मनपसंद क्षेत्र में कामयाब हो सकते हैं पर उसके लिए आपको भी कामयाबी पाने के नियमों पर चलना होगा।

* विश्वविख्यात कवि गोथे ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'फास्ट' की रचना उस समय की जब वह 82 वर्ष का था। इस रचना से वह अमर बन गया। प्रसिद्ध चित्रकार टिटन ने 98 वर्ष की आयु में उत्कृष्ट चित्र बनाए।

* एंग्लोइंडियन लेखक नीरद चौधरी ने 99 वर्ष की आयु में एक उपन्यास लिखा जो प्रकाशित और चर्चित हुआ। अत: कामयाबी के रास्ते में उम्र कोई बाधा नहीं है। जब भी आपमें कामयाबी पाने की सच्ची चाह जाग जाए, लगन लग जाए, आप कामयाब हो सकते हैं।

* आइन्सटीन जैसे महत्वपूर्ण और चर्चित वैज्ञानिक स्टीफेन डब्ल्यू हाकिंग पूरी तरह अपंग हैं। वह विश्वविख्यात भौतिकशास्त्री हैं। वह सदैव पहिए वाली एक कुर्सी पर पड़े रहते हैं। बातचीत करने के लिए भी उन्हें 'वाइस सिन्थेसाइजर' (Voice Synthesizer) यंत्र की जरूरत पड़ती है। जब वह विश्वविद्यालय में थे तभी से उन्हें यह भयानक रोग लग गया। उन्होंने सन् 2002 में 61 वर्ष की आयु में अपनी अपंगता के बारे में कहा था—**मेरी शारीरिक अयोग्यता से मुझे एक लाभ यह है कि इसके कारण मैं बैठे-बैठे विचार करते रहने के लिए स्वतंत्र हो गया हूं।** भौतिकशास्त्री ही नहीं वह एक अच्छे तथा लोकप्रिय लेखक भी हैं। उनकी दो पुस्तकें 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' और 'नटशेल' बेस्ट सेलर रही हैं। **उनके आशा और विश्वास भरे दृष्टिकोण को अपनाइए।**

यदि एक अपंग आदमी विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक और लेखक बन सकता है तो आप भी अपने लक्ष्य को पाने में कामयाब होंगे, अवश्य होंगे। हिम्मत और हौसला रखकर आगे बढ़िए।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आप होंगे कामयाब!

** अमरीका का एरिक वेहन मेयर नामक कोलेरेडो निवासी व्यक्ति जो अंधा था, उसने अपने पर्वतारोही दल के अन्य सदस्यों सहित 25 मई, 2001 को संसार की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय पाकर संसार को चकित कर दिया। जब वह 13 साल का था तो उसकी आंखों की रोशनी जाती रही। उसने 3 साल बाद 16 साल की आयु में पर्वतारोहण का अभ्यास शुरू किया। वह अपने साथियों की जैकेट में लगी घंटियों की आवाजों का अनुसरण कर एवरेस्ट पर पहुंचने में कामयाब हुआ।*

एक अंधा व्यक्ति अपनी इच्छाशक्ति से असंभव कार्य को संभव बना सकता है फिर आप आंखों वाले होकर भी अपनी जिंदगी की मंजिल तक क्यों नहीं पहुंच सकते?

* हेलन केलर अमरीका की इस अंधी, बहरी और गूंगी लड़की ने अपनी अध्यापिका की सहायता से अपनी शक्तियों का विकास करने के लिए लगातार तीन वर्षों तक कठिन प्रयत्न किए और विश्वप्रसिद्ध लेखिका, वक्ता एवं अपंग व्यक्तियों की मसीहा बन गई।

आप तो हेलन केलर से कहीं अधिक भाग्यवान हैं। आप भी बार-बार कोशिश कर कामयाब बन सकते हैं।

** मदर टेरेसा एक बहुत साधारण ईसाई 'नन' थीं। अपने आध्यात्मिक प्रेम और निःस्वार्थ सेवा के कारण वह संसार भर में प्रसिद्ध हो गईं। उन्होंने हजारों दीन-दुखियों को नया जीवन दिया। उन्हें शांति का नोबेल पुरस्कार दिया गया।*

ऐसी सैकड़ों भारतीय और विदेशी नारियां हैं जिन्होंने साधारण स्थिति से ऊपर उठकर पूरे संसार में अपना नाम उज्ज्वल किया फिर आप क्यों नहीं कर सकते?

आप निश्चित रूप से कामयाब हो सकते हैं। केवल शर्त यह है कि आप पूरी शक्ति और लगन से अपने उद्देश्य को पाने में जुट जाएं।

अपने जीवन से सीखें

1. अभी तक आपने अपने जीवन में जो तीन सफलताएं प्राप्त की हैं वह चाहे जितनी मामूली हों (जैसे—किसी कक्षा या खेल प्रतियोगिता अथवा सांस्कृतिक प्रतियोगता मे प्रथम, द्वितीय या तृतीय आना) उसे उसके महत्व के अनुसार लिखें।

अ. ब. स.

2. अपनी इन सफलताओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राजनीतिक कारण लिखें। उदाहरणार्थ—

सफलता के कारण—व्यक्तिगत गुण परिश्रम, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक।

3. आपने अपने जीवन में अभी तक जो तीन असफलताएं पाई हैं उनके कारण भी इसी प्रकार लिखें। क्रम पूर्ववत् रहेगा अर्थात् पहले तीन असफलताएं फिर उनके ऊपर लिखें कारण।

4. अपने गुणों की सूची बनाएं, उदाहरणार्थ—परिश्रमी, व्यवहारकुशल, आर्थिक जोखिम लेने का साहस, ज्ञानार्जन की इच्छा, बचत करने की आदत आदि।

5. अपने अवगुणों की सूची जैसे—क्रोध का जल्दी आना, अधिक बोलना, जल्दबाजी, आर्थिक जोखिम न लेना, काम को टालना आदि को लिखिए।

6. अपने गुणों का विकास करने के लिए प्रयत्न करिए।

7. अपने अवगुणों क़ो दूर करने के लिए प्रयत्न करिए।

8. आपको अपने अवगुणों से अभी तक क्या-क्या हानियां हुई हैं, उन्हें लिख डालिए।

9. आपको अपने गुणों से अभी तक क्या-क्या लाभ हुए हैं, उन्हें लिख डालिए।

10. प्रतिदिन रात में ध्यान दीजिए कि गुणों का विकास करने तथा अवगुणों को कम करने के प्रयत्नों के क्या नतीजे हो रहे हैं?

11. रोज किसी ऐसे सफल महान पुरुष की जीवनी के कम से कम चार पृष्ठ पढ़िए जिससे आपको आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती हो।

इस संबंध में निम्नलिखित काव्य पंक्तियां आपको नए उत्साह से पूर्ण कर देंगी—

जब तक न स्वयं ही बेचैनी से उठे जाग,
जब तक न स्वयं कुछ करने की लग जाय आग,
उकसाए कोई लाख बार
मुर्दादिल में ललकार नहीं कोई होगी।
जब तक न लहरता स्वाभिमान का रक्त बहे,
जब तक न आत्मसम्मान जाग कर मुक्त बहे,
ठुकराए कोई लाख बार पर बुजदिल में
हुंकार नहीं कोई होगी॥

सोहनलाल द्विवेदी

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

3

संसार में असम्भव कुछ नहीं

"परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धिबल देकर सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बना दिया है। अपनी बुद्धि का सही उपयोग कर आज मानवजाति ने वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा असम्भव समझे जाने वाले कार्यों को भी संभव कर दिया है। अतः व्यक्ति को सदैव यह विश्वास रखना चाहिए कि उसका जीवन उद्देश्य चाहे कितना असम्भव दिखता हो फिर भी वह उसे अपने बुद्धिबल से सतत प्रयत्न करके प्राप्त कर सकता है।"

—एमिल जोला

रात का घनघोर अंधेरा। आकाश में काली घटाएं छा रही थीं जिससे तारों की चमक भी छिप गई थी। सांय-सांय करती हवा तेजी से बह रही थी। रात के साढ़े बारह का समय था। साहसी से साहसी व्यक्ति भी घर से बाहर निकलने की मूर्खता नहीं कर सकता था। परन्तु ऐसे भयावह मौसम में वह अपनी सेना को रणभूमि में बड़ी कुशलता से क्रम में खड़ा होने के आदेश दे रहा था।

सबसे आगे तोपें थीं जो अर्धचन्द्राकार में खड़ी थीं। उन्हें अपनी सीध में धीरे-धीरे आदेशानुसार बढ़ना था। पीछे घुड़सवार सेना थी। उसके बाद पैदल सैनिक। सारी सेना को क्रमबद्ध कर उसने अपने कैम्पों में सोई शत्रु सेना पर आक्रमण करने का आदेश दिया। तोपों से एक साथ गोले छूटने से सारा वातावरण उनके धमाकों से हिल गया। उसकी सेना आगे बढ़ने लगी। थोड़ी देर में ही शत्रु की तोपों ने भी गोलाबारी का जवाब देना शुरू कर दिया। चारों ओर युद्ध की ललकार, चीख-पुकार सुनाई देने लगी। उसने बिना कोई चिन्ता किए अपने सहायक सेनापति को बुलाकर आदेश दिया—आधे घंटे तक तोपों से गोलाबारी करते रहो। इस बीच घुड़सवार सेना से कहो कि वह दुश्मन की तोपों से बचते

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हुए दुश्मन पर दाहिनी और बायीं ओर से आक्रमण करे। आक्रमण तूफानी तेजी से अचानक हो और आधे घंटे में दुश्मन को तहस-नहस कर फिर लौट आए। अब मैं सोने जा रहा हूं। आधे घंटे बाद उठूंगा। जब तक कोई खास बात न हो मुझे जगाया न जाए और वह एक बड़ी तोप के नीचे बनी खाई में जाकर आराम से सो गया। ऊपर युद्ध का ताण्डव हो रहा था। तोपों और बन्दूकों की गर्जना से धरती कांप रही थी पर वह बेफिक्री से सो रहा था, मानो धरती उसकी मां हो और उसके वक्ष में शरण पाने के बाद वह सभी प्रकार के भयों से मुक्त हो। कुछ मिनटों में ही वह गहरी नींद में पहुंच चुका था।

ठीक आधे घंटे बाद वह जाग उठा। फुर्ती से खड़ा हुआ, अपनी कैप सिर पर लगाई और खाई से बाहर निकल कर अपने सहायक सेनापति से पूछा, "युद्ध का क्या हाल है?"

"हमने दुश्मन की सेना के अगले भाग को बहुत कमजोर कर दिया है। जवाबी गोलाबारी रुक-रुक कर हो रही है। दुश्मन के हौसले पस्त हो गए हैं। हमारी घुड़सवार सेना दुश्मन के पचास तोपचियों को मार चुकी है। वह वापस आतीं होगी।"

और ठीक तीन घंटे की लड़ाई में उसने अपनी सेना से दोगुनी सेना को युद्ध के मैदान से भागने के लिए मजबूर कर दिया।

रण-कौशल में चीते सा चतुर यह सेनापति था फ्रांस का विश्वप्रसिद्ध सेनापति जो एक साधारण सैनिक अफसर से उन्नति करता हुआ फ्रांस का राजा बन गया। उसका प्रेरणा वाक्य था—"*इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं।*" (Nothing is impossible in the World.)

उसको यह वाक्य बहुत शक्ति और साहस देता था। नेपोलियन बोनापार्ट की जीवनी को वह इसीलिए बार-बार पढ़ता और मन ही मन उसके गुणों को ग्रहण करने की कोशिश करता था।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपने को परखिए

महान स्त्री-पुरुषों के जीवन पर आधारित सफलता पाने के गुण। इन्हें ध्यान से पढ़ें और देखें कि आपमें वह गुण कितनी मात्रा में है। प्रत्येक गुण का पूर्ण मूल्यांक 100 है।

सफलता पाने के आवश्यक गुण

1. एक निश्चित लक्ष्य को पाने की ज्वलंत इच्छाशक्ति
2. आत्मसंयम
3. आत्मविश्वास
4. उत्साह
5. बचत करने का गुण तथा बचत को लाभ कमाने की योजना में लगाना
6. शुभ संकल्पशक्ति तथा शुभ कल्पनाशक्ति
7. सही निर्णय लेने और पहल करने की शक्ति
8. सफल व्यक्तियों की संगत और सहयोग लेने की कला
9. अच्छा स्वास्थ्य
10. प्रसन्नतापूर्ण व्यक्तित्व
11. दूसरों की भलाई करने की इच्छा
12. सहनशीलता
13. यथार्थवादी रचनात्मक योजना बनाने और उस पर चलने की शक्ति
14. उचित आर्थिक जोखिम लेने का साहस
15. बातचीत करने की कला
16. सर्वश्रेष्ठ स्तर को पाने का हार्दिक प्रयत्न करने की आदत।

यदि आप उपर्युक्त गुणों के मूल्यांकन में 33% अंक भी पाते हैं तो निश्चित रूप से आपमें सफल और महान बनने की संभावनाएं छिपी हैं।

आपमें जो गुण हैं उनका विकास करिए, जो नहीं हैं, उन्हें सीखिए, जो कम मात्रा में हैं उन्हें और बढ़ाइए।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

4

विभाजन की अग्नि परीक्षा

''सोना जैसे आग में तप कर खरा बनता है और उसमें नई चमक आ जाती है, उसी प्रकार प्रतिभाशाली व्यक्ति कठिन संकटों, मुसीबतों और गरीबी की आग में तप कर अपने व्यक्तित्व को और अधिक शक्तिशाली बनाते हैं।''

—बुद्धि राजा

प्रायः रात में उसे गहरी नींद आती थी क्योंकि सुबह 4 बजे से लेकर रात के 11 बजे तक उसका पूरा दिन अपने विभिन्न कार्यों में बीतता था। लेकिन जब उसे मधुर यादों से भरे अपने बचपन की कोई घटना कचोट जाती तो फिर निद्रा रानी भी रूठ जाती थी।

भारत विभाजन से पूर्व वे पंजाब के अपने गांव चकबसावा में कितने आराम से जिन्दगी गुजार रहे थे। लेकिन देश के बंटवारे ने उन्हें अपने सुखद स्वप्नों जैसे सुन्दर महल से निकाल कर फुटपाथ पर फेंक दिया, बिल्कुल बेसहारा।

चकबसावा गांव पंजाब के गुजरात जिला का एक हरा-भरा गांव था। अब पाकिस्तान में चला गया। पता नहीं, कभी वह बचपन की नटखट, नमकीन, खट्टी-मीठी यादों से भरे उस गांव को दोबारा देख भी पाएगा या नहीं। पता नहीं उन लोगों की कोठी का क्या हुआ हो, उसमें कौन रहता हो या उसे गिरा कर किसी ने कोई अपना नया मकान बना लिया हो। वह कोठी क्या, एक अच्छी-खासी हवेली थी जिसके पास हरे-भरे वृक्ष खड़े थे। उस हवेली का एक भाग पिता (स्व. श्री राजमल) ने स्कूल के लिए दे दिया था जिसमें वह भी पढ़ने जाया करता था।

देश के विभाजन में लाखों स्त्री-पुरुष मारे गए थे, बहुत से जलती हुई आग में झोंक दिए गए थे, हजारों स्त्रियों के साथ बलात्कार हुए थे। पाकिस्तान

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बनाने के जोश में पागल हुए जिन्ना के अनुयायियों ने हैवानियत का कोई भी हथियार बिना इस्तेमाल किए छोड़ा नहीं था।

काश! नेहरू जी बहुत ज्यादा नहीं, बस एक वर्ष और एक माह रुक जाते तथा अपने सर्वप्रिय नेता महात्मा गांधी में विश्वास रखते हुए भारत विभाजन के लिए सहमत नहीं होते।

उसे याद है, अच्छी तरह याद है कि जिस समय नेहरू जी ने भारत विभाजन को स्वीकार करने की सूचना महात्मा गांधी जी को दी उस समय सरहद गांधी नाम से विख्यात अब्दुल गफ्फार खान ने कहा था, ''आपने हमें भेड़ियों के आगे फेंक दिया।'' क्योंकि उनका पख्तून इलाका वहां की जनता की इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में मिला लिया गया था। महात्मा गांधी और अब्दुल गफ्फार खान ने पूरे भारत में हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए जो कार्य किए वे कभी भुलाए नहीं जा सकते। परन्तु यह भारतीय इतिहास का दुर्भाग्य रहा है कि यहां जिन्ना जैसे सिरफिरे देशद्रोही हमेशा होते रहे हैं।

15 अगस्त, 1947 को भारत, लहूलुहान भारत, दो टुकड़ों में नहीं टुकड़ों-टुकड़ों में बंटा भारत आजाद हुआ और 11 सितम्बर, 1948 को जिन्ना की मृत्यु कैंसर रोग से हो गई। अगर भारतीय नेता केवल 13 माह रुक जाते तो देश का बंटवारा नहीं होता पर अंग्रेजों ने अपना कूटनीतिक जाल इतनी चालाकी और मजबूती से बिछाया था कि जवाहर लाल नेहरू जैसे बुद्धिमान, दूरदर्शी और महान नेता भी कुछ नहीं कर सके।

कड़वा सच यह है कि जितने हिन्दू और मुसलमान देश की आजादी के लिए शहीद नहीं हुए उससे कहीं अधिक देश के विभाजन में एक-दूसरे की हिंसा के शिकार हो गए। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति आज तक अपना कमाल दिखाती आ रही है।

यह सब सोचकर उसे बहुत दुख होता। वह और उसका परिवार बड़ी मुश्किल से पाकिस्तान की सरहद को पार कर भारत आ पाए थे। विभाजन के समय बड़े भाई श्री भागमल ने भारत सरकार से प्रार्थना कर सेना के 5 ट्रक हिन्दुओं को निकालने के लिए भेजे थे। वह उस समय मंसूरी आए हुए थे। इसलिए दिल्ली आकर उन्होंने तत्कालीन सरकारी अधिकारियों से बात कर उन्हें इस कार्य के लिए सहमत किया। इन्हीं ट्रकों में उसका परिवार अपना सब कुछ गांव में छोड़ कर बस जो कुछ जल्दी-जल्दी साथ ला सका उसे लेकर भारत के लिए चल पड़ा।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

भारत विभाजन का रक्त भरा ऐतिहासिक तथ्य अपने अंदर लाखों दर्द और करुणा भरी कथाएं समाए हुए है। पशुओं की हिंसा को भी शर्मा देने वाली सच्ची कहानियों से भरे उस दौर में सैकड़ों हिन्दू-मुसलमान भाई ऐसे भी थे, जिन्होंने अपनी जान पर खेल कर दंगाइयों के अत्याचार से अपने पड़ोसियों और मित्रों को बचाया।

परन्तु कहानियां चाहे कितनी सच्ची हों उस क्रूर सत्य को सहन करने वालों के अनुभवों की समानता नहीं कर सकतीं। विभाजन की आग से बचकर जो लोग भारत आए उनका सब कुछ लुट चुका था। वे एक बहुत बड़े हादसे और सदमे से गुजर कर आए थे।

वह और उसका परिवार ऐसी ही संकटपूर्ण स्थिति में थे। उन्होंने अपने आपको नए हालातों के साथ जल्दी ही ढाल लिया। पिता जी श्री राजमल ने दिल्ली आकर कुछ भैंसें खरीद लीं और उनका दूध बेचने लगे।

वह भी पढ़ाई के साथ-साथ कुछ कमाई करने लगा और साइकिलों की मरम्मत करने की दुकान रोशनारा रोड पर खोल ली। उन वर्षों में दिन के 24 घंटों में से 12 घंटे वह जी-तोड़ परिश्रम करता था। दिन किस तरह गुजर जाता पता नहीं लगता। अपने ग्राहकों का विश्वास जीतने के लिए वह खूब परिश्रम करता और उन्हें कम मूल्य पर अधिक से अधिक सेवा देता।

अपने परिवार से उसे *मीठा बोलने और खुशमिजाज रहने* के संस्कार मिले थे। इन सबका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों में उसे दुकान से अच्छी आमदनी होने लगी। उसने देखा कि बहुत से ऐसे गरीब लोग हैं जिन्हें साइकिल की जरूरत है पर वे एकमुश्त रुपया देकर उसकी कीमत नहीं चुका सकते। तभी उसके दिमाग में यह स्कीम आई कि वह चार-पांच साइकिलें खरीद ले और उन्हें अपने विश्वसनीय ग्राहकों को किश्तों पर दे दिया करे। इससे उसे रुपयों पर ब्याज लेकर कुछ आमदनी हो जाएगी और साथ ही गरीब लोग सरलतापूर्वक साइकिल खरीद सकेंगे। उसने इस स्कीम के संबंध में गहराई से खोजबीन शुरू कर दी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जनसंपर्क तथा धन

1. अपने परिवार की एकता और सहयोग को विकसित करने के प्रयत्न करिए। व्यक्ति की सफलता में पारिवारिक एकता तथा सहयोग महत्वपूर्ण योग देते हैं।

2. क्या आप अपने क्षेत्र के विधायक अथवा मंत्री से भली प्रकार परिचित हैं ? क्या आप अपने क्षेत्र के प्रमुख पुलिस अधिकारी, इनकम टैक्स ऑफिसर तथा अन्य महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारियों, प्रमुख समाज सेवकों, पूंजीपतियों और व्यापारियों, पत्रकारों आदि से भली प्रकार परिचित हैं ?

यदि नहीं तो उनसे परिचय बढ़ाइए, उनके ज्ञान, अनुभव और शक्तियों से लाभ उठाइए तथा उनको उचित लाभ, सुविधाएं या सेवाएं देने के प्रयत्न करिए। लेकिन ये सभी कानून सम्मत हों।

3. अपने निकटवर्ती रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों के नाम, पद, व्यवसाय, पते, फोन नम्बर आदि की सूची बनाइए। उनके गुणों तथा शक्तियों की जानकारी बढ़ाइए। ऐसी उपयोगी योजना बनाइए जिसके द्वारा आपका तथा उन सभी का लाभ हो सके।

4. अपने गरीब, दुखी या बीमार रिश्तेदारों, मित्रों, पड़ोसियों और परिचितों की सूची बनाइए तथा निःस्वार्थ भाव से उनकी उचित सेवा-सहायता करिए।

5. नियमित रूप से समाचार पत्र तथा अपने व्यवसाय से संबंधित पत्रिका पढ़िए। नए कानूनों, बाजार भावों, प्रवृत्तियों, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के प्रति सजग रहिए। उनके अनुसार अपनी नीतियों में परिवर्तन या सुधार करते जाइए।

6. नित्य अपना आय-व्यय लिखने के साथ ही यह ध्यान दें कि किन खर्चों को कम किया जा सकता है।

7. अपनी आय बढ़ाने के साधनों तथा उपायों पर विचार करें।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

5

पहले कदम—स्वास्थ्य और संयम

** स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। आत्मसंयम बिना स्वास्थ्य और सफलता को प्राप्त नहीं किया जा सकता।*

—स्वामी दयानन्द

** अपनी जरूरतों को कम से कम करिए और रुपयों की बचत को लाभ देने वाली योजनाओं में लगाइए।*

** बेकार की शान-शौकत दिखाना अपनी मूर्खता का प्रचार करना है।*

—हेनरी फोर्ड

किशोरावस्था में उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। अतः उसने एक ऐसे लड़के से दोस्ती की जो अच्छा-खासा पहलवान था और होता भी क्यों नहीं, उसका पिता दिल्ली का नामी-गिरामी पहलवान माना जाता था। पहलवान के साथ रहकर उसे व्यायाम करने की आदत पड़ गई। वह सुबह चार बजे उठ जाता और नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपने मित्र के साथ रोशनारा पार्क चला जाता। वहां वे वेट लिफ्टिंग और तरह-तरह के व्यायाम करते। छह-सात महीने में ही उसका शरीर सुगठित और मजबूत बनने लगा। उसकी व्यायामशाला और अखाड़े के सदस्यों की संख्या भी बढ़ने लगी। इन युवकों में से एक था सुन्दरदास। वह देखने-सुनने में सुन्दर और व्यवहारकुशल था। जीविका उपार्जन के लिए वह कपड़ों पर इस्त्री (आयरन) करने का काम किया करता था। व्यायाम आदि के बाद वे लोग दूध पीने जाया करते थे। रास्ते में तरह-तरह की गप-शप चलती रहती। वे सभी किशोरावस्था से यौवनावस्था में जाने वाली उम्र में थे। अक्सर एक-दूसरे के प्यार-मोहब्बत की चर्चा भी चल पड़ती। इन्हीं बातों के दौरान पता चला कि सुन्दरदास का प्यार एक विवाहित स्त्री से चल रहा है जो उसे खूब घी-दूध खिलाती-पिलाती है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वे सभी हैरान थे कि सुन्दरदास कुंआरी लड़कियों से लेकर अधेड़ औरतों तक को किस प्रकार अपने प्रेम-जाल में फांस लेता है। बोलचाल में वह बहुत मृदुभाषी था। उसका कहना था कि लड़कियां बस अपनी खूबसूरती की तारीफ सुनना पसंद करती हैं। अगर आपको यह कला आती है तो किसी को भी पटा सकते हो। जहां तक विवाहित औरतों का सवाल है, अधिकांश पति-पत्नी एक दूसरे से एक-दो बच्चों के हो जाने के बाद ऊबने लगते हैं। पत्नी को पति से उपेक्षा और डांट-डपट के सिवाय कुछ नहीं मिलता। ऐसे में वह पराए पुरुष का प्यार पाते ही फिसल जाती है क्योंकि दूसरा पुरुष उसका पूरा ध्यान रखता है, फिर एक नया मधुर अनुभव पाने की प्यास उसे बेचैन कर देती है।

उसकी बातों को सभी हंसी में उड़ा देते पर सभी यह मानते कि औरतों और लड़कियों को काबू करने में उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

अचानक चार-पांच माह बाद पता चला कि सुन्दरदास पड़ोस की एक स्त्री और उसकी जवान बेटी को लेकर कहीं भाग गया है।

अब वे लोग मान गए कि वह जो कुछ कहता था वह सही था। पहले वे उसे हवाई कल्पना मान कर उड़ा देते थे। स्त्री के पति ने थाने में रिपोर्ट करवाई, अखबार में विज्ञापन दिया, रिश्ते-नातेदारों के यहां खोज-खबर ली पर सब बेकार सिद्ध हुआ। उसकी पत्नी और बेटी का कहीं पता-ठिकाना नहीं मिला।

कुछ महीनों बाद बात आई-गई हो गई। वे लोग भी सुन्दरदास और उसके प्यार की दास्तान भूल गए।

जिन्दगी की कहानी कभी रुकती नहीं। लोग जन्म लेते हैं, मरते हैं, शादी और तलाक होते हैं, प्यार और झगड़े होते हैं पर समय चक्र नहीं रुकता।

करीब बीस साल बाद कथा नायक के. एल. बग्गा के एक मित्र चानन लाल ने उन्हें अपने शहर बम्बई आने का बहुत प्रेम भरा निमन्त्रण भेजा। वह उनके बहुत अच्छे मित्रों में से हैं। दोनों ने जीवन संघर्ष में अनेक सुखों-दुखों का मिल-जुल कर सामना किया है। उनके मधुर निमन्त्रण को वह कैसे ठुकरा सकता था। सो बम्बई पहुंच गया। वहां उसकी खूब खातिरदारी हुई। तभी एक दिन उसके मित्र चानन लाल बोले—"चलो, तुम्हें अपने गुरु जी से मिला कर लाता हूं। बहुत पहुंचे हुए महात्मा हैं। यहां उनकी बड़ी मान्यता है। लोग उन्हें भगवान की तरह पूजते हैं। उन्हांने बेसहारों और विधवाओं के लिए अनेक आश्रम खोल रखे हैं।"

"ठीक है फिर चलो। कल ही चलते हैं।" उसने सहमति दे दी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दूसरे दिन सुबह ठीक सात बजे वे महात्मा संत सुन्दरदास जी के आश्रम में पहुंच गए। वहां का वातावरण बहुत धार्मिक और आध्यात्मिक भावों से भरा था। सैकड़ों स्त्री-पुरुष भजन गा रहे थे। चारों ओर सुगंधित धूप-दीप से वातावरण महक रहा था। करीब चार-पांच हजार भक्तों की भीड़ जमा थी। महात्मा संत सुन्दरदास जी आंखें बंद किए भगवान की भक्ति में लीन थे। उनका चेहरा तेजपूर्ण था। रंग बिल्कुल गुलाब सा गोरा। लम्बा-चौड़ा शरीर। गेरुए चोले में वह किसी दिव्य पुरुष से लग रहे थे।

उनके पास ही मुख्य शिष्य-शिष्याएं गेरुए वस्त्रों को धारण किए भजन-कीर्तन में मस्त थे। भगवान राम, कृष्ण और देवी-देवताओं के बड़े-बड़े चित्र मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। सुगंधित पुष्पों की मालाएं महात्मा जी तथा देवी-देवताओं पर पड़ी थीं।

उसके मित्र उनके मुख्य शिष्यों में से थे। अत: उन दोनों को मंच के सामने पहली पंक्ति में स्थान दिया गया।

भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हो जाने के बाद महात्मा जी ने अपनी आंखें खोलीं। बड़ी-बड़ी सम्मोहक आंखें। उनका प्रवचन शुरू हुआ। बहुत प्रभावशाली और हृदय को छू लेने वाला प्रवचन था। प्रवचन के दौरान कई बार उनकी दृष्टि उस पर तथा उसके मित्र पर पड़ी।

न जाने क्यों उसे ऐसा लगा कि उसने संत सुन्दरदास जी को कहीं देखा है पर कहां? यह याद नहीं आ रहा था। प्रवचन समाप्त हो जाने के बाद सभी श्रोता उस हॉल से प्रसाद लेकर चले गए। महात्मा जी भी सभी को आशीर्वाद देकर अपने निजी कक्ष की ओर चल दिए। उसके मित्र ने आगे बढ़ कर उनके चरण स्पर्श किए। उसका परिचय कराया। उसने नमस्कार किया, उन्होंने आशीर्वाद दिया।

उसके मित्र से कुछ बातें करने के बाद महात्मा जी निजी कक्ष में चले गए। मेरे मित्र ने पास आकर कहा, "तुम बहुत भाग्यवान हो। महात्मा जी ने तुम्हें अपने निजी कक्ष में बुलाया है।"

वह चक्कर में पड़ गया कि आखिर महात्मा जी ने उसमें ऐसा क्या देखा? एकांत में भेंट करने की इच्छा तो उसके मन में भी उठ रही थी।

उसके पहुंचते ही महात्मा जी ने अपने सभी शिष्यों को बाहर जाने का आदेश दिया।

वह उनके पास जाकर बैठ गया। उनकी ओर श्रद्धा तथा उत्सुकता भरी दृष्टि से देखता रहा। कुछ देर बाद, जब सब लोग चले गए और वे दोनों ही रह गए, महात्मा जी बोले—

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

"क्यों भई बग्गा कैसे हो?"

"सब आपकी कृपा है।" उसने आदरपूर्वक उत्तर दिया।

"मुझे पहचाना?"

"नहीं, महात्मा जी, बस ऐसा लगता है कि मैंने आपके दर्शन कहीं जरूर किए हैं, पर कहां? यह याद नहीं आता।"

महात्मा जी थोड़ा सा हंसे फिर बोले समय सब कुछ बदल देता है। याद करो! दिल्ली के रोशनारा बाग में कसरत करते पहलवान सुन्दरदास को।

उसे एक पल को ऐसा लगा जैसे धरती डोल गई हो। उसका सिर चकरा गया। कहां सुंदर युवतियों को पटाने में कुशल पहलवान सुन्दरदास जो एक विवाहिता स्त्री और उसकी बेटी को लेकर भाग गया था और कहां इतनी ऊंची आध्यात्मिक बातें करने वाले महात्मा सुन्दरदास जी? जिनके हजारों शिष्य हैं।

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।" उसके मुंह से अपने आप निकल गया।

"कल रात मेरे विधवाश्रम में आना। तुम्हें मेरी महानता पर विश्वास हो जाएगा।"

अब उसे लगने लगा था कि वह महात्मा और कोई नहीं उसका दोस्त सुन्दरदास ही है।

"यह कुछ नहीं, कमाल कल देखना। और हां, एक बात याद रखना मेरे बारे में किसी से कुछ नहीं कहना क्योंकि मेरे खिलाफ कोई बात सुनना पसंद नहीं करता। दो आर्यसमाजी नेताओं ने मेरी खिलाफत करने की कोशिश की थी दोनों समुद्र में डूब गए या पता नहीं कहां चले गए। तुम मेरे पुराने मित्र हो, पुरानी मित्रता निभाओगे तो मैं भी अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़ूंगा।"

"यह सब कहने की जरूरत नहीं। तुम्हें पता है कि मैंने अपने दोस्तों का कभी अहित नहीं किया।" उसने उत्तर दिया।

सुन्दरदास उर्फ महात्मा सुन्दरदास जी से विदा लेकर जब वह अपने मित्र के घर पर जा रहा था, उसके मन में तरह-तरह के विचार घूम रहे थे। मनुष्य का स्वभाव कितना विचित्र है और उसका भाग्य उसे कहां से कहां पहुंचा देता है।

इस भाग्य को बनाने में उसके अपने कर्म और विचार कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि सुन्दरदास एक दिन महात्मा बन जाएगा और वह भी इतना रहस्यमय महात्मा। उसने उसके आग्रह पर दूसरे दिन रात को निश्चित समय पर विधवाश्रम के मन्दिर में पहुंचने का पूरा निश्चय कर लिया।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रात के करीब 9 बजे वह विधवाश्रम पहुंच गया। महात्मा जी के एक भक्त ने उसे देखते ही पहचान लिया और आदर-भाव से मंदिर में ले गया।

वह भगवान कृष्ण का मंदिर था। रंग-बिरंगे बल्बों और फूलों से सजा वह छोटा-सा पर सुंदर संगमरमरी मंदिर बहुत आकर्षक लग रहा था।

राधा-कृष्ण की सुंदर आदमकद मूर्तियां कलाकार ने इतनी सुन्दरता से बनाई थीं कि लगता था कि अभी बोल पड़ेंगी। मंदिर में महात्मा सुन्दरदास जी ने उसे अपने समीप ही बैठाया। दोनों के सिवाय वहां केवल एक पुरुष था जो महात्मा जी का अत्यन्त विश्वसनीय शिष्य था। वही विधवाश्रम का कर्ता-धर्ता था। शेष सभी युवा विधवाएं थीं। गौरवर्ण, यौवन भार से मदमाती हुईं। उनमें से पांच सुंदर युवतियां नृत्य कर रही थीं और करीब दस भजन गा रही थीं।

संगीत-नृत्य के बाद भगवान कृष्ण की आरती हुई।

''अब रात्रि जागरण और रात्रि-पूजा के लिए व्रतोपवास करने वाली शिष्याओं को छोड़ सभी भोजन विश्राम के लिए जाएं।'' महात्मा जी के शिष्य ने आदेश दिया। सात अत्यन्त सुंदर नवयुवतियों को छोड़ कर सभी महात्मा जी का आशीर्वाद लेकर चली गईं।

उनके जाने के बाद महात्मा जी के शिष्य ने दीवार में लगा एक बटन दबाया। हल्की-सी मधुर ध्वनि करता हुआ एक गुप्त द्वार खुल गया। ''चलो मित्र!'' महात्मा जी ने कहा। वह उठ कर उस द्वार की ओर बढ़ा। देखा एक जीना है जिसकी सीढ़ियां नीचे की ओर गई हैं। महात्मा जी का एक शिष्य उसका हाथ पकड़ कर उसे सीढ़ियों से नीचे ले गया। उसके पीछे-पीछे महात्मा जी तथा उनकी अन्य छः शिष्याएं आ रही थीं। महात्मा जी दो सुंदर युवतियों को अगल-बगल में दबाए नीचे उतर रहे थे।

नीचे उतरते ही उन्हें एक सुंदर शीशमहल जैसा जगमग करता हुआ बड़ा-सा कक्ष मिला। इसमें चारों तरफ शीशे ही शीशे जड़े थे और छिपे हुए स्थानों से रंग-बिरंगा लाल, हरा, नीला, सफेद प्रकाश आ रहा था। वहां की साज-सज्जा देखकर उसकी आंखें चौंधिया गईं। कहां ऊपर भगवान कृष्ण का मंदिर और नीचे श्रृंगार तथा विलासिता का इतना आकर्षक केन्द्र। उनके वहां पहुंचते ही कहीं से मधुर संगीत की स्वर लहरियां गूंज उठीं। महात्मा जी ने उसका हाथ पकड़ा और एक मेज के पास रखे सोफे पर ले गए।

''लो दोस्त! आज जन्नत का मजा लो।'' कहकर उन्होंने कुछ संकेत किया। न जाने कहां से दो सुंदर युवतियां शराब के जाम हाथों में लिए प्रकट हुईं

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

और उसके पास आकर बैठ गईं। बैठने से पूर्व उन दोनों ने उनका प्रेमपूर्वक अभिवादन किया।

महात्मा सुन्दरदास मुस्कराते हुए बोले, "मैं तुम्हारे सामने एक 'ऑफर' रख रहा हूं। तुम मेरे आश्रम के प्रमुख अधिकारी बन जाओ और सारी व्यवस्था संभालो। मैं तुम्हें पचास हजार रुपये प्रतिमाह दूंगा। इसके अलावा कार, कोठी, हर तरह के ऐशो-आराम का खर्च अलग से।"

उनके ऑफर को सुनकर एक मिनट के लिए उसका सिर चकरा गया। तभी उसे अपने बुजुर्गों की सिखाई शिक्षा याद आई—"**शराब और शबाब के नशे में जो एक बार डूबता है वह जीवन में कभी नहीं उभरता। अगर तुम्हें जिंदगी में कामयाब होना है तो अपने लक्ष्य को कभी मत भूलो। किसी भी लोभ-लालच में नहीं पड़ो और यहां तो सब धोखे और आडम्बर का खेल है। धर्म के नाम पर समाज का शोषण।**"

उसने खड़े होते हुए कहा, "आपका बहुत धन्यवाद महात्मा जी! मैं आपकी इस दावत और ऑफर को जीवन भर नहीं भूलूंगा। लेकिन अब आपकी आज्ञा चाहूंगा। मुझे बहुत जरूरी काम याद आ गया?"

"शाबाश मित्र! मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम उसमें खरे उतरे। सौ फीसदी खरे। अच्छा जाओ! मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। अपना भजन-पूजन जारी रखना। परमात्मा तुम्हें खुश रखे।"

वह महात्मा बने अपने मित्र सुन्दरदास के बदलते रूपों को देख चकित रह गया। सचमुच में वह अपने आपमें एक चमत्कार था। महात्मा ने उठकर उसके सिर पर एक गुरु की तरह हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया।

सुंदर अपनी चतुरता भरी वाणी से दूसरों को मूर्ख बनाने में कुशल था, बहुत कुशल। वह धीमे से फुसफुसाया, "मेरे पैर छू ले। ड्रामा पूरा हो जाएगा।"

उसने सुंदर के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वह अपने सेवक से बोला, "इनके साथ जाओ और ड्राइवर से कहो कि वह इन्हें छोड़ कर आए। देखो, इन्हें कोई तकलीफ न हो। मेरे बहुत पुराने और सच्चे भक्त हैं।"

रात में उसे ठीक से नींद नहीं आई। बार-बार यह विचार आता रहा है कि इस देश को बर्बाद करने में धर्म के ठेकेदारों का जितना हाथ है उतना शायद ही किसी का हो। दिल्ली वापस आने के करीब दो साल बाद उसने अखबारों में पढ़ा कि पुलिस ने महात्मा सुन्दरदास को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। उनके धार्मिक आडम्बर का पर्दाफाश हो गया था। उनके जैसे झूठे महात्मा का ऐसा ही अंत होना था।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

यदि वह सुन्दरदास जी के सुरा, सुन्दरी और विलासिता के जाल में फंस जाता तो जीवन में कभी उन्नति नहीं कर पाता। उसका मान-सम्मान भी धूल में मिल जाता।

योजना-लक्ष्य पूर्ति हेतु निश्चित समय

1. अपनी गहन रुचि के अनुसार बनाए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक यथार्थवादी योजना बनाइए।

(अ) अपने लक्ष्य से संबंधित सभी तथ्यों और सूचनाओं तथा उसके भावी रूप के बारे में क्रमानुसार लिखिए।

(ब) अपने लक्ष्य से संबंधित ऐसे तीन व्यक्तियों से मिलिए जो सफलता प्राप्त कर चुके हैं। उनके अनुभवों तथा शिक्षाओं को नोट करिए तथा उन पर चलने का प्रयत्न करिए।

(स) आपके लक्ष्य से संबंधित जो सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाएं आदि हैं, उनसे संपर्क करिए और पता लगाइए कि वे आपकी क्या सहायता कर सकती हैं। आर्थिक सहायता, सहयोग, ऋण आदि के अतिरिक्त उनके अनुभवों, सलाहों वगैरह पर भी पूरा ध्यान दीजिए।

(द) आपके परिवार के सदस्य, मित्रगण, पड़ोसी, परिचित आदि अगर लक्ष्य प्राप्ति में कोई सहयोग या सहायता दे सकते हैं तो उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करें।

(य) अपने लक्ष्य को पाने के लिए एक निश्चित तारीख लिखें। प्रति तीन माह बाद अपनी योजना की जांच कर आवश्यक सुधार करें।

(र) अपने मुख्य लक्ष्य पर पांच वर्ष बाद पुनः विचार करें, परिस्थितियों की मांग के अनुसार यदि आवश्यक हो तो उसमें सुधार करें।

(ल) मुख्य लक्ष्य को पाने के लिए पहले छोटे-छोटे लक्ष्य बनाएं, उन्हें उचित समय के अन्दर प्राप्त करें।

(व) हर प्रकार के नशों और हानिकारक आदतों से दूर रहें अन्यथा वे आपकी योजना को पूरा नहीं होने देंगे। यही नहीं वरन् वे आपके नाश का कारण बन सकते हैं।

(श) शीघ्र से शीघ्र धनवान बनने के लालच से दूर रहें।

□□

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

6

अपनी कल्पनाशक्ति का सदुपयोग करें

स्मरण रखिए कि परमात्मा ने आपको जो शक्तियां दी हैं उनमें से कल्पनाशक्ति सबसे अधिक सूक्ष्म परंतु सबसे अधिक शक्तिशाली है। यथार्थ की पृष्ठभूमि पर सकारात्मक शुभ कल्पनाएं करिए, सदैव हर क्षेत्र में हर दिन नई-नई सफलताएं पाने की कल्पनाएं करिए। धीरे-धीरे ये शुभ एवं सफलतापूर्ण कल्पनाएं आपके जीवन में साकार होने लगेंगी।

—इमर्सन

उसे अपने जीवन में सबसे अधिक खुशी कार चलाने या विमान यात्रा करने में नहीं हुई, उसे सबसे अधिक खुशी उस समय हुई जब उसने एक नई साइकिल खरीद कर उसे चलाया। लगा जैसे उसके पैरों में एक नई शक्ति आ गई हो। गर्व से उसका सीना तन गया, खुशी से चेहरा चमक उठा, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह एक सामान्य व्यक्ति से उठ कर कोई वीआईपी बन गया हो।

और खुशी के उन क्षणों में उसने सोचा कि क्या वह ऐसी ही खुशी दूसरों को नहीं दे सकता। वे लोग जिनके पास साइकिल खरीदने के लिए एकमुश्त रकम नहीं थी और तभी उसके दिमाग में पड़ी वह योजना साकार हो उठी जिसके बारे में, वह कई बार विचार कर चुका था। यह योजना साधारण-सी थी। वह अपनी जमा रकम से चार नई साइकिलों के सभी पार्ट्स थोक मार्केट से खरीद लेगा और फिर उन्हें अन्य जरूरतमंद लोगों को किस्तों पर बेच देगा। बाजार भाव से उनसे ब्याज लेगा। इस तरह की साइकिलों से दूसरों को लाभ होने के साथ उसे भी लाभ होगा।

वह उसी दिन साइकिलों के थोक मार्केट से 4 नई साइकिलें खरीदने चला गया। वहां एक व्यापारी उसे अच्छी तरह जानता था, उसका नाम श्री जे.सी. छतवाल था। वह कई दुकानदारों को भी साइकिलें देता था। उसके मन में एक

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सुंदर कल्पना आई। एक दिन वह भी इसी की तरह अपना कार्यालय बनाकर अपने स्टाफ के साथ बैठेगा और लोगों को नगद के साथ-साथ किस्तों पर भी साइकिलें बेचा करेगा। इस कल्पना से उसे बहुत खुशी अनुभव हुई।

परमात्मा ने मनुष्य को एक चमत्कारिक शक्ति दी है—कल्पनाशक्ति। आज तक जितने भी आविष्कार हुए, वे पहले वैज्ञानिकों के मन में जन्मे और कल्पना में विकसित हुए। इसी प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने वाले व्यक्तियों ने सर्वप्रथम अपनी कल्पना में सफलता पाई और उसके बाद वास्तविक जगत में।

अतः सफलता के साधकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने सुंदर सपनों को अपनी कल्पना में साकार होता देखें और आनन्दित हों। परंतु सुंदर सपने यथार्थ की नींव पर बनाएं।

विशेष रूप से इस बात ने उसे बहुत प्रसन्नता दी कि वह इस कल्पना को साकार कर दूसरों को कुछ खुशी दे सकेगा।

आज जब वह अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर चुका है तो उसे यह कहते हुए संतोष और हर्ष होता है कि **वास्तव में उसने जो कुछ भी उन्नति की है उसका रहस्य यह भाव ही रहा है कि दूसरों को, विशेष रूप से जो जरूरतमंद हैं उनको वह कैसे खुश कर सकता है। उनकी जरूरतों को कैसे पूरी कर सकता है?**

दूसरों को खुशी देने और उनकी सेवा करने की चाह से जो कार्य योजना बनती है उनके साथ ही उसका लाभ स्वतः जुड़ा होता है। वास्तव में सबके लाभ में ही व्यक्ति का लाभ निहित है।

जीवन के लक्ष्य कभी पूरे नहीं होते। सच पूछा जाए तो जीवन को पूरी सुन्दरता, आनन्द, संतुलन और उत्साह से जीना ही प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य है। **अपने जीवन को उसकी पूर्णता से जीने के लिए ही व्यक्ति को अपने लक्ष्य बनाने पड़ते हैं।** आज वह ऐसी स्थिति में पहुंच गया है कि अपने जीवन को उसकी पूर्णता से जीने के लिए उसने जो लक्ष्य बनाए थे उनमें से कुछ को उसने प्राप्त कर लिया है और कुछ जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं उन्हें अभी प्राप्त करना है।

अब हम फिर से साइकिलों को किस्तों में बेचकर दूसरों को लाभ पहुंचाने और स्वयं कुछ लाभ अर्जित करने की बात पर आ जाते हैं। धीमे-धीमे साइकिलों और ग्राहकों की संख्या बढ़ती गई। इसके साथ उसका लाभ भी बढ़ता गया।

समय की मांग को देखते हुए उसने साइकिलों के साथ रेडियो, पंखे, सिलाई मशीन आदि को भी किस्तों पर बेचना शुरू कर दिया। इन सबके लिए

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

धन की अधिक से अधिक आवश्यकता बढ़ती जा रही थी। यद्यपि उसके पास इतनी नकद पूंजी हो चुकी थी कि वह स्वतंत्रतापूर्वक इन चीजों को खरीद सके, फिर भी उसने उचित यह समझा कि रुपयों के आने-जाने के चक्र को बनाए रखा जाए। अतः उसने फाइनेंस बिजनेस में प्रवेश करने की योजना बनाई। इसके लिए लोगों से कम ब्याज पर रुपया लेकर उसे कुछ अधिक ब्याज पर देना शुरू किया। उदाहरण के लिए वह लोगों से 18% ब्याज पर रुपया लेता और उसे 20% ब्याज पर जरूरतमंद व्यापारियों को दे देता।

चूंकि बाजार में उसकी साख अच्छी थी और लोगों को यह पता था कि उनका रुपया डूबेगा नहीं, इसलिए उसे बाजार से रुपया लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उस जमाने में टी.वी., फ्रिज, स्कूटर आदि नहीं आए थे और दहेज में लोग रेडियो, पंखे, साइकिल, सिलाई मशीन आदि देते थे। इसलिए उसका काम चमक उठा। वास्तव में ये वस्तुएं उस समय की जरूरतें थीं। उसने उन जरूरतों को पूरा किया और इसीलिए कामयाब भी हुआ।

जीवन में कामयाबी पाने के इन दो सूत्रों को पकड़ें और देखें—जमाने की जरूरतें क्या हैं आप उन्हें कैसे पूरा कर सकते हैं? दूसरा, अपनी खुशी या लाभ से ज्यादा दूसरों को खुशी तथा लाभ पहुंचाने पर ध्यान दें और आपको खुशी व कामयाबी खुद-ब-खुद मिल जाएगी।

वह भी समय के मांग के अनुसार अपने व्यापार में विस्तार करता चला गया।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

7

जनसंपर्क बढ़ाइए—सफलता पाइए

संसार में प्रेम, मैत्री, सहानुभूति ऐसे गुण हैं जो प्रसन्नता प्रदान करते हैं, परंतु उन्हें धन से नहीं खरीदा जा सकता।

—स्वामी रामतीर्थ

फाइनेंस बिजनेस में पहली समस्या ही पूंजी और नकद धनराशि एकत्रित करने की होती है। इसमें उसे कभी कोई कठिनाई नहीं आई क्योंकि रुपये उधार देने वाले अच्छी तरह जानते थे कि उसके पास उनका पैसा डूबेगा नहीं। दूसरे उससे ज्यादा ब्याज उन्हें बैंक या सरकार से नहीं मिल सकेगा।

वह इस बारे में कुछ नियमों का कठोरता से पालन करता है। उसकी यह कठोरता सेना की कठोरता जैसी ही होती है। वह उसमें किसी तरह की भावुकता या मधुर संबंधों को बाधा नहीं बनने देता। उदाहरण के लिए वह अपनी कंपनी की जरूरत से ज्यादा रुपया बाजार से नहीं लेता। **रकम आने से पहले वह उसे लाभ देने वाले व्यवसाय में लगाने की योजना बना लेता? उन्हीं व्यक्तियों को उधार देता जिनमें उसका मूलधन और ब्याज देने की शक्ति होती?** उधार लेने वाले व्यक्ति की जमानत भी किसी प्रतिष्ठित और धनवान व्यापारी/सरकारी अधिकारी से करवा लेता? इसके बाद भी अगर कोई रुपया दबाने की कोशिश करे तो वह साम, दाम, दण्ड की कूटनीति का उपयोग करने से नहीं चूकता। इस सम्बन्ध में मुकदमेबाजी में विश्वास ज्यादा नहीं करता। सीधी सी बात है—जो आदमी उधार की किस्तें या जमानत नहीं दे सकता उसे उधार मत दो। इस नीति ने अच्छे फल दिखाए और वह अपने क्षेत्र में परमात्मा की कृपा से एक के बाद एक नई सफलताएं प्राप्त करता चला गया।

वेट लिफ्टिंग, कसरत और बॉडी बिल्डिंग का उसे बहुत शौक था। वह सुबह अपने साथियों के साथ रोशनारा बाग के अखाड़े में पहुंच जाता। वह मन लगाकर व्यायाम और भारोत्तोलन (Weight Lifting) करता।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इसके फलस्वरूप उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा बन गया, चेहरे पर एक तेज और शरीर में नई शक्ति आ गई। वह जिस सड़क या गली से निकल जाता लोगों की नजरें उसके ऊपर ठहर जातीं। लोगों के मुंह से बरबस निकल जाता, वाह! इसके साथ व्यवहारकुशलता ने उसके व्यक्तित्व को और अधिक आकर्षक बना दिया। सभी युवक-युवतियां चाहते कि वह उनका मित्र बन जाए। सन् 1953-54 में उसने दिल्ली में स्थित सब्जी मण्डी 'वेट लिफ्टिंग क्लब' की स्थापना की जो शीघ्र ही लोकप्रिय बन गया। इससे प्रभावित होकर दिल्ली के वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन ने उसे अपनी एक्जीक्यूटिव कमेटी में ले लिया ताकि उसकी योग्यता का लाभ उठाया जा सके। वहां भी उसने अपने प्रयत्नों से सभी का मन मोह लिया। दिल्ली के वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन की गतिविधियों और उसकी लोकप्रियता को बढ़ाने में उसने बहुत सहयोग दिया। अतः कुछ समय बाद उसे एसोसिएशन का वाइस प्रेसीडेण्ट बना दिया गया। इस प्रकार श्री बग्गा जो 1954 में वेट लिफ्टिंग से जुड़े थे अपने प्रयत्नों से सन् 1984 तक पूरी दिल्ली के भारोत्तोलन प्रेमियों में प्रसिद्ध हो गए।

इसके साथ-साथ बॉडी बिल्डिंग के लिए भी वह युवकों को उत्साहित किया करते थे। कई मोहल्ले और कॉलोनियों में उन्होंने बॉडी बिल्डिंग क्लबों की स्थापना करवाई और अंत में जब दिल्ली का 'एमेच्योर बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन' बना तो उसके सदस्यों ने उन्हें अपनी संस्था का प्रेसीडेण्ट बनाने में खुशी अनुभव की।

साहित्य, कला और नाटक से भी श्री के.एल. बग्गा को बाल्यावस्था से ही लगाव था। दिल्ली की एक नाट्य संस्था 'लोकान्तर' समय-समय पर प्रसिद्ध लेखकों के मंचन योग्य नाटकों का प्रदर्शन कराया करती थी। यह संस्था प्रतिष्ठित लेखकों, नाटककारों, कलाकारों को पुरस्कृत तथा सम्मानित भी करती थी। श्री बग्गा ने इस संस्था की कलात्मक गतिविधियों को लोकप्रिय बनाने तथा उसे आर्थिक सहायता देने में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। उनके इन कार्यों से सभी कलाकारों, लेखकों, निर्देशकों आदि को बहुत खुशी और प्रोत्साहन मिला। उन्होंने श्री बग्गा से अनुरोध किया कि वे लोकान्तर के चीफ पैट्रन बनकर उनका मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन करें जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

दिल्ली की तत्कालीन अन्य प्रमुख कला संस्थाएं 'लोक रंगायन' और 'नटराज कलाकेन्द्र' थीं। इन संस्थाओं के कार्यों में भी वह जितना सम्भव होता था अपना योगदान करते रहते थे। इन संस्थाओं द्वारा कई बार श्री बग्गा को अपने समारोहों का प्रेसीडेण्ट मनोनीत किया गया।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वह इन संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में पूरी रुचि लेते, कलाकारों से मिलते, उनकी कला की सराहना करते, उन्हें कुछ नया करने के लिए उत्साहित करते और साथ-साथ उनसे कुछ नया सीखने की कोशिश करते। प्राय: समारोह दिवस पर उन्हें भाषण देने के लिए आमंत्रित किया जाता और वे सहर्ष तैयार हो जाते। इस प्रकार उनमें भाषण देने की कला का विकास होता गया।

सफलता पाने की आकांक्षा रखने वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य से संबंधित हर नई जानकारी पाने और सीखने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

तत्कालीन रेवती शरण शर्मा जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार को पुरस्कृत और सम्मानित करने का गौरव श्री बग्गा को प्राप्त हो चुका है। राजेन्द्र सिंह बेदी के प्रसिद्ध उपन्यास 'एक चादर मैली सी' का नाट्य रूपान्तर कर उसे मंच पर प्रस्तुत करने के प्रयासों में उन्होंने सक्रिय सहयोग दिया था।

कैसा अद्‌भुत व्यक्तित्व है। कहां भारोत्तोलन-सी कठोर प्रतियोगिता और कहां नाट्य कला-सी कोमल सूक्ष्म विधा? **इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवन में सफलता पाने के लिए हमें अपने जनसंपर्कों को बढ़ाने तथा लोकप्रिय बनने के प्रयत्नों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।**

प्राय: लोग उनसे पूछते हैं कि फाइनेंस के व्यापार में रकम न देने वाले से अपना पैसा कैसे वसूल किया जाए खासतौर से जब वह आपकी कंपनी से उधार ली हुई रकम की किस्तें देना बंद कर दे या उसके चेक बैंक द्वारा लौटा दिए जाएं। इस विषय में आपको एक सच्ची घटना श्री के.एल. बग्गा के शब्दों में ही सुनाता हूं। व्यक्तियों के नाम बदल दिए हैं ताकि उन्हें बुरा न लगे।

एक हैं मेरे मित्र मिस्टर वालिया। एक दिन वह मुझसे मिलने आए और अपनी समस्या सुनाई। समस्या यह थी कि श्री वालिया ने तीन लाख रुपये किसी परिचित व्यापारी को 3 प्रतिशत ब्याज दर पर दे दिए थे। परन्तु उस परिचित व्यक्ति ने पचास हजार रुपये देने के बाद उधार की रकम देना बंद कर दी थी।

श्री वालिया को पहली बात मैंने यह समझाई कि जब फाइनेंस उनका व्यापार नहीं है तो उधार देने के चक्कर में उन्हें नहीं पड़ना चाहिए था क्योंकि बुजुर्ग कह गए हैं—'जिसका काम उसी को साजे।'

मैंने सारी बातें धीरज से सुनीं। सारे केस पर मानवीय दृष्टि से विचार किया। वालिया काफी परेशान और दुखी था क्योंकि उसकी रकम डूब रही थी। मैंने उससे पूछा—**अच्छा यह बताओ वह आदमी कैसा है शरीफ या धोखेबाज?** वह रुपया क्यों नहीं दे पा रहा है? उसका बिजनेस फेल हो गया या नीयत खराब हो गई है?

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वालिया बोला, "आदमी शरीफ है, बाजार में उसकी अच्छी-खासी दुकान है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा है। वह उधार लिया रुपया भी वापस करना चाहता है पर बार-बार कहता है कि उसका व्यापार अभी ठीक नहीं चल रहा है। जैसे ही व्यापार अच्छा चलने लगेगा वह ब्याज समेत रुपया लौटा देगा और सच यह है कि मुझे विश्वास है कि वह रुपया लौटा देगा।"

"मतलब समस्या यह है कि वह रुपया लौटाना चाहता है पर उसके पास रुपया नहीं। अच्छा, मान लो कि उसके पास रुपया आ जाए तो?"

"तो वह जरूर रुपया वापस करेगा।" वालिया ने बड़े आत्मविश्वास से कहा।

मैंने उसे सलाह दी, "आप उसे हमारे पास ले आइए। हम आपकी रकम के कागजात अपनी कंपनी के नाम 2 प्रतिशत के ब्याज पर बनवा लेंगे। पूरी रकम वसूल हो जाने पर आपको 1 प्रतिशत ब्याज सहित आपकी राशि दे देंगे।"

वालिया उस परिचित को मेरे पास ले आए। मैंने उसे सारा हिसाब समझाया। उसे पूरा एक प्रतिशत का लाभ हो रहा था क्योंकि वालिया को उसे 3 प्रतिशत ब्याज देना पड़ रहा था और मुझे केवल 2 प्रतिशत और वह भी ऐसी आसान किस्तों पर जिसे वह सरलता से चुका सकता था। उसने सारे कागजातों पर दस्तखत कर दिए। मैंने वालिया की जमानत के साथ एक प्रभावशाली व्यक्ति की जमानत और ले ली। अब उस परिचित व्यक्ति पर वालिया और एक अन्य व्यक्ति जो दूसरा जमानती था का भी दबाव हो गया।

यह बताते हुए मुझे खुशी होती है कि उसने उधार ली हुई रकम पूरे ब्याज सहित मेरी कंपनी को चुका दी। कंपनी ने वालिया को उसकी रकम एक प्रतिशत ब्याज पर वापस कर दी।

यदि आप पूरी घटना को ध्यान से पढ़ें तो पाएंगे कि मैंने समस्या को पूरी तरह मानवीय दृष्टि से देखा तथा हल किया। उस परिचित व्यक्ति तथा वालिया की कठिनाइयों को समझा और उसे इस तरह सुलझाया कि उन दोनों के लाभ के साथ मेरी कंपनी को भी लाभ हो गया।

अब जरा इसे दूसरे दृष्टिकोण से विचारें। अगर हमने कोर्ट-कचहरी का सहारा लिया होता या धमकी अथवा मारपीट का हथकण्डा अपनाया होता तो क्या यह समस्या इतने प्रेमपूर्वक और सबको लाभ देने वाली हो पाती? कभी नहीं, बल्कि इससे हम तीनों के बीच शत्रुता का भाव ही बढ़ता जो बहुत हानिकारक सिद्ध होता। लेकिन हर मामले में एक ही सिद्धान्त लागू नहीं होता। कभी-कभी सामाजिक दबाव भी बनाना पड़ता है और कभी व्यक्ति की परिस्थितियों को देखकर उसे आर्थिक सहायता भी देनी पड़ती है।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

8

अशुभ लक्ष्मी के लोभ से बचिए

मेरे जीवन के लंबे वर्षों का यह अनुभव है कि चालाकी, धोखेबाजी, भ्रष्टाचार या गलत तरीके से जोड़ी गई धन-संपत्ति कुछ वर्षों में नष्ट हो जाती है। इसके साथ वह उस व्यक्ति और उसके परिवार के लिए घोर पीड़ा तथा दुख का कारण बनती है।

—स्वेट मार्डेन 'जीवन में सफल होने के उपाय' पुस्तक से

आखिरी सीटी मारते हुए ट्रेन ने सब्जी मण्डी स्टेशन से सरकना शुरू कर दिया था। लेकिन वह प्लेटफार्म में घुसा ही था। टिकट खरीदने का समय नहीं बचा था। इसलिए वह बिना टिकट लिए ही दौड़कर चलती ट्रेन पर सवार हो गया। वह उस समय नरेला के पास स्थित एक गांव में भट्ठे का काम करता था। वहां उसका नित्य सही वक्त पर पहुंचना बहुत जरूरी था। दिल्ली के सब्जी मंडी से नरेला तक का रास्ता ट्रेन ने पन्द्रह-बीस मिनटों में ही पूरा कर लिया। उससे किसी ने टिकट नहीं मांगा। नरेला प्लेटफार्म का गेट भी खाली पड़ा था। वह आराम से बाहर निकल गया पर उसका मन अन्दर से बेचैन था।

शाम को वह स्टेशन पर ट्रेन आने से बीस मिनट पहले ही पहुंच गया। टिकट खिड़की से दो टिकट खरीदे। लाइन से बाहर आकर वह एक अतिरिक्त टिकट फाड़ने वाला था कि एक मुसाफिर ने पूछा—"यह क्यों फाड़ रहे हैं ? किसी को दे दीजिए।"

"नहीं, सुबह मुझे बिना टिकट लिए यात्रा करनी पड़ी थी। इसीलिए मैंने आज एक के बजाय दो टिकट खरीदे। **मैं अपने राष्ट्र का नुकसान नहीं कर सकता। आखिर रेलवे का आर्थिक नुकसान देश का नुकसान ही तो है।**" ऐसा कहकर उसने वह अतिरिक्त टिकट फाड़ कर डस्टबिन में फेंक दिया।

इन सज्जन को जाड़ों में नई सड़क से कंबल खरीद कर उन्हें गरीबों में

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बांटने में बड़ा सुख मिलता था। एक बार उन्हें इन कंबलों की खरीदारी के दौरान किसी ने सौ रुपये का नकली नोट पकड़ा दिया। जल्दी में कहिए या लापरवाही में उन्होंने उस समय नोट को जांचा नहीं। घर आकर जब हिसाब-किताब करने लगे तो देखा कि सौ का जाली नोट किसी ने थमा दिया है, धोखा देकर। उस जमाने में सौ रुपये का बहुत महत्व होता था। परन्तु उन सज्जन ने अपने भाई से माचिस मंगवाई और उसके सामने ही सौ के नोट में आग लगा दी।

''अरे यह आपने क्या कर दिया? सौ का नोट था।'' भाई ने आश्चर्य से कहा।

''जाली था।'' वह सज्जन अपने भाई से बोले।

''तो क्या हुआ मैं चला देता?''

उन सज्जन ने क्रोध से डांटते हुए कहा, ''खबरदार? जो आगे से ऐसा सोचा भी। किसी ने मुझे धोखे से वह नोट दिया था तो क्या मैं भी किसी को धोखा दूं। **भगवान सब कुछ देखता है और याद रखना धोखा देकर कमाई गई रकम का अंजाम कभी अच्छा नहीं होता। इसे विद्वान लोग अशुभ लक्ष्मी कहते हैं, जब यह आती है तो आदमी की नीयत बिगाड़ देती है, उसे दुख देती है और जब जाती है तब तो सर्वनाश करके जाती है।**''

यह सज्जन थे कथा नायक श्री बग्गा के बड़े भाई भागमल जी। अपने बड़े भाई की इस बात को श्री बग्गा ने हमेशा के लिए अपने जीवन में अपना लिया। **यही मूलमंत्र है सफलता का।**

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

9

जब मैं सर्वनाश से बचा

मेरी प्रसन्नता का असली रहस्य यह है कि मैं अपने हृदय में परमात्मा की उपस्थिति अनुभव करती हूं। जब आपके हृदय में परमात्मा विराजमान हो तो संसार की कोई वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति आपको न तो कष्ट दे सकती है और न सही राह से भटका सकती है। परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में वास करता है, बस आवश्यकता होती है कि आप उसकी आवाज को सुनें और उसके आदेशों का पालन करें फिर सफलता की राह अपने आप मिलती जाती है।

—माता आनन्दमयी

मेरे (श्री के.एल. बग्गा के) एक अच्छे परिचित थे श्री गौतम। वह हर महीने कुछ न कुछ रुपये मेरे पास चुपचाप जमा करा देते थे। आपसी विश्वास इतना अधिक था कि मुझसे कभी कोई रसीद नहीं लेते और न कोई लिखा-पढ़ी रखते। उनकी यह जमाराशि धीरे-धीरे एक लाख तक पहुंच गई थी। उन्होंने इस रकम के बारे में अपने बीवी-बच्चों तक को नहीं बताया था।

अचानक एक दिन श्री गौतम का स्वर्गवास हो गया। मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे ध्यान आया कि उनका एक लाख रुपया मेरे पास पड़ा है। सच कहूं मुझे लोभ ने अपने जाल में फांसना शुरू कर दिया। उन रुपयों के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था। अगर मैं उन्हें अपने पास रखे रहूं तो कोई भी कुछ कहने वाला नहीं था। परन्तु इसके साथ ही अन्तर्मन यह कहता कि नहीं, यह पाप होगा। उन रुपयों पर गौतम की धर्मपत्नी का अधिकार है। मुझे ये रुपये उन्हें दे देने चाहिए। लेकिन फिर यह विचार आता कि जब अपनी पत्नी को इन रुपयों के बारे में गौतम ने बताया तक नहीं तो उसका इन पर कोई अधिकार नहीं

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बनता। सम्भव है वह यह नहीं चाहते थे कि उनकी यह रकम किसी को दी जाए। रुपये जमा करते हुए वह कहा भी करते थे—सब रुपये तुम्हारे भाग्य के हैं। इन पर मेरा ही नहीं तुम्हारा भी अधिकार है। बस किसी को बताना नहीं। मुझे जब जरूरत पड़ेगी ले लूंगा तुम्हारे पास पड़े हैं; पूरी तरह सुरक्षित हैं।''

''रुपये वापस करूं या नहीं करूं?'' इस प्रश्न के चक्कर में करीब पन्द्रह दिन तक पड़ा रहा। तभी एक दिन जब सुबह मैं बाग में घूम रहा था मेरे हृदय में एक आवाज सी उठी—क्यों भाई भगवान तो सब कुछ जानता है। गौतम के बीवी-बच्चों को नहीं पता हो पर तुम्हारे अंदर जो परमात्मा का अंश है उसे तो सब पता है। वह तो सब जानता है। उसे क्या जवाब दोगे? तुम जिन्दगी भर अपने व्यापारिक लेन-देन में ईमानदार रहे, अब क्या सिर्फ एक लाख के लिए बेईमान बन जाओगे। **दुनिया जाने या न जाने पर तुम तो जानते हो, भगवान तो जानता है कि इन रुपयों को वापस नहीं करना बेईमानी होगी क्या तुम अपनी नजरों में ही नहीं गिर जाओगे?**

तभी मुझे अपने बड़े भाई साहब श्री भागमल जी की बातें याद हो आईं—धोखा देकर कमाई गई रकम का अंजाम कभी अच्छा नहीं होता? अशुभ लक्ष्मी के आने से आदमी की नीयत बिगड़ जाती है। यह आते हुए भी दुख देती है और जब जाती है तब तो सर्वनाश करके जाती है।

इन बातों के याद आते ही मैं सीधे घर आया। पचास हजार रुपये उस समय घर में पड़े थे उन्हें अपने बैग में रखा और सीधे स्व. श्री गौतम के घर पहुंचा। श्री गौतम के बीवी-बच्चों ने मुझे बड़े स्नेहपूर्वक बैठाया। जलपान आदि के बारे में पूछा।

मैंने उन लोगों से कहा, ''श्री गौतम की कोई रकम मेरी कंपनी में पड़ी हो या मेरे ऊपर हो तो बताएं, मैं उसे वापस करना चाहता हूं।''

''नहीं, हमारी जानकारी में उनकी कोई रकम आपकी कंपनी या आपके पास नहीं पड़ी।'' उनकी पत्नी और बच्चों ने उत्तर दिया।

फिर मैंने उन्हें श्री गौतम द्वारा चुपचाप जमा की गई रकम के बारे में बताया। उन्हें पचास हजार रुपये देते हुए अनुरोध किया कि बाकी रकम मेरे ऑफिस में आकर ले जाएं।

मेरी बातों को सुनकर उन लोगों को कितनी खुशी हुई यह शब्दों के द्वारा नहीं प्रकट किया जा सकता।

और सच कहूं मुझे भी कोई कम खुशी नहीं हुई। मैं अपनी नजरों में बहुत ऊंचा उठ गया और इसका शुभ परिणाम यह हुआ कि उस परिवार का खाता

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आज तक मेरी कंपनी के साथ चल रहा है। यह ईमानदारी उन मुख्य तत्वों में से है जो व्यक्ति को जीवन में सफलता तथा सुयश प्रदान करती है। आप भी इसे अपनाकर जीवन में मनचाही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

धोखेबाजी, बेईमानी या अनैतिक कार्यों से आदमी अपार धन कमा सकता है। परन्तु वह कभी स्थायी नहीं होता और अंत में सर्वनाश का कारण बनता है। अतः अगर हम स्थायी सफलता, सम्मान और सुयश चाहते हैं, तो हमें सदैव ईमानदारी से धन कमाना चाहिए। इसमें सम्भव है कि कुछ ज्यादा समय लगे, ज्यादा परिश्रम करना पड़े परन्तु ईमानदारी के द्वारा जो सफलता मिलती है वह स्थायी होती है तथा उसका आनन्द अद्भुत और सबसे बड़ी बात यह कि आप अपनी नजरों में भी ऊंचे उठ जाते हैं।

बेईमानी या अमानवीय तरीकों से धन, सत्ता या शक्ति पाने वाले अपनी नजरों में कितने गिरे होते हैं, इसकी आप कल्पना तक नहीं कर सकते। वे दूसरों की नजरों में स्वर्ग में रहते हैं, पर सचमुच में जीते जी नरक के कष्ट भोगते हैं।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

10

आपसी सहयोग के सूत्र

** शांति और आपसी विश्वास में ही तुम्हारी शक्ति है।*
—बाइबिल

** आप दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करिए जैसा कि आप उससे अपने प्रति चाहते हैं।*
—स. पटेल

** आपसी विश्वास और सहयोग द्वारा बड़ी से बड़ी समस्या को हल किया जा सकता है।*
—राधाकृष्णन्

"मैं जब मरूंगा तो अपनी वसीयत में लिख जाऊंगा कि मेरे बच्चे किसी के भी साथ पार्टनरशिप में व्यापार न करें। इसमें घाटा उठाने और मानसिक कष्ट पाने के सिवाय कुछ नहीं।"

"अगर आप कोई व्यापार पार्टनरशिप में करना चाहते हैं तो अपने पार्टनर की ओर से अपनी आंखें, कान और मुंह बंद रखें और ऐसा करना लगभग असम्भव है।"

ये विचार मेरे नहीं वरन् एक अनुभवी मित्र श्री हरीचन्द के हैं। जो एक बहुत ही बड़ी फर्म 'हरी चन्द नत्थूराम' के मालिक थे। साइकिल ट्रेड में उस जमाने में उनकी तूती बोलती थी। स्पष्ट है कि अपने बिजनेस पार्टनर्स से उन्हें बेहद दुख मिला था।

पर मेरे विचार और अनुभव इसके बिल्कुल विपरीत हैं। कोई भी बड़ा **व्यापार अथवा उद्योग पार्टनर्स के बिना नहीं किया जा सकता।**

सच्चाई यह है कि बिना दूसरों का सहयोग पाए और दूसरों को सहयोग दिए हम किसी भी क्षेत्र में उन्नति नहीं कर सकते चाहे वह व्यापार का हो अथवा राजनीति या शिक्षा का।

मैंने अपने छोटे भाई श्री परमानन्द के साथ पचास प्रतिशत की भागीदारी में व्यापार किया। मैंने जो भी व्यापार किया उसमें उसका आधा हिस्सा डाला

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

और मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता होती है कि गत 40 वर्षों से हमारी पार्टनरशिप पूरे प्रेम और विश्वास के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है।

पार्टनरशिप की सफलता के लिए आपसी विश्वास और सहयोग मूलभूत तत्व हैं। व्यापार में हिस्सेदारी तभी सफल होती है जब सभी हिस्सेदारों को एक-दूसरे का लाभ करने में खुशी महसूस हो। उनमें अहंकार या ईर्ष्या का भाव आया नहीं कि आपस में दरार पड़नी शुरू हो जाती है। मैंने लगभग 35 लोगों के साथ हिस्सेदारी में व्यापार किया पर कभी किसी से मनमुटाव की नौबत नहीं आई।

इसके लिए यह जरूरी है कि हिस्सेदार या पार्टनर्स सप्ताह में कम से कम चार बार आपस में मिल-बैठ कर व्यापार से संबंधित कार्यों और समस्याओं पर खुलकर बातचीत करें। अपने-अपने सुझाव दें। **जो बात या कार्य सबके लाभ में हो उसे अपनाएं।**

मैंने ऐसे लोगों के साथ भी हिस्सेदारी की जिनके पास अनुभव था पर धन नहीं अथवा जिनके पास अपना कोई कार्यालय नहीं था। इसके अतिरिक्त मेरी कंपनी में बहुत से ऐसे लोग आए जिन्होंने मेरे कर्मचारी के रूप में अच्छा कार्य किया और सीखा। ऐसे लोगों को मैंने अपना स्वतंत्र व्यापार करने के लिए उत्साहित तथा प्रेरित किया। परमात्मा की कृपा से वे सफल रहे। उनका नाम देना मैं उचित नहीं समझता।

व्यापारिक क्षेत्र हो या परिवार आपसी सहयोग के सूत्र समान ही हैं। इन्हें यहां संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा हूं—

❑ सभी सदस्यों को इस सत्य को समझना होगा कि वे सब एक ही नाव के सवार हैं। यह नाव है कंपनी। कंपनी के हितों को व्यक्तिगत स्वार्थ की कीमत पर चोट नहीं पहुंचानी है।

❑ सब पार्टनर्स का परस्पर दृढ़ विश्वास और प्रेम।

❑ आपसी व्यवहार में सहनशीलता और स्पष्ट विचार विनिमय।

❑ नेता या चेयरमेन के निर्णय पर पूर्ण विश्वास।

❑ परस्पर आर्थिक विषयों में पूरी ईमानदारी।

❑ अनुशासन और विनम्रता।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

11

शुभ संकल्प की शक्ति

प्रत्येक कर्म का ही नहीं वरन् प्रत्येक विचार का भी फल अवश्य मिलता है। यह बात अलग है कि हममें उस फल को देखने-समझने की शक्ति न हो। अच्छे विचार और कर्म का अच्छा और बुरे का बुरा फल प्राप्त होता ही है। इसमें देर लग सकती है पर अंधेर नहीं हो सकता। यही प्रकृति का नियम है। अत: अगर आप सफल होना चाहते हैं तो सदैव शुभ विचार रखिए और उन्हें शुभ संकल्पों या निश्चयों में बदलिए।

—स्वामी रामतीर्थ

"तुम चौथी साइकिल बिना रुपये दिए नहीं ले जा सकते।" एच. आर. भल्ला कंपनी के जी.एम. श्री जे.सी. छतवाल ने दृढ़ता से कहा।

"मैं कल दे दूंगा।" मैंने उत्तर दिया, "तीन साइकिलों के रुपये दे दिए हैं।"

"फिर चौथी के कल देकर ले जाना। मैं उधार नहीं देता।"

मुझे छतवाल जी की बात सुनकर थोड़ा-सा बुरा लगा। मैं उनका परमानेन्ट कस्टमर था पर वे केवल 120 रु. के लिए एक दिन का भरोसा नहीं कर सकते थे। परन्तु दूसरे ही क्षण मेरे मन में यह विचार आया कि छतवाल जी का दृष्टिकोण बिल्कुल ठीक है।

व्यापार में आदमी को लेन-देन के बारे में बिल्कुल स्पष्ट और दृढ़ होना चाहिए। सोचा कि ऐसा योग्य व्यक्ति तो मेरा बिजनेस पार्टनर होना चाहिए। हालांकि यह विचार उस समय बड़ा हास्यास्पद था। कहां मैं छोटा-सा साइकिल डीलर और कहां छतवाल जी जो एच.आर. भल्ला एण्ड कंपनी जैसी प्रसिद्ध औद्योगिक संस्था के जनरल मैनेजर थे, जो फारवर्ड साइकिल का निर्माण करती थी। परन्तु मेरा यह शुभ संकल्प दृढ़ था।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दूसरे दिन मैं उन्हें रुपये देकर चौथी साइकिल खरीद लाया और अपने व्यापार में पूरी लगन से जुट गया। परमात्मा की कृपा से मेरा व्यापार बढ़ता चला गया और एक मंगलमय दिन ऐसा भी आया जब श्री छतवाल ने एच.आर. भल्ला एण्ड कंपनी से इस्तीफा देकर मेरे साथ नई कंपनी बनाई इसका नाम **छतवाल बग्गा एण्ड कंपनी** रखा गया। इसके द्वारा साइकिलों के डिस्ट्रीब्यूशनशिप का कार्य किया जाता था। छतवाल जी का साइकिल डीलर्स से बहुत अच्छा परिचय और व्यापार था। हमने लुधियाना में बनने वाली 'लकी स्टार' और 'स्विफ्ट' साइकिलों की दिल्ली राज्य की डिस्ट्रीब्यूशनशिप ली। कुछ ही महीनों में हमारे डीलर्स की संख्या सैकड़ों में पहुंच गई। हम दोनों को ही इससे अच्छा लाभ पहुंचा।

श्री छतवाल जब तक जीवित रहे, हमारी पार्टनरशिप प्रेमपूर्वक चलती रही। हम दोनों ने सदैव एक-दूसरे की भावनाओं का आदर किया।

यह घटना मैंने इसलिए प्रस्तुत की ताकि आप यह अनुभव कर सकें कि—**शुभ संकल्प में कितनी महान शक्ति होती है। लेकिन यह शक्ति तभी अपना चमत्कार दिखाती है जब आपमें अपने कार्य या व्यवसाय के प्रति सच्ची लगन हो और साथ में दूसरों के प्रति सद्भावना। इन दो शक्तियों के सहारे जो व्यक्ति आगे बढ़ता है वह निश्चित रूप से जीवन में कामयाब होता है।**

अतः यदि आप जीवन में सच्चे दिल से सफलता पाना चाहते हैं तो इन दोनों गुणों-**दूसरों के प्रति सद्भावना और अपने काम में उत्साह तथा लगन से जुटे रहना, को अपनाइए; आप निश्चित रूप से सफल होंगे।**

कवियत्री प्रतिष्ठा ने इस तथ्य को अपने शब्दों में इस प्रकार कहा है—

कठिनाइयां चाहें जितनी भी आएं
उसके उत्साह की सदा जीत होती है।
गहराइयों में जिनके दिल की
अपने लक्ष्य से सच्ची प्रीत होती है॥

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

12

अपने में शुभ संकल्प की शक्ति कैसे जगाएं

यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है कि आप अपने मन में जैसे विचार अधिक समय तक बार-बार दोहराते रहेंगे वैसा ही आपका शरीर और मनोमस्तिष्क बन जाएगा। तत्पश्चात कुछ समय बाद आपके अंदर वैसे ही संकल्प विकसित होने लगेंगे। आपके जैसे संकल्प होंगे वैसा ही भाग्य बनेगा। अतः सदैव शुभ विचारों और संकल्पों को बार-बार दोहराइए। अशुभ विचारों, भावों के आते ही उन्हें विदा कर द ीजिए।

आशा, विश्वास, उत्साह, प्रसन्नता आदि के विचारों को शुभ विचार कहा जाता है, इन विचारों में अत्यधिक शक्ति होती है।

सफलता पाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को सदैव शुभ विचार रखने चाहिए। जब हम अपने शुभ विचारों को बार-बार दोहराते हैं तो वे शुभ भावों में बदल जाते हैं। ये शुभ भाव हमारे अंदर ही नहीं वरन् हमारे चारों ओर शुभ संकल्प की शक्ति उत्पन्न करते हैं। यही शक्ति हमें सफलता, सुख और यश प्रदान करती है।

अतः सदैव शुभ विचार रखिए, शुभ दृष्टिकोण रखिए, शुभ बोलिए और शुभ कर्म कीजिए।

अपने शुभ विचारों को सोने से पहले और प्रातः जागते ही आंखें बंद कर आराम से कम से कम 51 बार दोहराइए। अपनी कल्पना में उन शुभ विचारों को साकार होते हुए देखिए। दिन में जब भी समय मिले अपने शुभ विचार को मन ही मन दोहराइए।

कुछ शुभ विचार (संकल्प) निम्नलिखित हैं—

❑ परमात्मा की कृपा से मैं दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा हूं।

❑ मुझे समाज तथा अपने लाभ के लिए अपने व्यवसाय को सच्ची लगन, प्रेम और श्रद्धा से करने में ही प्रभु सेवा का आनन्द प्राप्त होता है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

❑ प्रभु कृपा से मैं सदा खुश रहता हूं।

❑ मैं सबको खुशियां बांटता हूं क्योंकि मैं दूसरों को जितनी खुशियां बांटता हूं उतनी ही मेरी खुशी बढ़ती है।

❑ ईश्वर कृपा से मैं दिन-प्रतिदिन सफल होता जा रहा हूं। ईश्वर का धन्यवाद।

❑ प्रभु कृपा से हो रहा मुझमें आत्मसंयम-आत्मविश्वास का विकास। पा रहा मैं इसी से धन-यौवन-हास-विलास।

❑ मैं प्रभु कृपा से परिपूर्ण हूं। स्वस्थ, सफल और संपन्न हूं।

❑ परमात्मा हमेशा मेरे साथ है। परमात्मा मेरी मदद कर रहा है, मुझे सफलता की राह दिखा रहा है।

❑ मैं सबका सच्चे दिल से भला चाहता हूं।

❑ मैं शांत-संतुलित आनन्द पूर्ण हूं। मैं ईश्वरीय शक्ति से परिपूर्ण हूं।

❑ मुझे अपना कार्य करने में आनन्द आता है।

❑ मैं परमात्मा की शरण में हूं। वह सदैव मेरी रक्षा करता है और सही मार्गदर्शन करता है।

❑ जब परमात्मा मेरे साथ है तो मुझे क्रोध, भय या चिन्ता करने की क्या जरूरत? परमात्मा की कृपा से सब शुभ हो रहा है और होगा।

❑ परमात्मा मुझे अपने कर्मों को पूरी बुद्धिमानी, परिश्रम और कुशलता से करने की शक्ति दे रहा है।

आप इन शुभ सुझावों में से 5 सुझाव अपनी रुचि के अनुसार अपनाकर उन्हें नित्य नियम से दोहराएं। **आप निश्चित रूप से कामयाब होंगे।**

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

13

आप कौन-सा व्यवसाय करें

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमें विलक्षण है। आप भी अपने आपमें अनूठे हैं, आप जैसा इस संसार में कोई नहीं। अपनी रुचियों, विशेषताओं और गुणों को पहचानिए। अपनी पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण कर ज्ञात करिए कि वह कार्य कौन-सा है जिसमें आपकी सबसे अधिक रुचि है, जिसे करने में आपको सदैव एक नवीन सुख की अनुभूति होती है। इसके लिए आप अपने बुजुर्गों, अध्यापकों और मित्रों की भी सहायता ले सकते हैं। इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण सलाह देने वाले होते हैं व्यक्ति की अभिरुचियों की परीक्षा लेने वाले प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक। अपनी सबसे प्रिय अभिरुचि जानने के बाद उससे संबंधित व्यवसाय में पूरे उत्साह से जुट जाइए। उसी में कोई नई लाभदायक और समाज उपयोगी स्कीम जोड़ दीजिए फिर देखिए! सफलता कैसे आपकी ओर खिंची चली आती है।

—नेपोलियन हिल

फोन की घनघनाहट से अचानक नींद खुल गई। स्विच ऑन कर बिजली जलाई, देखा सर्दी की रात के ग्यारह बजे हैं। मन में तरह-तरह की आशंकाएं जाग उठीं। पता नहीं क्या अनहोनी बात हुई है कि किसी को इतनी रात फोन करने की जरूरत पड़ गई।

उन दिनों टेलीविजन का प्रचलन शुरू ही हुआ था। अधिकतर लोग ग्यारह बजे तक सो जाते थे और जहां तक मेरा सवाल है, सभी जानते हैं कि मैं साढ़े नौ बजे सो जाता हूं क्योंकि मुझे सुबह चार बजे उठने की आदत है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

यह सारे विचार पल भर में दिमाग में घूम गए।

ये फोन था राजा सिंह का पूछ रहे थे कि टी.वी. लगवाने वाले का पता नहीं मिल रहा है। क्या मैं दोबारा उसका पता बता सकता हूं क्योंकि वह उसके मकान को खोज रहे हैं और वह मिल नहीं रहा है। मैंने जवाब दिया—पता ऑफिस में रखा है, मेरे पास घर में नहीं। मैं उसे सुबह देख कर ही बता सकूंगा। इतनी रात ऑफिस जाकर पता खोजना मुमकिन नहीं।'' और मैंने फोन रख दिया।

मैं विचारने लगा कि यह आदमी अपनी लगन का कितना पक्का है। उन दिनों वे दिन भर में केवल दो टेलीविजन सेट बनाते थे। उनका ग्राहकों से यह वायदा होता था कि रात तक वे उसके घर में टी.वी. सेट लगा कर आएंगे। यह सोचते-सोचते मैं सो गया। पता नहीं कितनी देर सोया कि फोन फिर घनघना उठा। झुंझला कर उठा। बारह बज गए थे। फोन उठाया। पता नहीं अब किस पर कैसी मुसीबत आ गई है? फोन राजा सिंह जी का ही था। उन्होंने खुशी से मुझे बताया कि ग्राहक का घर मिल गया और उन्होंने उसके यहां टी.वी. सेट लगा दिया है। उनके स्वर में ऐसी खुशी थी मानो कोई बड़ी जीत हासिल कर ली है। मेरी बातचीत ग्राहक से भी करवाई जिसने बताया कि टी.वी. सेट बिलकुल ठीक चल रहा है और वह राजा सिंह जी की कार्यकुशलता से संतुष्ट है।

उन दिनों ऐसी लगन थी श्री राजा सिंह में।

अपने काम और वचन के पक्के। अपने काम और ग्राहक की सेवा में इतनी श्रद्धा और लगन से जुटे रहते मानो भगवान की सेवा कर रहे हों।

भला जिस आदमी के दिल में अपने काम के प्रति इतनी श्रद्धा और लगन होगी वह क्यों नहीं सफल होगा? मुझे विश्वास होने लगा कि एक दिन वे जरूर देश के विख्यात टी.वी. निर्माता होंगे। उनके टी.वी. का नाम 'टेक्सिला' था।

एक बार की बात है कि मेरी ससुराल वालों ने टी.वी. खरीदने की इच्छा प्रकट की। श्री राजा सिंह अपना टी.वी. वहां लगाने के लिए बड़े उत्साह से तैयार हो गए। मेरी ससुराल है खुर्जा में जो दिल्ली से 50 मील दूर है। मैंने उनसे कहा कि क्या आप केवल एक टी.वी. सेट लगाने के लिए अपने मेकेनिक को खुर्जा भेजेंगे। वह बोले, ''**क्यों नहीं? अपने फर्म और टी.वी. का नाम फैलाने के लिए मैं कहीं भी अपना मेकेनिक भेज सकता हूं।**''

''इतना याद रखिएगा कि अगर टी.वी. सेट खराब निकला या उसने ठीक से काम नहीं किया तो मेरी बड़ी बदनामी होगी। सारा नाम डूब जाएगा।'' इसके

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जवाब में राजा सिंह जी ने कहा, "अपने टी.वी. सेट को नदी में डुबा दूंगा पर आपके नाम पर आंच नहीं आएगी। अपने मेकेनिक को एक हथौड़ा लेकर भेजूंगा कि अगर टी.वी. सेट खराब निकले तो उसे हथौड़ा मार कर तोड़ दे और वहीं किसी नदी-नाले में डुबा आए।"

तो एक टी.वी. सेट बेचने के लिए उन्होंने अपना मेकेनिक दिल्ली से खुर्जा भेजा। सेट बहुत अच्छा निकला। इसका परिणाम यह हुआ कि खुर्जा में लगभग तीस लोगों ने टेक्सिला टी.वी. सेट लगवाए।

अपने कार्य की कुशलता पर उनका इतना दृढ़ विश्वास था। इसी विश्वास और शुभ संकल्प की शक्ति ने ही एक दिन राजा सिंह के टेक्सिला टी.वी. को पूरे भारत में सुप्रसिद्ध बना दिया।

मैं अपने ग्राहकों को टी.वी. सेट खरीदने के लिए रुपये उधार दिया करता था। टेक्सिला टी.वी. सेट का डीलर था। जल्दी ही टेक्सिला निर्माता राजा सिंह जी का कार्य बढ़ने लगा। फैक्टरी बन गई। डीलर्स की संख्या भी बहुत बढ़ गई। उन्होंने टेक्सिला टी.वी. खरीदने वाले डीलर्स की एक एसोसिएशन बनाई। मुझे इस एसोसिएशन का प्रेसीडेण्ट चुना गया। एसोसिएशन की मीटिंग्स में सभी डीलर्स अपनी-अपनी कठिनाइयां, शिकायतें और सुझाव रखते थे। मैं उन सबके विचारों पर पूरा ध्यान देकर अपने सुझावों द्वारा ऐसे हल प्रस्तुत करता था जिससे सभी सन्तुष्ट हो जाते थे। इससे राजा सिंह जी बड़े प्रभावित हुए। मैं भी उनके कार्य करने की लगन और तरीकों से बहुत प्रभावित था। वे एक ऐसे उद्योगपति थे जो फर्श से उठ कर अर्श तक (अर्थात् जमीन से उठ कर आकाश तक) पहुंचे थे और वह भी अपने परिश्रम तथा बुद्धिबल से। ईमानदार और उदार हृदय व्यक्ति थे। हम दोनों की मित्रता घनिष्ठ होती चली गई। वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु व्यवहारकुशलता और सूझ-बूझ में बड़े-बड़े शिक्षित लोगों से कहीं अधिक निपुण। सभी उनका सम्मान करते थे। जहां कहीं कोई अपनी दुकान, स्टोर, संस्था आदि का उद्घाटन करता तो अधिकतर उन्हें ही उद्घाटन करने के लिए सादर आमंत्रित करता। ऐसे अवसरों पर वे मुझे अपने साथ ले जाते। मैं भी उनकी संगत में प्रसन्नता अनुभव करता, कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता और अच्छे धनी-मानी सज्जनों से मिलने का सुअवसर।

इसे परमात्मा की कृपा ही कहूंगा कि मुझे निरन्तर ऐसे व्यक्तियों की संगत मिलती गई जो अपने-अपने क्षेत्र में उन्नति कर रहे थे। मैंने उनकी अच्छाइयों, गुणों और कमजोरियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया। **मैंने यह पाया कि सफलता**

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पाने के लिए सबसे पहले व्यक्ति को आत्मविश्लेषण करना चाहिए। उसे जिस कार्य में सबसे अधिक रुचि हो, सबसे ज्यादा लगन हो उसे ही अपने व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहिए और उस कार्य के विशेषज्ञों की सलाह लेकर योजना बनानी चाहिए फिर अपने काम में डट जाना चाहिए। इसके साथ ही सफल तथा सज्जन व्यक्तियों की संगत का भी व्यक्ति के चरित्र पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सफल, धनवान तथा यशस्वी व्यक्तियों की संगत में रहने वाला देर-सवेर स्वयं भी अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है।

❑ ❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

14

हौसला नहीं हारें

** व्यापार एवं उद्योग जगत में आज टाटा और बिड़ला का नाम प्रसिद्ध है। लेकिन इन उद्योगों को शुरू करने वाले जमशेद जी टाटा और घनश्याम दास बिड़ला ने साधारण आर्थिक स्थिति से ऊपर उठने में जिन कठिनाइयों और संघर्षों का सामना किया, वह कम लोग ही जानते हैं। इन उद्योगपतियों की सफलता का एक रहस्य यह भी था कि उन्होंने बड़ी से बड़ी कठिनाई या असफलता आने पर भी कभी अपना हौसला नहीं हारा।*

** भारत के अनेक महापुरुषों जैसे—स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. जाकिर हुसैन आदि ने अपने जीवन लक्ष्यों को पाने के लिए घोर संकट सहे और अथक प्रयत्न किए। उनके सामने भीषण कठिनाइयां आईं, कई बार तो जीवन तक संकट में पड़ गया पर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी और कामयाबी पाकर रहे।*

** यह सभी महापुरुष आपकी तरह ही साधारण व्यक्ति थे परंतु अपने बुद्धिबल, नई सूझ-बूझ तथा अथक परिश्रम से महान बन गए फिर आप क्यों नहीं बन सकते?*

राजा सिंह की संगत से मुझे दूसरा और बहुत महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि मेरी भाषण देने की कला विकसित होती चली गई। इसका कारण यह था कि राजा सिंह जी को भाषण देना नहीं आता था। अतः वह हर जगह उद्‌घाटन करने के बाद कहते, ''अब श्री के.एल. बग्गा आपके सामने अपने विचार रखेंगे।''

एक शुभ पर विचित्र बात यह हुई कि जिस भी दुकान, संस्था या स्टोर का उद्‌घाटन करने हम दोनों पहुंचे वे सभी कामयाब रहे और उन्होंने अच्छा मुनाफा कमाया।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जनता में टेक्सिला टी.वी. बहुत लोकप्रिय हुआ। उसके सामने लोग सुप्रसिद्ध 'वेस्टन' टी.वी. तक को नहीं पूछते थे।

राजा सिंह का औद्योगिक क्षेत्र तीव्रता से बढ़ते हुए लगभग पूरे देश में फैल गया। इस दौरान मेरे द्वारा प्रशिक्षित कर्मचारी, रिश्तेदार या मित्र अपना कोई कार्य शुरू करते तो उसका शुभारम्भ करने अथवा उद्घाटन करने के लिए मुझे प्रेमपूर्वक आमंत्रित करते। मैं ऐसे शुभ अवसरों पर जाने का पूरा प्रयत्न करता।

परमात्मा का मैं बहुत आभारी हूं कि जहां भी गया वहां लोगों को अपने नए कार्य या व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त हुई। परन्तु दो-तीन सज्जन ऐसे भी थे जिन्हें कठिनाइयों और हानि का सामना करना पड़ा। इस विषय को लेकर वे लोग मुझसे मिलते, मेरी सलाह लेते और पुनः अपने व्यापार में मेरी नीतियों को अपनाते हुए पूरे उत्साह से जुट जाते और सफल हो जाते।

मुश्किलों या कठिनाइयों से परेशान अथवा दुखी होने वालों के लिए ी कवि की निम्नलिखित पंक्तियां प्रेरणा का साधन बन सकती हैं—

"मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती हैं।
हौसला मत हार गिर कर ओ मुसाफिर,
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं।"

मैं यही बात अपने उन साथियों को सिखाता हूं जो सफलता के मार्ग में आने वाली मुश्किलों से घबरा जाते हैं। अरे भाई! सफलता की राह में **मुश्किलें, कठिनाइयां, परेशानियां और तकलीफों के तूफान नहीं आएं तो सभी लोग सफल न हो जाएं? फिर इन बातों के बिना सफलता में क्या मजा रह जाए?**

किसी शायर ने कितना अच्छा कहा है—

"खेलता चला जाता हूं मौजें हवादिस से
अगर आसानियां हों तो जिंदगी दुश्वार हो जाए।"

अगर जिंदगी में आसानियां हों तो उसे जीना मुश्किल हो जाए। मजा तो तूफान की लहरों से खेलते हुए आगे बढ़ने में आता है। मैं भी इसी प्रकार जीवन में आगे बढ़ा, श्री राजा सिंह जी इसी तरह बढ़े और संसार के सभी सफल तथा महान पुरुष कठिनाइयों को पार कर ही कामयाब हुए।

आप भी कामयाब हो सकते हैं अगर इस शिक्षा को केवल पढ़ें नहीं वरन् उसका पालन करें।

महत्वपूर्ण तथ्य केवल पढ़ना नहीं वरन् जो पढ़ा है उस पर भली प्रकार विचार कर उसे जीवन में अपनाना है।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

15

एक साथ दो नावों में पैर मत रखो

** वही व्यक्ति सफल होता है जो पूरी एकाग्रता से अपने निश्चित कार्य में जुटा रहता है।* **—लाल बहादुर शास्त्री**

** दुविधा में रहने वाले व्यक्ति का हमेशा नाश होता है।*

—श्रीकृष्ण

** बुद्धिमानी इसी में है कि हमने जिन कार्यों को शुरू किया है उन्हें भली प्रकार पूरा करें।* **—रस्किन**

** अपना स्वामी आप बनने में जो सुख है वह महाराजा का मंत्री बनने में भी नहीं।* **—शेक्सपियर**

श्री राजा सिंह के साथ मेरे संबंधों में घनिष्ठता आती चली गई। हम दोनों का परस्पर विश्वास बढ़ता चला गया।

एक दिन उन्होंने एक बहुत अच्छी योजना बनाई। इसके अंतर्गत हम दोनों मिलकर एक नई फाइनेंस कंपनी शुरू करने जा रहे थे। श्री राजा सिंह अधिकांश इन्वेस्टमेंट करने जा रहे थे। इसमें मेरा इन्वेस्टमेंट थोड़ा था। फाइनेंस कंपनी का पूरा उत्तरदायित्व मेरा रहना था और लाभ-हानि में दोनों की समान हिस्सेदारी रहनी थी। मैं इस प्रस्ताव से शीघ्र सहमत हो गया।

श्री राजा सिंह ने एक बैंक से 50 लाख रुपये कंपनी के कार्य हेतु उधार भी सेंक्शन करवा लिया। कनॉट प्लेस (दिल्ली) में एक अच्छा कार्यालय ले लिया गया। मेरे लिए कंपनी द्वारा एक कार, ड्राइवर, कार्यालय तथा सभी प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था करवा दी गई। मैं इस कंपनी में औपचारिक तथा आधिकारिक रूप से मैनेजिंग पार्टनर बनने वाला था कि एक दिन मेरे बड़े भाई साहब ने मुझे बुलाकर कहा—यह बड़ी खुशी की बात है कि तुम एक बड़ी कंपनी के हिस्सेदार बनने जा रहे हो पर क्या तुमने यह सोचा है कि तुम्हारी

Ph. 2292513
Azad Book Depot
Near Punjab & Sind Bank,
Hall Bazar, Amritsar.
Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपनी जो फाइनेंस और ट्रेडिंग कंपनी है उसमें अगर कोई समस्या खड़ी हो जाती है तो उसका कौन सामना करेगा? इनकम टैक्स, कोर्ट केसेज और तुम्हारे कस्टमर्स के केसेज कौन निपटाएगा? तुम जितनी होशियारी से कंपनी का कार्यभार संभालते आ रहे हो उतना होशियार और अनुभवी तो कोई नहीं और फिर यहां तुम अपनी कंपनी के मालिक हो, लेकिन वहां चाहे कितने बड़े डायरेक्टर बन जाओ वह कंपनी तो राजा सिंह की ही कहलाएगी। श्री राजा सिंह की जब इच्छा होगी वे तुम्हें कंपनी की पार्टनरशिप से अलग कर सकेंगे। अगर तुम यह सोच रहे हो कि तुम अपनी इस कंपनी के कामों को भी देखते रहोगे तो यह तुम्हारी गलतफहमी है क्योंकि एक आदमी दो नावों में पैर रखकर ज्यादा देर तक आगे नहीं बढ़ सकता।

मैंने भाई साहब के द्वारा कही बातों पर गहराई से विचार किया और पाया कि उनकी सलाह पूरी तरह ठीक है। श्री राजा सिंह के पास योग्य व्यक्तियों की कोई कमी नहीं और वे मेरी जगह किसी को भी लेकर व्यापार कर सकते हैं। अत: मैंने उनके द्वारा प्रस्तावित पद से इस्तीफा दे दिया। उन्हें मेरी यह बात अच्छी नहीं लगी पर मेरी खुशी के लिए मेरा इस्तीफा स्वीकार कर लिया। आज मैं जब उस पुरानी घटना पर विचार करता हूं, अनुभव करता हूं कि बड़े भाई साहब की सलाह शत-प्रतिशत सही थी। मेरी फाइनेंस कंपनी ने आज जो उन्नति की है वह नहीं हो पाती अगर मैं श्री राजा सिंह की संस्था का पार्टनर बन जाता।

मेरा आदर्श सदैव अपना स्वामी स्वयं बनना रहा है, सेवक बनना नहीं। मैं समझता हूं कि हरेक कामयाब आदमी का आदर्श भी यही होना चाहिए अपने मालिक खुद बनो।

इसी तथ्य को कवि वशीर अहमद मयूख ने कितने सुन्दर शब्दों में पिरोया है—

> **''तेरा मित्र स्वयं तेरे भीतर बैठा है**
> **बाहर तू खोज रहा किस सहयोगी को।**
> **मानव निज का संग्रह करे अगर**
> **निश्चय ही मुक्ति मिले दुख भोगी को।''**

वास्तव में दूसरे भी आपके तभी अच्छे मित्र बन सकते हैं जब आप स्वयं अपने मित्र हों।

अपना मित्र वही है जिसने अपने मन को वश में कर लिया है, अपने हानिकारक विचारों और आदतों को वश में कर लिया है। ऐसा व्यक्ति ही अपना स्वामी स्वयं बनने में सफल होता है, चाहे जीवन का कोई क्षेत्र हो।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

16

हंसते-हंसते मरना

हंसना जीवन के लिए अमृत के समान है।

** जो खुश रहता है उससे सभी खुश रहते हैं, मां सरस्वती और मां लक्ष्मी भी; उसके पास स्वास्थ्य, सुख और सफलता भी आते हैं।*

** हंसना सर्वोत्तम औषधि है।*

** जीवन में स्वास्थ्य, सुख और सफलता पाने के लिए यह आवश्यक है कि हम क्रोध, घृणा, हीनता, भय आदि हानिकारक विचारों से दूर रहें और आशा, विश्वास, प्रेम, सहयोग आदि के शुभ विचारों को अपनाएं।*

** सारे प्राणियों में केवल मनुष्य ही ऐसा है जो हंस सकता है।*

** हंसना ही जीवन है।*

सुबह के साढ़े पांच बजे थे, पूर्व दिशा में हल्का-सा उजाला छा गया था। पीतमपुरा पार्क के वृक्षों पर पक्षियों का मधुर कलरव गूंज रहा था और शुद्ध-ताजी हवा के हल्के झोंकों से गुलाब के पौधे हौले-हौले हिल रहे थे। ऐसे सुहावने मौसम में स्वास्थ्य प्रेमी अबाल-वृद्ध भांति-भांति के व्यायाम, योगासन आदि करने में लगे थे।

इस क्षेत्र के व्यायाम विकास केन्द्रों के संस्थापक श्री के.एल. बग्गा अपने साथियों को व्यायाम करवा रहे थे। उस समय उनकी आयु लगभग 65 वर्ष थी।

उनको व्यायाम करवाते हुए आधे घंटे से अधिक का समय हो चुका था। लेकिन इतनी आयु होते हुए भी उनके तन-मन में युवकों-सा उत्साह तथा बल था। परन्तु वहीं पास पड़ी बेंच पर श्री बग्गा के ही हमउम्र एक वृद्ध सज्जन बैठे थे। वे अभी-अभी एक गम्भीर बीमारी से ठीक हुए थे। उन्होंने श्री बग्गा के पास

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जाकर कहा—"भाई बग्गा! अगर तुम इसी तरह लोगों को व्यायाम करवाते रहे तो तुम्हारा हार्टफेल हो जाएगा।" इस बेतुकी बात को सुनकर वहां उपस्थित सभी लोगों को क्रोध आने लगा। इस पर श्री बग्गा ने उन वृद्ध सज्जन को बड़ा प्रेरणापूर्ण उत्तर दिया, "**मैं बिस्तर पर घिसट-घिसट कर मरने के बजाय हंसते-हंसते मरना चाहता हूं। व्यायाम करते और करवाते हुए मरना चाहता हूं।**"

उनके इस उत्तर को सुनकर सभी लोगों को बहुत खुशी हुई। यहां तक कि व्यंग्य करने वाले वृद्ध सज्जन भी बोले, "वाह! तुमने तो अपने जवाब से सबकी तबीयत खुश कर दी।" मैंने बाद में उनसे पूछा—"आपको उन सज्जन का सवाल सुनकर गुस्सा नहीं आया?"

"पहले आता था बहुत गुस्सा, अब तरस आता है जो करते हैं गुस्सा।" उन्होंने शायराना अन्दाज में कहा।

"काश! मैं भी अपने क्रोध को वश में रखने की शक्ति रखता।" मेरे मुंह से अनायास निकल गया।

"आप ही नहीं कोई भी व्यक्ति अपने क्रोध को काबू में रख सकता है, बस लंबे अभ्यास की जरूरत पड़ती है। पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था पर बराबर अभ्यास करते-करते अब वह मेरे काबू में आ गया है। लेकिन कभी-कभी मुझे गुस्से का नाटक जरूर करना पड़ता है।"

"मुझे भी सिखाइए, यह साधना।"

"जरूर सिखाऊंगा, वक्त आने दो।" उन्होंने कहा।

> **"जफर उसे न आदमी जानिएगा**
> **चाहे वह हो कितना साहिबे सदर।**
> **जिसे ऐश में यादे खुदा न रहा**
> **जिसे तैश में खौफे खुदा न रहा॥"**

हमारे साथ-साथ चलने वाले बुजुर्ग मित्र श्री त्रिलोकचन्द जिन्दानी बोले। जिन्दानी साहब जिन्हें हम भाई साहब कहा करते थे, एक ऐसे बुजुर्ग सज्जन थे जिन्होंने अपने क्रोध को पूरी तरह वश में कर लिया था। वह हम लोगों को अपनी बहुमूल्य सलाहों से सदैव लाभ पहुंचाया करते थे। जरूरत पड़ने पर प्रशंसा करते तो सही मौके पर गलती बताने से नहीं चूकते। उनकी जिन्दगी का यह अनुभव था कि **गुस्सा आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है। जो लोग जिन्दगी में सच्ची कामयाबी और खुशी हासिल करना चाहते हैं सबसे पहले उन्हें अपने क्रोध पर विजय पानी होगी।**

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

17

मृत्यु के बाद के अनुभव

** शुभ अवसर का एक विचित्र गुण है। वह जब कभी आता है किसी संकट, समस्या या कठिनाई के रूप में आता है। अतः सफल व्यक्ति संकट, समस्या अथवा कठिनाई में छिपे शुभ अवसर को पहचान कर उससे लाभ उठाने का प्रयत्न करता है।*

** जो सफलता पाने की सच्ची चाहत रखते हैं वे मृत्यु भय से भी अपनी राह नहीं छोड़ते। ऐसे महान व्यक्ति विजय पाने पर समृद्धि और यश के भागी बनते हैं और मरने पर अपने आदर्शों के प्रकाश स्तम्भ।*

—गेटे

जिस समय मैं ऑपरेशन टेबल पर पड़ा था और डॉक्टर मुझे अनेस्थेसिया (बेहोशी लाने की दवा) देने जा रहे थे उससे पहले ही मेरी चेतना एक नए लोक में पहुंच चुकी थी।

मैंने देखा कि मैं अपने भौतिक शरीर से बाहर निकल आया हूं, लेकिन फिर भी मुझे यह अनुमान हो रहा था मानो मैं शरीर में हूं। यह नया शरीर बिलकुल हवा की तरह हल्का और अदृश्य अनुभव हो रहा था। मैं डॉक्टरों को अपने शरीर का ऑपरेशन करते हुए देख रहा था परन्तु वे मुझे नहीं देख पा रहे थे। सभी डॉक्टरों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। स्पष्ट था कि उन्हें महसूस हो रहा था कि मरीज मौत की कगार पर है।

अपने सूक्ष्म शरीर में मुझे कोई घबराहट, परेशानी या कष्ट नहीं अनुभव हो रहा था। इसके विपरीत मैं अपने को प्रसन्न अनुभव कर रहा था।

कुछ ही मिनटों बाद दो व्यक्ति सफेद आभा से ढके हुए कमरे में आए। मैं उनके चेहरों को ठीक से नहीं देख पा रहा था। इतना जरूर याद आ रहा है कि उनके नेत्रों से एक दिव्य प्रकाश सा निकल रहा था। वे बोले नहीं पर मुझे पता चल गया कि वे मुझे अपने साथ चलने का आदेश दे रहे हैं। "कृष्ण लाल

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बग्गा! तुम्हारा इस संसार से विदा होने का समय आ गया है। चलो हमारे साथ।''

मैं उनके पीछे-पीछे चल दिया। मैं वास्तव में पैरों से नहीं चल रहा था वरन् फर्श से कुछ इंचों की ऊंचाई पर उड़ रहा था। उन दोनों ने मेरा एक-एक हाथ थाम लिया। उनके स्पर्श में प्रेम का एक दिव्य भाव था।

वे मुझे अपने साथ एक सुंदर और विचित्र-सी लिफ्ट में ले गए। यह लिफ़्ट चारों ओर से शीशे की दीवार से गोलाकार में घिरी हुई थी, जिससे मैं चारों ओर के दृश्य सरलता से देख सकता था। लिफ्ट के अंदर का वातावरण सुखद लग रहा था। चन्दन के इत्र सी सुगंधि आ रही थी। वे दोनों आगंतुक शांतिपूर्वक मेरे अगल-बगल खड़े थे। उनके तेजोमय चेहरों पर एक मंद मुस्कान थी।

लिफ्ट अत्यधिक तीव्र गति से ऊपर की ओर उठी जा रही थी। यह इसी बात से मुझे स्पष्ट हो गया कि एक सेकण्ड के बाद मैंने देखा कि लिफ्ट के चारों ओर रंग-बिरंगे बादल आकाश में तैर रहे हैं। फिर नीला आकाश, उसके बाद चांद, सूरज, फिर सेकण्डों के बाद हल्के नीले रंग का सूर्य फिर अनेकानेक जगमगाते तारे।

अचानक लिफ्ट के ऊपर उठने की गति इतनी तीव्र हो गई कि मैंने अपनी आंखें मींच लीं क्योंकि मुझे लगा कि अत्यन्त तीव्रता से बदलते दृश्यों को मैं सहन नहीं कर पाऊंगा।

कुछ क्षणों बाद जब मैंने आंखें खोलीं तो अपने को बिलकुल एक नए लोक में पाया। लिफ्ट के चारों ओर पूर्ण चन्द्र का चांदी-सा चमकीला प्रकाश फैल रहा था। परंतु वह धरती के चन्द्र प्रकाश से कहीं अधिक तीव्र था। चारों ओर सुंदर-सुगंधित फूल खिले हुए थे। रंग-बिरंगे फलों से लदे हरे-भरे वृक्ष और उन पर मधुर राग छेड़ते हुए पक्षी। दूध से भरी बिलकुल सफेद रंग की नदी-नहरें। बादलों में चारों ओर दिखता इन्द्रधनुष। सब कुछ इतना सुंदर तथा अनुपम कि मैं उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। उस सौन्दर्य और सुख को तो बस अनुभव किया जा सकता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों की मधुर स्वर लहरियां सुनाई दे रही थीं और मदहोश बना देने वाली सुगंधियों से मनोमस्तिष्क में दिव्य आनन्द जैसा अनुभव हो रहा था।

मैंने मन में सोचा, यह तो निश्चित है कि मैं अपनी सांसारिक देह त्याग चुका हूं। परन्तु यह लोग मुझे कहां ले आए हैं और क्यों? पता नहीं उन्हें मेरे मन की बात कैसे पता चल गई। बोले, ''स्वर्ग में आ गए हो।'' यह भी उन्होंने कहा नहीं। बस, मेरे मन में ऐसा विचार आया।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तभी मैंने अपने स्वर्गीय पिता जी को लिफ्ट के शीशे के पार देखा। वे बहुत स्वस्थ और प्रसन्न थे। मुझे देखकर हाथ हिला रहे थे, जैसे कह रहे हों—आ गए बहुत अच्छा हुआ, बड़ी खुशी हुई। उसके बाद मैंने अपनी स्वर्गीय माता जी, नानी जी आदि को भी वहां देखा। वे सभी खुश नजर आ रहे थे। इसके अलावा और भी कई ऐसे परिचित स्त्री-पुरुष थे जिनका स्वर्गवास हो चुका था। सब कुछ बड़ी तीव्रता से हो रहा था। कुछ मिनटों बाद ही लिफ्ट रुका और उन दोनों व्यक्तियों ने मेरे हाथ पकड़ लिए। लिफ्ट का द्वार खुला और हम लोग जैसे उड़ते हुए एक विशाल कक्ष में पहुंच गए। उसके द्वार पर एक तेजस्वी व्यक्ति बैठा था। मुझे देखकर कुछ कहते हुए ऐसा संकेत किया मानो मुझे लाने वाले दोनों दूतों को आदेश दे रहा हो वापस ले जाओ। उन दूतों ने मुझे हल्का-सा धक्का दिया। मुझे उसी क्षण ऐसा लगा जैसे मैं बहुत तीव्रता से पृथ्वी की ओर आ रहा हूं।

मैं एक मिनट में अपने ऑपरेशन रूम में था। एक डॉक्टर दूसरे से कह रहा था—"गुड!" ऑपरेशन इज सक्सेजफुल, बस परमात्मा ने बचा लिया।"

किसी अदृश्य रस्सी से खिंचा हुआ मैं अपने भौतिक शरीर में पहुंच गया। तब भी मेरी चेतना बहुत धूमिल थी। मैंने सबसे पहले अपनी सांसों को चलते हुए और दिल को धड़कते हुए अनुभव किया फिर धीरे-धीरे पूरे शरीर को।

कितनी देर बाद होश में आया, कह नहीं सकता। जब मैंने आंखें खोलीं, अस्पताल के अपने कमरे में था। डॉक्टरों और नर्सों की सफलता के आलोक से दीप्तवान दृष्टियां मेरी ओर ही केन्द्रित थीं। उनके चेहरों पर मुस्कानें थीं। मैं भी धन्यवाद और कृतज्ञता के भाव से मुस्कराया। मैं मौत के मुंह से लौट कर आया था।

मेरी आंतों का ऑपरेशन सफल हो गया था। परंतु इस घटना का सूत्रपात हुआ था सन् 1982 में श्री फोर्ट ऑडिटोरियम दिल्ली में। वहां एशियन गेम्स होने थे। छह-सात दिन से मैं अपने साथियों के साथ वहां काम पर लगा हुआ था। उन दिनों मैं दिल्ली वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन का वाइस प्रेसीडेण्ट था। श्री जगदीश टाइटलर प्रेसीडेण्ट थे। एसोसिएशन के अन्य पदाधिकारी श्री सुरेश सहगल वाइस प्रेसीडेण्ट और श्री बलवीर सिंह भाटिया (जनरल सेक्रेटरी) भी अपनी-अपनी जिम्मेवारियां निभा रहे थे।

असल में सन् 1980 के दौरान स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन् 1982 में एशियन गेम्स भारत में करवाने का निर्णय लिया था। लगभग सभी विरोधी पार्टियां इससे कुछ न कुछ असहमत थीं। उनका मानना था कि दो वर्ष

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

के अन्दर दिल्ली को एशियन गेम्स जैसे विशाल समारोह का आयोजन करने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता। परन्तु इंदिरा गांधी जी को चुनौतियों का सामना करना खूब आता था। दो वर्षों के अन्दर उन्होंने दिल्ली में इन्दिरा गांधी स्टेडियम, नेहरू स्टेडियम, फ्लाई ओवर आदि तथा फाइव स्टार होटल एवं खिलाड़ियों के रहने के निवास निर्मित करवा कर सारे देश को चकित कर दिया। **पूरे देशवासियों में एक नया आत्मविश्वास और स्वाभिमान जाग्रत हुआ कि अगर हम लोग एक बार किसी महान कार्य को करने का निश्चय करके जुट जाएं तो अवश्य सफल होते हैं, फिर चाहे वह कार्य कितना ही कठिन क्यों न हों।** परन्तु इस सफलता को पाने के लिए हजारों लोगों ने इसमें अपना योगदान दिया था। स्वयं इंदिरा गांधी दिन में तीन बार कार्य की प्रगति रिपोर्ट लिया करती थीं। इस संबंध में इंदिरा गांधी जी की कार्यप्रणाली की प्रशंसा करनी होगी। पहले वह नए कार्य के लिए स्वयं उस पर गहराई से विचार करती थीं। उसके बाद उस कार्य के विशेषज्ञों से सलाह लेती थीं। तत्पश्चात अपनी पार्टी के साथियों और विरोधी पार्टी के नेताओं से बात करती थीं। अंत में उस कार्य से संबंधित विषय पर निर्णय लेती थीं। निर्णय लेने के बाद फिर उसे कार्यान्वित करने में पूरे दिलो-दिमाग से अपने पिता की तरह योजना बनाकर जुट जाती थीं। वह दिन के 24 घंटों में करीब 18 घंटे तक देश तथा पार्टी के कार्यों में पूरी एकाग्रता से लीन रहती थीं। एक बार निर्णय लेने के बाद फिर वह उसे बदलती नहीं थीं फिर चाहे मृत्यु भी सामने आ जाए। उनकी इसी विशेषता ने उन्हें विश्व इतिहास में अमर बना दिया। **जीवन में अपने लक्ष्य को पाने के लिए हमें भी उनकी कार्यप्रणाली को अपनाने का प्रयास करना चाहिए।**

मौत का सामना

हम भी सब कुछ भूल कर एशियन गेम्स की तैयारियों में अपने-अपने कामों में पूरी लगन से जुटे हुए थे। खाने-पीने का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। अत: जो कुछ मिल जाता, खा-पी लेते। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरे पेट में भीषण पीड़ा होने लगी। अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। वहां गंगाराम हॉस्पिटल में तरह-तरह के मेडिकल टेस्ट होने के बाद बताया गया कि आंतों में घोर अल्सर हो गया है और अगर तुरन्त ही ऑपरेशन नहीं किया गया तो कैंसर बन जाएगा जो घातक सिद्ध हो सकता है। मृत्यु की निकटता का कटु सत्य जानकर मेरे मन में निराशा और दुख के भाव आए। कैंसर रोग का नाम ही ऐसा है कि इसे सुनकर अच्छा से अच्छा स्वस्थ और साहसी व्यक्ति अपनी हिम्मत छोड़

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बैठता है। परन्तु मेरी हताशा अधिक समय तक नहीं रह सकी। मैंने अपने इष्टदेव महाबली हनुमानजी और उनके मंत्र का स्मरण कर उनका ध्यान किया।

"मनोजयं मारुत तुल्य वेगं, जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठाम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये।"

इससे मुझे एक नया आत्मविश्वास और बल मिला। मेरी धर्मपत्नी, पुत्री-पुत्रों, भाई-बहन और परिवार के सभी सदस्यों को मेरी बीमारी के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ। यद्यपि वे सभी ऊपर से सामान्य रहने का प्रयत्न कर रहे थे पर मुझसे उनकी आंतरिक चिंता छिपी नहीं थी। मेरे पहलवान मित्र, व्यापारिक साथी, परिचित स्त्री-पुरुष सभी इस समाचार से परेशान थे। लोगों को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि मुझ जैसा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति जो नियमित रूप से व्यायाम करता हो, (वेट लिफ्टिंग) भारोत्तोलन का मुख्य खिलाड़ी हो, वह ऐसे भयानक रोग से कैसे ग्रस्त हो सकता है। सबको मेरी मृत्यु निकट दिख रही थी। मेरे घर वालों ने ही नहीं वरन् परिचित स्त्री-पुरुषों, मित्रों आदि में से अनेक ने मंदिरों, गुरुद्वारों और पवित्र स्थलों पर मेरे स्वास्थ्य लाभ के लिए मन्नतें मांगी और प्रार्थनाएं कीं। इनमें से एक ने तो दिल्ली के भैंरो मंदिर में रोट भी यथाविधि चढ़ाए।

बीमारी के दिनों में मुझे परमात्मा ने अपने जीवन और उसको जीने की शैली पर गम्भीर रूप से विचार करने का सुअवसर प्रदान किया। अंग्रेजी में एक कहावत है **हर काले बादल में एक चांदी की रेखा होती है।** (Every cloud has a silver lining) अतः इस भयानक बीमारी ने मुझे इस सच्चाई का गहराई से अहसास करा दिया कि यह जीवन स्थायी नहीं है, बस एक यात्रा की तरह, एक सफर की तरह है। यहां मुझे अपने एक मित्र श्री त्रिलोकचन्द जिन्दानी के द्वारा कही जाने वाली किसी शायर की पंक्तियां याद आ रही हैं—

"दो पल की जिंदगी है,
एक पल तो मुस्करा ले।
क्या पता किसको खुदा बुला ले॥
मंजिल है मौत सबकी
यह जिन्दगी एक सफर है।
मत तोड़ दिल किसी का
हर दिल खुदा का घर है।"

मैंने यह निश्चय किया कि अब आगे से जीवन में हर पल खुश रहने की कोशिश करूंगा। खुद भी खुश रहूंगा और दूसरों को भी खुशी देने की कोशिश करूंगा।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

समय है सबसे बलवान

सन् 1982 के एशियन गेम्स देखने की मेरी इच्छा पूरी हुई। उसकी तैयारियों में मेरा भी सहयोग था, मेरी भी मेहनत लगी थी हालांकि वह आंशिक रूप में थी। मेरे जैसे हजारों लोगों ने उनके आयोजन में अपना योगदान दिया था।

अपनी मेहनत के पसीने से उपजाई फसल को लहलहाते देख कर एक किसान को जितनी खुशी होती है उतनी ही मुझे 'एशियन गेम्स' की प्रतियोगिताओं को देखकर हो रही थी। मैं उन्हें ऑडीटोरियम की 'सीट' पर बैठ कर नहीं परन्तु अपने अस्पताल की 'बेड' पर लेटा टी.वी. पर देख रहा था। सब समय का खेल है। समय सबसे बलवान होता है। कहां मैं सोचा करता था कि एशियन गेम्स को मैं अपने संगी-साथियों सहित ऑडीटोरियम में जाकर पूरे उत्साह और हंसी-खुशी से देखूंगा और कहां अब पड़ा था अस्पताल के बिस्तर पर एक रोगी के रूप में। ऐसा रोगी जिसे एक ऐसे ऑपरेशन से गुजरना था जिसमें जिन्दगी और मौत की बाजी लगी थी। मैंने इस स्थिति की कल्पना तक नहीं की थी। किसी विचारक ने ठीक ही लिखा है, "सत्य कल्पना से भी परे होता है।"

वैसे आदमी अपने को बहुत बलवान समझता है और कुछ अर्थों में वह बलवान है भी—संसार के सभी प्राणियों से अधिक बलवान और शक्तिशाली। वैज्ञानिक आविष्कारों ने उसे असीमित शक्ति भले ही दे दी हो परन्तु समय के सामने वह कुछ नहीं है। समय के प्रबल प्रवाह में बड़े-बड़े राजा-महाराजा काल के ग्रास बन गए।

मृत्यु के सामने किसी की नहीं चलती। आप तन-मन से चाहे कितने बलवान हों परन्तु एक न एक दिन बीमारी, वृद्धावस्था और मृत्यु का सामना करना ही पड़ता है। इसीलिए किसी कवि ने कहा है—

"समय अहेरी निष्ठुर निर्मम
क्षमा नहीं करता कोई भ्रम।"

बुद्धिमानी इसी में है कि हम समय को नष्ट नहीं करें वरना समय हमें नष्ट कर देगा। अतः जीवन में सफलता पाने के लिए समय का सदुपयोग करना पहली शर्त है।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

18

प्रशंसा ही नहीं, निंदा भी सुनें

** बुद्धिमान व्यक्ति अपनी प्रशंसा या निन्दा से विचलित नहीं होता। वह प्रशंसा और निन्दा में छिपे शुभ विचार तथा भाव को ग्रहण कर उनसे प्रेरणा लेता है।*

** शब्द को ब्रह्म कहा गया है। अतएव शब्दों का उपयोग सावधानी से करने वाला सदैव सफल होता है।*

अस्पताल के बिस्तर पर पड़े हुए मैंने अपना आत्मविश्लेषण किया अपने गुणों और अवगुणों पर विचार किया। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि— **जीवन में उन्नति करने के लिए जहां अपने प्रशंसकों का होना जरूरी है वहीं सही आलोचना और निन्दा करने वालों का महत्व भी कम नहीं।**

प्रशंसा करने वाले हमारी मानसिक खुशियों को बढ़ाते हैं, हमें नया उत्साह देते हैं। संकट या समस्या आने पर प्रशंसा पाकर हममें नया आत्मविश्वास बढ़ता है। शायद इसीलिए पुराने राजा-महाराजा अपने दरबार में चारण और भाट रखा करते थे जो अपनी काव्य रचनाओं द्वारा उनमें वीरता, साहस, त्याग और उत्साह की भावनाओं का संचार करते थे। **परन्तु आवश्यकता से अधिक प्रशंसा करना या पाना हानिकारक है।**

उचित प्रशंसा के समान ही उचित आलोचना और निन्दा का भी महत्व है। दूसरा व्यक्ति हमारे व्यवहार तथा चरित्र के दोषों को जितनी स्पष्टता से देख सकता है उतना हम स्वयं नहीं। अपनी कमजोरी या दोष जाने बिना हम उसको दूर नहीं कर सकते।

एक अच्छा मित्र इसलिए भी अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि उसकी प्रशंसा और निन्दा दोनों ही हमारी उन्नति में सहायक होती है। प्राय: यह देखा गया है कि प्रत्येक सफल या महान व्यक्ति अपने साथ ऐसे शुभचिन्तकों को रखता है जो उन्हें सही सलाह दे सके फिर चाहे वह निन्दा के रूप में हो या प्रशंसा के मधुर शब्दों में।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

एक पुराना लोकप्रिय दोहा है—

निन्दक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय।
बिन साबुन, पानी बिन उज्ज्वल करे सुभाय॥

तो मैंने निश्चय किया कि जीवन में आगे से अपनी आलोचना या निन्दा करने वालों की बातों पर पहले से अधिक ध्यान दूंगा।

मैंने महसूस किया कि मुझे क्रोध ज्यादा आता है। मुझमें थोड़ा-सा अहंकार भी अधिक है। अपनी शक्तियां तथा बल प्रदर्शन करने की इच्छा भी सीमा से जरा ज्यादा है। खानपान में भी मैं ज्यादती कर जाता हूं। व्यायाम करने तथा अधिक से अधिक भार उठाने की लालसा भी मुझमें अधिक रही है। मन में सदा यह विचार रहता है कि मैं कुछ ऐसा बड़ा या अनूठा काम करूं कि लोग मेरी वाह-वाह कर उठें।

इस आखिरी बात पर मैंने गहराई से विचार किया। कुछ अच्छा, महान अथवा अनूठा करके दूसरों की प्रशंसा अर्जित करने की ज्वलंत इच्छा होना एक सद्गुण है जो व्यक्ति को जीवन में उन्नति करने में सहायक सिद्ध होता है। **परन्तु ज्यादती तो हर चीज की बुरी होती है फिर चाहे वह चीज अच्छी ही क्यों न हो। वास्तव में व्यक्ति की बुद्धिमानी इस बात में है कि वह अपनी शक्ति और सीमा के अनुसार ही हर क्षेत्र में कार्य करे।**

दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात है—**हम अपनी नजरों में कैसे इंसान हैं, अच्छे या बुरे? दूसरों की आलोचना या प्रशंसा के पीछे उनके निहित स्वार्थ हो सकते हैं। समाज की प्रशंसा-निन्दा के मापदण्ड समय के अनुसार बदलते रहते हैं पर हमारी आत्मा यह भली प्रकार जानती है कि हम (जीवात्मा) कितने अच्छे हैं या बुरे हैं?**

मैंने कठोरता के साथ अपने आपको उपर्युक्त कसौटी पर कसा और पाया कि मैं कोई महान आत्मा नहीं हूं पर जैसा भी हूं एक सही इंसान हूं जिसमें कमजोरियां हैं तो अच्छाइयां भी। मुझमें और बेहतर इंसान बनने की क्षमताएं हैं।

मुझसे अनजाने में गलतियां और ज्यादतियां हो सकती हैं पर जान-बूझकर मैंने कभी किसी पुरुष-स्त्री या बच्चे का दिल नहीं दुखाया ऐसे मौकों पर भी जब मैं जो भी चाहता कर सकता था।

ऑपरेशन रूम में जाने से पहले मैंने अपने इष्टदेव भगवान हनुमानजी का ध्यान करते हुए प्रार्थना की—जाने या अनजाने में मुझसे कोई गलती या ज्यादती हुई हो तो क्षमा करना परन्तु मैं इतना निश्चय करता हूं कि पूरी तरह स्वस्थ होने के बाद अपने को पहले से कहीं बेहतर इंसान बनाने का प्रयत्न करूंगा। दीन-दुखियों को जितनी भी सहायता या सेवा हो सकेगी करूंगा।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

परिवार वाले मेरा माथा चूम-चूम कर मुझ पर अपने प्रेम की वर्षा कर रहे थे, मेरे लिए मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे। उनकी आंखों में प्रेम भाव झलक रहा था। सभी की हार्दिक कामना थी कि मेरा ऑपरेशन सफल हो।

अपने इष्टदेव और परमात्मा से प्रार्थना करते हुए स्ट्रेचर ट्राली पर लेटा हुआ मैं ऑपरेशन थिएटर की ओर बढ़ा जा रहा था।

डॉक्टरों की कुशलता, परमात्मा की कृपा और अपने परिजनों, मित्रों और शुभचिन्तकों की प्रार्थनाओं के फलस्वरूप ऑपरेशन सफल रहा। मैंने सभी को मन ही मन धन्यवाद दिया।

इसके बाद जितने दिन मैं अस्पताल में रहा डॉक्टर मुझे नई जीवन शैली और नित्य कर्मों से संबंधित सावधानियों के बारे में प्रशिक्षित करते रहे। **अब भारोत्तोलन करने के अभ्यास को पूरी तरह समाप्त करना था।** खाने-पीने और व्यायाम करने में भी जीवन भर सावधानी रखनी थी। इसके साथ ही अपनी जीवन शैली को पूरी तरह विधायक (Positive) बनाना था। मैंने सब कुछ सहर्ष सीखा और अपनाया।

परमात्मा द्वारा दिया गया यह तन-मन और जीवन कितना अमूल्य है, यह मैंने पूरे दिल से अनुभव किया। वास्तव में किसी व्यक्ति के लिए दुनिया की सारी दौलत से भी ज्यादा अनमोल होता है उसका जीवन, उसका स्वास्थ्य।

इसके बाद मैं ओस्टोमेट सोसायटी, रोटरी कैंसर हॉस्पिटल, ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट का सदस्य बना फिर उन्होंने मुझे अपनी कार्यकारिणी में ले लिया। दो वर्ष बाद चुनाव में मुझे ट्रेजरार बनाया गया। सन् 1985 से उसकी सेवा निःस्वार्थ भाव से करता आ रहा हूं। अनेक स्त्री-पुरुषों को मैंने ओस्टोमी इलोस्टोमी आदि...के ऑपरेशन करवाने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया है और उनके मनोबल को बढ़ाया है। बहुत से रोगी जो आर्थिक रूप से गरीब होते हैं, ओस्टोमी सोसायटी उनकी आर्थिक मदद भी करती है। मेरे योग्य जो भी सेवा होती है उसे करने में मुझे दिली खुशी महसूस होती है।

इसी विषय को आगे बढ़ाने के लिए हमने एक पुस्तक "**ओस्टोमेट्स नवजीवन की ओर**" प्रकाशित की। यह सब निःशुल्क सेवा के रूप में किया गया। यह पुस्तिका ओस्टोमेट्स के जीवन हेतु गाइड लाइन्स प्रस्तुत करती है। इसमें अनेक डॉक्टरों तथा लेखकों का योगदान रहा। यह पुस्तक ओस्टोमेट्स के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

इसके बाद मैंने **डॉ. एन.के.शुक्ला, श्री अनिल डिसूजा** की सहायता-सहयोग से एक त्रैमासिक पत्रिका 'ओस्टोमेट्स मार्गदर्शिका' का प्रकाशन किया जो अब भी चल रहा है।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

19

भूतों का माया-जाल

** भूतकाल के हानिकारक विचार ही वे भूत हैं जो हमारे सिर पर चढ़कर विनाश का कारण बनते हैं। अतः सफलता के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति भय, आशंका, चिन्ता आदि हानिकारक विचारों तथा अंधविश्वासों से अपने मनोमस्तिष्क को मुक्त रखते हैं।*

"गर्मियों की रात के साढ़े बारह बजे थे कि आंगन में रखी लालटेन अचानक अपने आप ऊपर उठी और गिर कर बुझ गई। चारों ओर घुप अंधेरा छा गया। वातावरण में अजीब तरह की भयानक आवाजें गूंजने लगीं। दांतों की किटकिटाहट, चमगादड़ों के परों की फड़फड़ाहट, बिल्ली की रोने की आवाजें, विचित्र-सी सरसराहट के साथ रोमांचित कर देने वाला अट्टहास...।"

हम भयभीत होकर उठकर बैठ गए। पास रखी लाठियां उठा लीं। तभी एक नरकंकाल हवा में तैरता-सा दिखाई दिया। उसके बाद दूसरा नरकंकाल प्रकट हो गया। किसी ने नकसुरी आवाज में कहा, "आज तो दो-दो जवानों का खून पीने को मिलेगा।"

दोनों नरकंकालों की खोखली लाल-लाल आंखें हम दोनों पर जमीं थीं। वे अपने डरावने अंदाज में हवा में हाथ-पैर हिलाते हमारी ओर बढ़ रहे थे।

भय के मारे हम दोनों के रोएं खड़े हो गए। इससे पहले हम कई जाने-माने बदमाशों से दो-दो हाथ कर उन्हें धराशायी कर चुके थे। श्मशान घाट की घोर अंधेरी रातों में गश्त लगाई थी पर कभी सचमुच में भूतों से सामना नहीं हुआ था। हालांकि हम डरे हुए थे फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी। हम अपने डंडे तान कर खड़े हो गए। उसी वक्त हवा में अजीब-सी बदबू फैल गई। हमें हल्के-हल्के चक्कर आने लगे। दोनों भूत गायब हो गए। हमने अपनी टार्चें टटोलीं पर वे बिस्तर पर नहीं मिलीं।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अचानक एक भूत ठीक हमारे सामने प्रकट हुआ और उसने एक जोर का हाथ हम दोनों के सिर पर मारा। हम धड़ाम से गिर पड़े। आंखों के आगे तारे से चमकने लगे। हमारी हिम्मत जवाब दे गई। हम दोनों वहां से भागे और घर के दरवाजे खोल कर सीधे आपके यहां आ गए।

यह विवरण मेरे द्वारा नियुक्त वह रिटायर्ड हेड कांस्टेबिल दे रहा था जिसे मैंने उस 'भुतहा हवेली' में सुरक्षा के लिए तैनात किया था। उसका साथी भी एक रिटायर्ड कांस्टेबिल था। दोनों वृद्ध होने पर भी शरीर से हृष्ट-पुष्ट और साहसी थे।

मैंने घड़ी पर नज़र डाली, रात के दो बज रहे थे। उनसे कहा, "अच्छा अभी जाओ। घर जाकर आराम करो। सुबह दस बजे ऑफिस में मिलना।"

उनके जाने के बाद सारी घटना पर शुरू से विचार करने लगा—

यह घटना लगभग 1954-55 की है। उन दिनों पहाड़गंज के बाद झण्डेवालान पर बहुत कम आबादी थी। उसका रूप भी आज जैसा नहीं था, छोटी-छोटी पहाड़ियां थीं। इन्हीं के निकट एक पुरानी बीस कमरों वाली अच्छी-खासी हवेली थी। उसके दाहिनी और बायीं ओर मकान थे। उन दो मकानों के अलावा आस-पास कोई बस्ती नहीं थी। उस जमाने में रात के वक्त उस ओर जाने में लोग कतराते थे। उधर बिजली के तार भी नहीं पहुंचे थे।

छह माह पहले मेरे एक दोस्त ने इस लम्बी-चौड़ी शानदार हवेली को पाकिस्तान जाने वाले किसी सज्जन से मात्र बीस हजार रुपयों में खरीदा था। उस वक्त उन्हें यह नहीं पता था कि वह पुरानी नवाबी हवेली लोगों में 'भुतहा हवली' के नाम से प्रसिद्ध है। यह बात उन्हें उस समय पता चली जब वे वहां दो-चार दिन ठहरने के लिए गए। वह और उनकी पत्नी तथा दो लड़के आधी रात को एक भयानक चीख सुनकर जाग पड़े। उन्हें लगा जैसे कोई स्त्री चीखती-चिल्लाती, रोती-कराहती कोठी के कमरों में घूम रही है। गैस की लालटेन और टॉर्च लेकर उन्होंने सारे कमरे देख डाले पर कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। वे घूम-फिरकर फिर आंगन में आ गए।

अजीब बात थी, औरत की चीख और चलने की पग ध्वनि तो सुनाई देती पर दिखता कोई नहीं। इससे सभी डर गए। तभी उन्होंने देखा कि दूर रखी गैस लालटेन अपने आप ऊपर उठी और नीचे गिरकर टूट गई जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उसे उठा कर तोड़ डाला हो।

फिर ऊपर से सड़े-गले मांस की बरसात होने लगी। कुछ क्षणों बाद उसी बरसात में ऊपर से कोई नरकंकाल हवा में उड़ता हुआ नीचे आया।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वे सब लोग भय से चीख कर आंगन से अपने कमरे में भागे। उन्होंने राम-राम जाप किया, गायत्री मंत्र का जाप किया यहां तक कि हनुमान चालीसा भी पढ़ा पर भूत-प्रेतों की भयानक क्रियाएं कम जरूर हो गईं पर रुकी नहीं।

जैसे-तैसे उन्होंने रात काटी और सुबह होते ही हवेली छोड़ बाहर निकल पड़े। पड़ोसियों ने उन्हें देखा तो आश्चर्य करने लगे कि वे जिन्दा कैसे बच गए? उसमें रात बिताने वाले ज्यादा व्यक्ति सुबह मरे पाए जाते थे। भूत-प्रेतों का राज था उसमें। इसीलिए कोई भी व्यक्ति उस हवेली को खरीदने के बारे में सोचता तक नहीं था।

मेरे दोस्त को यह सब जानकर बहुत दुख हुआ। बीस हजार रुपये खर्च कर भयानक हवेली खरीदने की मूर्खता पर पछताते रहे। बाद में उन्हें मेरा नाम याद आया। उन्हें पता था कि मैं भूत-प्रेतों जैसी बेतुकी बातों और अंधविश्वासों का घोर विरोधी हूं। इसलिए उन्होंने अपनी पूरी मुसीबत मुझे सुनाते हुए कहा, ''बग्गा साब! आप मेरी हवेली को भूतों से छुटकारा दिलाओ, बड़ी मेहरबानी होगी।''

मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि वह चिन्ता नहीं करें। मैं एक सप्ताह में उस भुतहा हवेली को भूत-प्रेतों के उत्पात से मुक्त करवा दूंगा। दूसरे दिन मैंने वहां अपने परिचित दो रिटायर्ड पुलिस वालों की ड्यूटी लगा दी थी।

ऊपर जिन लोगों के भुतहा हवेली में सोने और भूत-प्रेतों के उत्पात का सामना करने का वर्णन किया गया है, वे यही लोग थे। उनकी बातें सुनकर मैं कुछ चिंतित हो गया था पर परमात्मा का ध्यान करते ही बड़ी शांति का अनुभव हुआ और मैं सो गया।

दूसरे दिन सुबह जाकर मैंने उस हवेली के एक-एक कमरे, दीवारों, आंगन आदि का भली प्रकार निरीक्षण किया। वहां मुझे कुछ विचित्र और रहस्यमय वस्तुएं मिलीं जिन्हें मैंने होशियारी से अपने पास रख लिया।

एक पंडित जी को बुला कर मैंने वहां हवन कराया। आस-पड़ोस के दोनों सज्जनों तथा अपने कुछ दोस्तों को भी हवन में बुलाया। पंडित जी ने भूतों की आत्मशांति के लिए विशेष रूप से मंत्र पाठ किया। हवन के बाद एक पड़ोसी बोले, ''भगवान करे कि इस हवन और मंत्र पाठ से भूत-प्रेतों की आत्मा को शांति मिले। लेकिन पहले वाले सज्जन ने भी ऐसा ही हवन कराया था पर कोई फर्क नहीं पड़ा।''

दूसरे ने कहा, ''मेरे ख्याल से यहां भूत-प्रेतों का निवास नहीं वरन् जिन्नों का है। मुसलमान मुल्ला-मौलवी ही उन्हें काबू में करने की तरकीबें जानते हैं।''

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वे लोग आपस में इसी तरह की बातें करते रहे। मैं चुपचाप सुनता रहा।

अपनी पूरी योजना तैयार कर मैं अपने दो साथियों के साथ उस हवेली में रात आठ बजे पहुंच गया। आंगन में चारपाई पर बिस्तर बिछाए। उनके ऊपर मच्छरदानी लगाई। गैस की लालटेन जलाकर खाना खा-पीकर हम सो गए। लेकिन हम यह सब नाटक कर रहे थे। गैस की लालटेन हमने इस तरह से रखी थी कि उसकी रोशनी हमारे बिस्तरों पर नहीं पड़े ताकि अगर कोई चुपचाप हमारे कामों पर नजर जमाए हुए हो तो वह हमारी हरकतों को नहीं देख पाए।

हम तीनों चुपचाप बिना कोई शोर किए अपने बिस्तरों से उतर कर आंगन के चारों ओर बनी दालान के खंभों के पीछे छिप गए। हमारी नजरें आंगन पर लगी थीं और हम हर तरह के खतरे का सामना करने के लिए तैयार थे। करीब साढ़े बारह बजे गैस की लालटेन को किसी अदृश्य शक्ति ने उठाकर इतनी जोर से नीचे फेंका कि वह भभक कर बुझ गई। लालटेन के शीशे चूर-चूर होकर बिखर गए। चारों ओर अंधकार छा गया और तरह-तरह की डरावनी आवाजों से वह हवेली गूंजने लगी। अचानक तीन कंकाल ऊपर से नीचे उतरे और हमारे बिस्तरों की ओर बढ़े। हम तीनों कंकालों के पीछे की ओर थे। हमने फुर्ती से आगे बढ़कर उनके सिर पर डंडों से भरपूर वार किया। ऐसी आवाजें हुईं जैसे तीनों डंडे लोहे के हेलमेट पर पड़े हों। परन्तु हमारा हमला इतना अचानक हुआ था कि भूत-प्रेत भी चक्कर में पड़ गए।

इसके साथ ही हमारे द्वारा छिपाए गए बैट्री से जलने वाले चार तेज लैंप जल उठे।

डंडों की चोट पड़ते ही तीनों कंकालों की चीख निकल गई और वे लड़खड़ाते हुए जमीन पर गिर पड़े।

हमने पहले से बनाई गई योजना के अनुसार जेब से सीटी निकाल कर बजाई—एक लम्बी सीटी, एक छोटी सीटी फिर एक लम्बी तेज सीटी। आवाज सुनते ही पहले से तैनात और गुप्त रूप से छिपे चार पुलिस कांस्टेबल अंदर आ गए।

नर कंकाल की वेश-भूषा पहने उन तीनों व्यक्तियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। दीवारों में छिपे चार छोटे-छोटे लाउडस्पीकर अपने कब्जे में कर लिए। उनमें लगे तार पड़ोसियों के घरों में रखे टेपरिकॉर्डर्स में फिट किए गए थे। अत: उन पड़ोसियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

दूसरे दिन से पुलिस वालों ने भूतों की नकल करने वालों से सख्ती के साथ पूछताछ शुरू कर दी। उन्हें डराया-धमकाया गया तो उन्होंने सारी पोल खोल दी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दोनों पड़ोसी हवेली में किसी को टिकने नहीं देना चाहते थे ताकि वहां से अपना अवैध धंधा चलाते रह सकें। भूत-प्रेत-जिन्न आदि जैसी हरकतें करके वे अपने इस लक्ष्य में सफल होते आ रहे थे। रात में वे अपने मकान की छत से जो हवेली के ठीक ऊपर थी रस्सी द्वारा नीचे उतर आते थे। कभी-कभी वही लोग ऊपर से मल-मूत्र, सड़ा मांस या फॉस्फोरस के टुकड़े फेंककर हवेली में रहने वालों को डरा देते थे। सफेद फॉस्फोरस ही धुआं उड़ाते हुए जलने लगता था और लोग डर जाते थे।

इसके बाद से वह हवेली भूत-प्रेतों से मुक्त हो गई। मेरा मित्र सपरिवार वहां जाकर रहने लगा। इस काम के लिए वह आखिर तक मेरा अहसान मानता रहा।

अपने स्व. मित्र श्री चमनलाल की यह सत्यकथा मैंने इसलिए लिखी ताकि लोगों के दिलों से पुराना अवैज्ञानिक अंधविश्वास निकल सके।

सदा स्मरण रखिए कि इस संसार में सफलता पाने के लिए यह अत्यावश्यक है कि हम पुराने अंधविश्वासों से ऊपर उठें। भूत-प्रेत, जिन्न, चुड़ैल, तंत्र-मंत्र, शनि का चक्कर, भाग्य, देवी-देवताओं का प्रकोप आदि बातें अज्ञानता से भरी हैं।

महाकवि तुलसीदास जैसे भक्त कवि ने लिखा है—

सकल पदारथ हैं जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं॥

इसलिए सभी प्रकार के अंधविश्वासों को त्याग कर परमात्मा द्वारा दी गई अपनी बुद्धि का उपयोग करिए और सफलता पाने का प्रयत्न करिए।

हार जाने पर भी अपनी हिम्मत न हारिए और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ बार-बार प्रयत्न करिए।

अपनी हार से मिलने वाली शिक्षा को जीवन में अपनाकर आप असफलता की हार को फूलों के हार में बदल सकते हैं, जीत के हारों में रूपान्तरित कर सकते हैं।

संसार में अधिकांश लोग इसलिए असफलता और दुख का जीवन जी रहे हैं क्योंकि उन्होंने उसे अपना भाग्य समझकर स्वीकार कर लिया है। बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो बुरे ग्रहों के सामने हार बैठे हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि हार **में ही जीत का रहस्य छिपा होता है।**

बार-बार पूरे दिल-दिमाग से कोशिश करने पर असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। इसी सिद्धांत के बल पर आज मानव चन्द्रमा पर पहुंच चुका है और मंगल पर उसके यान उतर चुके हैं।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

20

जब पसीना गुलाब था

** इस संसार में सब कुछ परिवर्तनशील और क्षणभंगुर है। जिसका जन्म हुआ है वह युवा होकर वृद्ध होता है, फिर मर जाता है। फूल मुर्झाने के लिए खिलते हैं और चांद अस्त होने के लिए उदय होता है। अतः सच्ची सफलता चाहने वाला आत्मानन्द पाने का प्रयत्न करता है और अपने प्रेम, करुणा, सेवा भाव आदि गुणों से अमरत्व को प्राप्त करता है।*

ऑपरेशन के बाद डॉक्टरों ने मुझे भारोत्तोलन तथा भारी व्यायाम करने के लिए सख्ती से मना कर दिया था। तब मुझे अपने जीवन की वे घटनाएं याद आने लगीं जब यौवनावस्था में मेरी शारीरिक शक्ति से अच्छे-अच्छे बलवान व्यक्ति भी घबराते थे।

एक बार की बात है कि किसी ट्रक का ड्राइवर जो अपने हाथों को बहुत शक्तिशाली समझता था, उसने मुझे पंजा लड़ाने की चुनौती दे डाली। ट्रक ड्राइवर का व्यवसाय ही ऐसा होता है कि उसे दिन भर अपने हाथों से भारी-भारी कार्य करने पड़ते हैं, जैसे—बोझ उठाना, ट्रक के भारी पहियों को उठाना-लगाना, लोहे का हैंडिल घुमाना आदि। फिर वह भारवाहक ट्रक का ड्राइवर था, इसलिए भी उसके हाथों और पंजों में काफी शक्ति थी।

मेरे दोस्तों ने इस चुनौती को मेरी ओर से स्वीकार कर लिया था, उन्होंने अच्छी-खासी रकम की बाजी भी लगा दी। असल में मेरे दोस्तों को मेरी पंजा लड़ाने की शक्ति और कुशलता पर पूरा विश्वास था। बाजी की बात मुझे उस वक्त नहीं बताई गई क्योंकि सब लोग जानते थे कि बग्गा इस तरह की बाजियों और शर्तों के खिलाफ है।

मित्रों ने आग्रह किया तो मैं ड्राइवर से पंजा लड़ाने के लिए तैयार हो गया। उन दिनों मुझ पर पंजा लड़ाने का शौक छाया हुआ था और मैं अपने सभी साथियों से जीत जाया करता था।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ड्राइवर का पंजा वास्तव में तगड़ा था। वह मुझसे बल में कम नहीं कुछ ज्यादा ही था। हम दोनों पांच मिनट तक पंजा लड़ाते रहे। कभी लगता मेरी जीत होगी और कभी उसकी पर फिर आमने-सामने आ जाते। इतनी देर में मैंने यह अनुभव कर लिया कि ड्राइवर के हाथों में बल तो काफी है पर उसे पंजा लड़ाने की तरकीबें नहीं पता। बस, मैंने जैसे ही मौका पाया अपना पूरा बल लगा दिया और मैं जीत गया। उस समय हमारे सभी साथियों को बहुत खुशी हुई, मुझे भी। सबने डट कर दूध-मलाई उड़ाई। जवानी के उन मस्ती भरे दिनों की याद आज भी मन को तरोताजा कर जाती है।

ऐसी ही एक दूसरी घटना है। पुलिस का एक कर्मचारी पुरुषोत्तम था। उसे अपनी शारीरिक शक्ति पर बड़ा गर्व था। एक दिन मुझे अपनी बांहों में जकड़ लिया और लगा अपना जोर दिखाने। मैंने भी उसे जोर से बाजुओं में जकड़ना शुरू कर दिया। उसने कहा, "जरा और जोर लगाओ।" मैंने उसे थोड़ा-सा और जोर से दबाया। एक ही मिनट में बोल पड़ा, "छोड़ो! तुम्हारा बदन है या लोहा।"

"आप ही तो कह रहे थे कि जितनी ताकत है जरा दिखाओ।" मैंने उत्तर दिया।

अब पुरुषोत्तम साहब जब भी मिलते हैं, मुझसे शिकायत भरे लहजे में कहते हैं कि जाड़ों में उनकी पसलियों में दर्द जरूर होता है।

यह सब जवानी की बातें हैं। उन दिनों मैं भारी से भारी वजन एक झटके में उठा लेता था। रोज दो घंटे व्यायाम करता था, दूध-घी, फल, मेवे खूब खाता था।

चानन लाल पावा और मैं जब घर से निकलते थे तो युवक-युवतियां खिड़कियां-दरवाजे खोलकर हमें देखने लगते थे। सभी लोग मुझसे दोस्ती करने के इच्छुक रहा करते थे। घर से निकलते समय मां माथे पर काला टीका लगा देती थीं कि कहीं नजर न लग जाए।

अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मैंने काफी साधना की है। लेकिन इसमें मेरे उस्ताद पहलवान चुन्नीलाल भसीन की बहुत प्रेरणा रही है। वह अनुशासन प्रिय थे और अपने शार्गिदों से बहुत सख्त मेहनत करवाते थे। भारी बोझ कंधों पर लाद देते और कहते अब उठाओ इसे। बार-बार वजन उठवाते। दंड-बैठकें अलग। वह भी पांच-पांच सौ।

मेरे उस्ताद भसीन साहब ब्रह्मचर्य पर बहुत जोर देते थे। कहते थे महीने में एक बार से ज्यादा जो आदमी औरत से शारीरिक मिलन करता है वह रोग और मौत को न्योता देता है। पहलवान को अपने लंगोट का पक्का जरूर होना चाहिए। सभी पहलवान उनसे ही अपने लंगोट सिलवाते थे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मुझे प्रेरणा देने वाले दूसरे थे—श्री मुल्कराज सहगल। उन्हें उत्तरी भारत का लौह पुरुष कहा जाता था। वास्तव में उनका शरीर था भी लोहे-सा शक्तिशाली। वह दिल्ली में 'भारोत्तोलन' की अखिल भारतीय प्रतियोगिताएं करवाते थे और 'दिल्ली वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन' के प्रेसीडेंट थे।

उनके हाथ इतने कठोर थे कि जो भी उनसे हाथ मिलाता और अगर वे उसे थोड़ा भी दबा देते तो उसे सप्ताह भर दर्द होता रहता था। उनसे ही मुझे अपने हाथों को शक्तिशाली बनाने की प्रेरणा मिली। मैंने अपने व्यायाम और भारोत्तोलन का अभ्यास और बढ़ा दिया। पर यह सब बातें यौवन की हैं जिसके बारे में किसी शायर ने कहा है—

वह दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था
अब इत्र भी छिड़कते हैं तो खुशबू नहीं आती।

मैं जो कभी भारी से भारी वजन उठा लेता था आज थोड़ा-सा भी उठाने से हिचकता हूं।

लेकिन मैंने अब भी अपनी यौवनावस्था के उत्साह को नहीं छोड़ा है क्योंकि उत्साह सभी प्रकार की सफलताओं का मूल मंत्र है।

जिसे मौत भी नहीं झुका पाई

यह एक ऐसे व्यक्ति की सच्ची कहानी है जिसे पुत्र की मृत्यु भी अपने कर्तव्य पालन से नहीं रोक पाई। जी हां, यह सत्य कथा श्री मुल्कराज सहगल की ही है। एक बार जब वह दिल्ली वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन की प्रतियोगिताएं करवा रहे थे कि उन्हें अचानक अपने पुत्र की मृत्यु का शोक समाचार मिला। वह अपने एक विश्वसनीय साथी को चुपचाप बता कर घर गए और पुत्र की अंतिमयात्रा में शामिल होकर अपने सभी धर्म निभाए। पुत्र शोक से व्याकुल होने पर भी उनके हृदय में इतनी शक्ति थी और मनोबल इतना था कि पुत्र की चिता में अग्नि अर्पित करने के बाद दूसरे दिन प्रतियोगिता स्थान पर आकर अपना कार्यभार संभालने लगे।

लोगों को उनके पुत्र के असामयिक निधन का समाचार बाद में मिला, सभी के दिल दुख से भर उठे।

श्री मुल्कराज सहगल मोटरसाइकिलों का व्यापार करते थे। शुरुआत उन्होंने साइकिलों के व्यापार से की थी। परन्तु अपनी व्यापारिक सूझ-बूझ और परिश्रम से उन्नति करते-करते मोटरबाइक्स के विक्रेता बन गए। नित्य व्यायाम करने और भारोत्तोलन करने-करवाने में उनकी बहुत रुचि थी। उनका सपना था

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कि कोई भारतीय खिलाड़ी विश्व भारोत्तोलन (Weight lifting) प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करे। वह अपने साथियों और शिष्यों को अपने शब्दों से ही नहीं वरन् धन से भी सहायता दिया करते थे। जो खिलाड़ी अधिक भार उठा लेते उनके लिए दूध-घी आदि की व्यवस्था अपनी ओर से कर देते। अपने अच्छे व्यवहार और चरित्र के कारण वह बहुत लोकप्रिय बन गए थे।

जब उनका स्वर्गवास हुआ तो सैकड़ों लोग उनकी अंतिमयात्रा में शामिल हुए। मेरे जैसे उनके जो अनेक मित्र थे उन पर तो मानो दुख का पहाड़ टूट पड़ा। उनकी शोकसभा में जब मैं श्रद्धांजलि अर्पित करने को खड़ा हुआ तो आंखों से अश्रुधाराएं फूट पड़ीं। कंठ अवरुद्ध हो गया। बड़ी कठिनाई से बोल पाया। वास्तव में जैसे कहा जाता है कि जहां राम कथा होती है वहां हनुमानजी अवश्य उपस्थित होते हैं उसी तरह जहां भी भारोत्तोलन प्रतियोगिता होती है वहां श्री मुल्कराज सहगल का नाम अवश्य याद किया जाता है।

उनके एक पुत्र श्री सुरेश सहगल अपने पूज्य पिता के आदर्शों का पालन करते हुए आज ऑल इंडिया वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन के वाइस प्रेसीडेण्ट है। श्री मुल्कराज सहगल के नाम की शील्ड उन्होंने प्रारम्भ कराई थी जो अब भी चल रही है।

सच है कि जो लोग दूसरों की भलाई के लिए जीते हैं वे कभी नहीं मरते। श्री मुल्कराज सहगल एक ऐसे ही कामयाब महापुरुष थे। वे कहा करते थे—स्वामी विवेकानन्द की इन प्रेरणा-पूर्ण पंक्तियों को सदैव याद रखना—

''हे अमृत के अधिकारी गण!
तुम तो ईश्वर की सन्तान हो
अमर आनन्द के भागीदार हो
पवित्र और पूर्ण आत्मा हो
तुम इस मृर्त्य भूमि पर देवता हो!
इस मिथ्या भ्रम को
झटक कर दूर फेंक दो
कि तुम भेड़ हो।
तुम जरा-मरण रहित
नित्यानन्द आत्मा हो।''

स्वामी विवेकानन्द की इन उत्साह और ज्ञान पूर्ण पंक्तियों को दोहराते हुए पूर्ण आत्मविश्वास से मन ही मन रोज सात बार कहो—''स्वास्थ्य, सुख और सफलता पाना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं इन्हें प्राप्त करके ही रहूंगा।''

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

21

अनजाने में हुईं गलतियां

** गलतियां हर आदमी से होती हैं। जो कुछ करेगा वही गलती भी करेगा। बुद्धिमानी अपनी गलती को स्वीकार करने, उससे शिक्षा लेने और उसके लिए क्षमा मांग लेने में है।*

** क्षमा मांगने वाला तो महान होता ही है, क्षमा कर देने वाला उससे भी महान होता है। दुर्गा सप्तशती के अनुसार मां दुर्गा का एक नाम 'क्षमा' भी है।*

मैं परमात्मा को बहुत धन्यवाद देता हूं कि मुझे अपने घर वालों का ही नहीं वरन् बाहर वालों का भी बहुत प्रेम मिला। युवावस्था में अनेक युवक-युवतियां मेरे घनिष्ठ मित्र थे। यदि उन सबके नाम की सूची बनाई जाए तो कमल पुष्पों की स्वर्णलता बन सकती है।

मैंने जान-बूझकर कभी किसी के साथ धोखेबाजी या जबरदस्ती नहीं की। अनजाने में कोई हो गई हो तो कह नहीं सकता; अगर किसी स्त्री या पुरुष के साथ मुझसे अनजाने में कोई गलती हो भी गई तो मैंने माफी मांगने में खुशी अनुभव की। इसके बावजूद यदि किसी के साथ मैंने अन्याय या ज्यादती की हो तो मैं परमात्मा से क्षमा प्रार्थी हूं।

यह लिखते हुए मुझे युवावस्था के अपने एक मित्र की याद आती है। एक दिन घर लौटने पर मैंने देखा कि उस मित्र के माता-पिता, भाई आदि वहां विराजमान हैं और बड़े गुस्से से कह रहे हैं कि बग्गा ने उनके पुत्र 'दर्शन सिंह' का कंधा तोड़ दिया।

मुझे यह शिकायत सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मेरा बहुत अच्छा दोस्त था। उससे लड़ाई-झगड़े की बात का सवाल ही नहीं पैदा होता था।

मैं उन लोगों के साथ अपने मित्र दर्शन सिंह से मिलने पहुंचा। वास्तव में उसका कंधा सूजा हुआ था। वैसे वह बहुत पढ़ाकू था और हमेशा प्रथम आया

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

करता था। मैं उससे कहा करता कि—यार! कुछ देर खेल-कूद, कसरत वगैरह भी किया करो। इस तरह दिन-रात पढ़ाई-लिखाई में जुटे रहने से कमर टेढ़ी हो जाएगी या कोई बीमारी हो जाएगी।

वह मेरी बात को मुस्करा कर टाल जाता था। उस दिन मैंने धीमे से उसके कंधे पर एक-दो धौल जमा दी थी। मुझे क्या पता था कि उतनी हल्की-सी प्यार भरी धौलों से उसके कंधे की हड्डी में चोट आ जाएगी।

मैंने उससे हाथ जोड़कर माफी मांगी और निश्चय किया कि भविष्य में सावधान रहूंगा।

बात आई-गई हो गई। वह भारतीय सरकार की विदेश सेवा में एक उच्च अधिकारी बना। लेकिन जब भी मिलता मुस्करा कर शिकायत करता—"यार! अब भी मेरे कंधे में कभी-कभी दर्द हो उठता है और तुम्हारी याद आती है।"

ऑपरेशन सफल हो जाने के बाद मुझे इस तरह की पुरानी घटनाएं जब-तब याद आ जाती थीं। मैं अनुभव करता हूं कि **शारीरिक शक्ति भी कितनी अस्थायी शक्ति है। आदमी को कभी अपनी शक्ति पर गर्व नहीं करना चाहिए। वास्तव में परमात्मा और प्रेम की शक्ति ही स्थायी और सर्वोपरि है।**

बार-बार और निरन्तर साधना करते-करते मैंने अब अपने को ऐसा बना लिया है कि अगर कोई मुझसे कड़वी बात भी कह जाए तो मैं उसे टाल जाता हूं। कोशिश करता हूं कि क्रोध से जितना सम्भव हो दूर रहूं।

क्रोध ज्यादातर अहंकार या अधिक मोह के कारण ही उत्पन्न होता है। अपने को इन दुर्गुणों से दूर रखने के लिए मैं परमात्मा से नित्य प्रार्थना करता हूं। कई महीनों तक मैं एक कागज पर यह लिख लेता था—क्रोध करना मूर्खता है और मुझे इस मूर्खता से बचना है। इस कागज को अपनी जेब में डालकर रखता था।

क्रोध एक खतरनाक भावावेग है। इस पर मनोवैज्ञानिक खोज कर एक पुस्तक लिखने के लिए मैंने अपने **एक अभिन्न मित्र सुरेन्द्रनाथ सक्सेना** को प्रेरित किया। उन्होंने इस पर एक पुस्तक लिखी "गुस्सा छोड़ो-सुख से जिओ" जो पुस्तक महल दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई। यह बहुत लोकप्रिय पुस्तक सिद्ध हुई। अभी तक उसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

लेकिन इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ज्यादा थी और आजकल लोग छोटी पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हैं। इसलिए मैंने स्वयं एक पुस्तक इस विषय पर '**क्रोध कैसे छोड़ें**' लिखी। इसे लोगों ने खूब सराहा।

जब भी मेरे दिमाग में अहंकार या बड़प्पन का विचार आता है मुझे भारत

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

के महान और लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री के जीवन की एक घटना याद आ जाती है।

शास्त्री जी का कद छोटा था। एक बार किसी पत्रकार ने उनसे प्रश्न कर दिया—"आपसे मिलने के लिए दुनिया के बड़े-बड़े आदमी आते हैं। वे कद-काठी में आपसे लम्बे होते हैं। क्या आपको अपने छोटे कद के कारण उनके सामने हीनता का बोध नहीं होता।"

इस पर शास्त्री जी ने जो उत्तर दिया वह सफलता तथा सुख की कामना रखने वाले हर व्यक्ति को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा था—

नानक नन्हे भये रहो जैसे नन्हीं दूब।
बड़े-बड़े तो ढह गए दूब खूब की खूब॥

अर्थात् दूब (नन्हीं घास) की तरह नम्रता के भाव से जीवन में रहो। आंधी-तूफानों से बड़े-बड़े पेड़ (या लोग) उखड़ जाते हैं परन्तु दूब वैसी की वैसी ही बनी रहती है।

सच है कि विनम्रता महान पुरुषों का एक विशेष गुण होता है। इस गुण के बल पर वे बड़े-बड़े संकटों में भी संतुलित और शांत बने रहते हैं। फलस्वरूप अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

यद्यपि एक महान व्यक्ति और एक सफल व्यक्ति—दोनों में बड़ा अन्तर है। परन्तु उन दोनों के गुण लगभग समान होते हैं। जो व्यक्ति अपने गुणों का विकास और उपयोग निजी सफलता पाने के लिए करता है वह निरंतर प्रयास करते रहने से एक न एक दिन सफल अवश्य होता है। वहीं महान पुरुष अपने इन्हीं गुणों का उपयोग समाज और देश की उन्नति एवं विकास के लिए करता है। इसीलिए वह इतिहास में अमर हो जाता है।

उदाहरण के लिए महान व्यक्ति और सफल व्यक्ति दोनों अपने कार्यों को नयी रीत (तरीके) से और पूरी लगन से करते हैं, अपनी गलतियों को स्वीकार करने और उनसे सीखने के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं।

अतः जब आप विनम्रता तथा गलतियों को स्वीकार करने के गुणों को अपनाना शुरू कर देते हैं तो दूसरों की दृष्टि में अपने-आप ऊंचे बन जाते हैं। इसके फलस्वरूप लोकप्रियता और सफलता स्वतः मिल जाती है।

विनम्रता और क्षमाशीलता के इन्हीं गुणों का विकास करने के लिए मैं अपना जन्मदिन 'क्षमा दिवस' के रूप में मनाता हूं।

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

22

अंधेरे में एक किरण

जिस व्यक्ति के दिल में अपनी मंजिल पर पहुंचने की सच्ची चाह और उत्साह है वह अंधेरे में एक किरण से ही सही राह खोज लेता है। सच्ची चाहत और उत्साह के बिना सूरज की रोशनी में भी अपनी राह नहीं दिखती।

रात का घना अंधकार चारों ओर छाया था। कुटिया में बैठे गुरु अपने दो शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे। उस दिन का पाठ पूरा करने के बाद उन्होंने शिष्यों को अपने-अपने घर जाने का आदेश दिया।

एक शिष्य को जलता हुआ दीपक देकर उन्होंने कहा—"इसे साथ ले जाओ। तुम्हारे घर तक रोशनी देता रहेगा।" शिष्य ने उत्तर दिया, "गुरुजी अंधेरा तो अनन्त है। मीलों तक फैला है और इस दीपक की रोशनी तो बस एक कदम आगे तक का ही रास्ता दिखाती है। इसकी रोशनी से मैं घर तक कैसे पहुंच सकता हूं?" और वह वहीं कुटिया में बैठ गया।

तभी दूसरा शिष्य उठा, बोला, "गुरुदेव दीपक मुझे दीजिए। इसकी रोशनी में दिखते एक-एक कदम को आगे बढ़ाते हुए मैं अपने घर तक पहुंच जाऊंगा।"

गुरु ने दीपक दूसरे शिष्य के हाथों में थमा दिया।

यह एक सरल सी कहानी है जो अपने में सफलता का महान सूत्र छिपाए है। **लम्बी से लम्बी मंजिल का रास्ता एक-एक कदम आगे बढ़ा कर ही पूरा किया जाता है। हमारे जीवन में निराशा का चाहे कितना घना अंधेरा छाया हो और बुद्धि रूपी दीपक से केवल एक कदम आगे बढ़ने का रास्ता दिखाई देता हो तो हमें यह सोचकर नहीं बैठे रहना चाहिए कि उस एक कदम के बाद क्या होगा?** कारण, कि जब आप अपने सही मार्ग पर एक कदम आगे बढ़ेंगे तो दीपक की रोशनी भी आगे बढ़ेगी, अंधेरे में प्रकाश की वह किरण भी आगे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बढ़ेगी और फिर आपको एक कदम और आगे की राह दिखने लगेगी।

श्री के.एल. बग्गा ने सफलता का यह पाठ अपने जीवन की पाठशाला में स्वयं प्रयत्न करके सीखा। उनके जीवन में नई प्रेरणा और उत्साह देने वाले जो महान व्यक्ति आए उनमें से एक हैं मैगसेसे पुरस्कार विजेता श्रीमती किरण बेदी। उनका जीवन अंधेरे में एक किरण जैसा ही रहा। वह जहां गईं अपनी किरण से नया पथ प्रकाशित करती रहीं, एक ऐसा पथ जो सबके लिए लाभप्रद और कल्याणकारी रहा है।

श्रीमती किरण बेदी जिस समय पीतमपुरा क्षेत्र की डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस थीं, उन्होंने घातक नशों के भयानक चंगुल में फंसे लोगों के लिए, कई थानों में सुधार केन्द्र खोले थे।

शराब, स्मैक, हेरोइन, अफीम आदि के नशों के क्रूर चंगुल में फंस जाने के बाद व्यक्ति का अपना ही जीवन नष्ट नहीं होता वरन् वह पूरे परिवार को बरबाद कर देता है। यही नहीं वरन् इसका अत्यंत हानिकारक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। इन नशों का गुलाम बन जाने वाला व्यक्ति नशा खरीदने के लिए चोरी-डाका तो छोड़िए अपनी पत्नी तथा बच्चों तक को बेच देता है। अधिकांश केसेज में इन नशों के कंटीले जाल में फंस जाने के बाद व्यक्ति धीरे-धीरे मौत के मुंह में पहुंच जाता है। कुछ लोग बहुत जल्दी मर जाते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जो नशों के जहरीले जाल को काट कर बाहर आ जाते हैं पर उन्हें डॉक्टरों, मनोवैज्ञानिकों और समाजसेवकों की सहायता की आवश्यकता होती है। श्रीमती किरण बेदी ने इस दिशा में जो सराहनीय कार्य किया उससे अनेक महत्वपूर्ण लोग प्रभावित हुए। श्री के.एल. बग्गा भी उनमें से एक हैं। वह स्वयं उन दिनों नशाबन्दी समिति दिल्ली के सेक्रेटरी थे।

श्रीमती किरण बेदी थानों में जनता के प्रमुख लोगों और कार्यकर्ताओं की मीटिंग लिया करती थीं। इन मीटिंगों में यह विचार किया जाता था कि पुलिस किस प्रकार जनता की अपराधों से अधिक से अधिक रक्षा कर सकती है और नशेबाजी को किस प्रकार रोका जा सकता है। इस कार्य में जनता का सहयोग कैसे मिल सकता है आदि।

लगभग सन् 1982 में श्री बग्गा का ऐसी ही एक मीटिंग में श्रीमती किरण बेदी से परिचय हुआ। दोनों का लक्ष्य एक था। अतः धीरे-धीरे घनिष्ठता बढ़ने लगी। उन दिनों श्री बग्गा सिविल डिफेंस में भी थे। उस सिलसिले में भी मिलना-जुलना हो जाता था।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

श्रीमती किरण बेदी अपनी मां की बहुत सेवा करती थीं और उन्हें अपना प्रेरणा स्रोत मानती थीं। अपनी मां को वह अपने साथ रखती थीं। जब भी श्री बग्गा उनके घर गए श्रीमती बेदी को अपनी मां की सेवा करते हुए पाया। इससे वह बहुत प्रभावित हुए क्योंकि उनका मानना है कि **उस स्त्री-पुरुष का जीवन सार्थक है जो सच्चे दिल से अपने मां-बाप और बुजुर्गों की सेवा करता है। उन्होंने जीवन में आश्चर्य की एक बात यह भी देखी कि मां-बाप की सेवा करने वाले अधिकांश लोग अपने जीवन में जरूर कामयाबी और शोहरत हासिल करते हैं।** स्वयं श्रीमती किरण बेदी इस तथ्य की सजीव उदाहरण हैं। उनकी माता जी के विचार और आदर्श बहुत ऊंचे होते हुए भी यथार्थवादी थे। श्री बग्गा जब भी उनके घर जाते मां के साथ जरूर विचार-विमर्श करते। उनके विचारों ने भी श्री बग्गा के जीवन पर प्रभाव डाला। श्रीमती बेदी जब दिल्ली ट्रैफिक विभाग में गईं उन्होंने वहां जनता का हित करने वाले बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए। जो लोग अपनी कार या गाड़ी मनमर्जी से सड़क के किनारे खड़ी कर ट्रैफिक जाम कर देते या गलत जगह पार्किंग करते उनकी गाड़ी श्रीमती बेदी क्रेन से उठवा कर पुलिस थाने पहुंचवा देती थीं। अपनी ड्यूटी निभाते समय वे इस बात का कोई लिहाज नहीं करतीं कि कानून तोड़ने वाला नेता है या अभिनेता, मंत्री है या संतरी। वास्तव में एक आदर्श पुलिस अधिकारी के अधिकांश गुण उनमें हैं। **वे जहां एक ओर विनम्र और व्यवहारकुशल हैं वहीं उनमें कानून का पालन करने तथा करवाने के लिए पर्वत सी दृढ़ता भी है।**

जब वह ट्रैफिक विभाग में थीं तो अपने साथ क्रेन रखती थीं। इसीलिए उन्हें बहुत से लोग उन दिनों किरण बेदी की बजाए 'क्रेन बेदी' कहा करते थे। शायद यह किसी कार्टूनिस्ट द्वारा गढ़ा गया विशेषण था।

श्री बग्गा ने नशाबंदी समिति के कार्यों में सक्रिय सहयोग देकर सैकड़ों युवकों को नशे के चंगुल से बचाने के प्रयत्न किए और इसमें श्रीमती किरण बेदी का भी सहयोग लिया। इसके साथ ही उन्होंने पुलिस द्वारा चलाए जाने वाले नशों से मुक्ति दिलाने वाले केन्द्रों को भी यथायोग्य अपना सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने नशों से छुटकारा पाने के उपायों पर प्रकाश डालने वाली एक पुस्तिका 'अंधेरे में एक किरण' भी प्रकाशित करवा कर नशा मुक्ति केन्द्रों में निःशुल्क वितरित करवाई। इसका पाठकों द्वारा बहुत स्वागत किया गया और अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए। इस पुस्तक की भूमिका श्रीमती किरण बेदी ने स्वयं लिखी। जिस समय श्रीमती बेदी तिहाड़ जेल की अध्यक्ष रहीं और उन्होंने वहां के कैदियों के जीवन में सुधार लाने के अनेक प्रभावपूर्ण उपाय अपनाए, श्री बग्गा ने विशेष रूप से कैदियों के लिए एक पुस्तिका

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

'**अंधकार से प्रकाश की ओर**' प्रकाशित कर नि:शुल्क वितरित करवाई। इस पुस्तिका को कैदियों में लोकप्रियता मिली। इन दोनों पुस्तकों के लेखन में हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक सुरेन्द्रनाथ सक्सेना ने अपना पूरा योगदान दिया।

श्रीमती किरण बेदी जिस क्षेत्र में भी गईं चाहे वह जेल हो या अंदमान निकोबार, ट्रैफिक हो या प्रशासन उन्होंने पूरी ईमानदारी और साहस से जनता की सेवा की। उन्होंने दीन-दुखी और समाज से ठुकराए लोगों की सहायता-सेवा की। उनकी इन सेवाओं से प्रभावित होकर ही उन्हें विश्वविख्यात 'मैगसेसे पुरस्कार' प्रदान किया गया। उनकी प्रशंसा में श्री के.एल. बग्गा ने किसी शायर का यह शेर कहा था—

जहां भी रहेगा रोशनी देगा
दीए का अपना कोई मकां नहीं होता

किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए हम श्रीमती किरण बेदी के जीवन से प्रेरणा ले सकते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि **उन्हें जो भी कार्य-क्षेत्र दिया गया उसमें उन्होंने पूरी ईमानदारी, लगन, उत्साह और साहस से कार्य किया**। अपने मार्ग में आने वाली कठिनाइयों, विरोधों और निंदा की उन्होंने कभी परवाह नहीं की। **अपनी प्रशंसा और पुरस्कारों का श्रेय उन्होंने अपने सहकर्मियों तथा सहयोगियों को दिया। यदि किसी ने उनकी उचित आलोचना की तो अपनी कार्यप्रणाली में सुधार लाने में उन्होंने कोई देरी नहीं की। जहां तक सम्भव हुआ वह सबको साथ लेकर चलीं। आप भी इन गुणों को अपनाकर जीवन में सफलता पा सकते हैं।**

एक बार श्री के.एल. बग्गा ने पुलिस विभाग द्वारा चलाए जाने वाले 'नशामुक्त केन्द्र' की मीटिंग में यहां तक कह दिया कि "अगर पुलिस विभाग और उसके कर्मचारी चाहें तो स्मैक, हेरोइन और अफीम जैसे गैरकानूनी नशों का उपयोग कुछ ही महीनों में खत्म हो सकता है।"

उनकी इस कटु आलोचना को श्रीमती किरण बेदी ने सही रूप में ग्रहण करते हुए अपने पुलिस कर्मियों को और अधिक उत्साह तथा ईमानदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित किया। *इस घटना से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सफलता की चाह रखने वाला व्यक्ति सही आलोचना को सहर्ष स्वीकार कर उसके अनुरूप अपने में सुधार करने का प्रयत्न करता है।*

श्रीमती किरण बेदी ने अपने महान कार्यों से आज यह वातावरण बना दिया है कि **हर मां परमात्मा से यह प्रार्थना करती है कि मेरी बेटी किरण बेदी-सी महान बने।**

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

23

मातृदेवो भव

—जो व्यक्ति अपने माता-पिता की सेवा नहीं करता तथा उनके प्रति प्रेम और कृतज्ञता का भाव नहीं रखता वह जीवन में सच्चा सुख-सफलता नहीं पा सकता क्योंकि प्रेम और कृतज्ञता के भाव के बिना सब अर्थहीन है।

"इस धरती पर अगर कहीं परमात्मा का वास है तो वह सबसे पहले 'मां' के हृदय में है फिर 'पिता' और 'गुरु' के हृदय में।" इसीलिए संस्कृत में कहा गया है—"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव।"

जिस महिला या पुरुष को माता, पिता और गुरु के आशीर्वाद प्राप्त होते रहते हैं वह जीवन में सदैव स्वस्थ, सुखी तथा सफल होता है। इसका कारण यह है कि माता-पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद पाने से व्यक्ति में आत्मविश्वास का विकास होता है। उसमें अपने से बड़ों के प्रति आदर का भाव रहता है। उसके साथ जब कोई दूसरा व्यक्ति उपकार करता है या उसे किसी प्रकार की सहायता करता है तो वह उसके प्रति धन्यवाद व्यक्त करना आवश्यक समझता है। उसके प्रति कृतज्ञता का भाव अनुभव कर समय आने पर उसकी सेवा-सहायता करता है। यह समस्त बातें उसे जीवन में कामयाबी पाने में मदद करती हैं।

"एक स्वस्थ, सुंदर शरीर और मस्तिष्क देने के लिए मैं अपने माता-पिता का आभारी हूं। मुझे जीवन में जो कुछ भी सफलता और यश मिला है उन सबका श्रेय मेरे पूज्य माता-पिता को ही जाता है।" ये विचार हैं श्री के.एल. बग्गा के जो उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में किसी पत्रकार को बताए थे।

यह तो उनके विचारों की बात रही अब उनके वास्तविक जीवन की एक झांकी देखिए—

युवावस्था में श्री बग्गा का यह नियम था कि वे रोज सुबह-शाम मां के पैर दबाया करते थे। एक शाम जब वह अपनी मां के पैर दबा रहे थे तो कुछ

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रिश्तेदार और बाहर से आने वाले व्यक्तियों पर इस बात का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। लड़के की मातृभक्ति देखकर एक सज्जन ने अपनी सुंदर बेटी की शादी युवा श्री के.एल. बग्गा से कर दी जबकि वह उस समय बग्गा परिवार की तुलना में कहीं अधिक धनवान तथा समाज में प्रतिष्ठित थे।

कथानायक श्री बग्गा की मां स्वभाव से ही बहुत कर्मठ और धार्मिक आचार-विचार वाली महिला थीं। आलस करना उन्हें जरा भी पसंद नहीं था। नौकर-नौकरानियों के होते हुए भी घर के अनेक कार्य स्वयं करती थीं। घर की नौकरानियों के कार्यों का भी निरीक्षण करती थीं और उनके सुख-दुख में सदा सहायता देने के लिए तैयार रहती थीं।

नायक ने मां से परमात्मा पर दृढ़ विश्वास, कर्मठता, कर्मशीलता और अपने कर्मचारियों के प्रति अपनापन रखने का भाव पूरी कुशलता के साथ सीखा। इसका परिणाम यह हुआ कि आज उनकी संस्था के कर्मचारी इस प्रकार कार्य करते हैं मानो वह उनकी अपनी हो। अत: जो भी संस्थाएं उन्होंने बनाईं, लगभग सभी कामयाब रहीं।

यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि आप अपने कर्मचारियों, सहकर्मियों, परिवार के सदस्यों तथा मित्रों से इस प्रकार प्रेम तथा प्रेरणा भरा व्यवहार करें कि वे सभी आपके लक्ष्य को पाने में स्वेच्छा से पूरा सहयोग दें।

इसके लिए आपमें निम्नलिखित विशेषताएं होनी आवश्यक हैं—

1. दूसरों के गुणों और अवगुणों को पहचानना।

2. उन्हें उन गुणों का उपयोग अपनी संस्था के हित में करने के लिए उत्साहित करना।

3. यह जानना कि वे किस प्रकार सर्वोत्तम कार्यकुशलता से कार्य कर सकते हैं।

4. हर प्रकार की परिस्थिति में तथा हर किस्म के व्यक्ति से व्यवहार करते हुए अपने को संतुलित और शांत रखना। आवश्यकता पड़ने पर यहां तक कि अगर आप क्रोध भी करें तो अपने को अंदर से शांत तथा संतुलित रखें।

5. व्यक्ति या व्यक्तियों से व्यवहार करते समय यह ध्यान रखें कि उनकी **मानसिकता** क्या है, **समय, स्थान** और **परिस्थितियां** कैसी हैं ?

अगर आपसी संबंधों में किसी विषय पर बात बनने की बजाय बिगड़ रही हो तो बेहतर है कि उसे कुछ समय या दिनों के लिए टाल जाएं। कोई समस्या आने पर आप अपने सहकर्मियों, सहयोगियों और यहां तक कि अपने छोटे से छोटे कर्मचारी से भी सुझाव मांगने में संकोच नहीं करें।

किसी महत्वपूर्ण या बड़ी मीटिंग को बुलाने से पहले यह अच्छा रहता है

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कि अनुभवी और महत्वपूर्ण लोगों से पहले ही विचार-विमर्श कर लिया जाए ताकि मीटिंग में वे सर्वसम्मति बनाने में आपको सहयोग दें।

इन सब गुणों को कामयाबी पाने के लिए सीखना आवश्यक है क्योंकि आप कोई भी बड़ी कामयाबी दूसरों के सहयोग बिना प्राप्त नहीं कर सकते। आपको आश्चर्य होगा कि ये सब गुण मैंने अपने पूज्य पिता जी से सीखे।

वह कहा करते थे कि आदमी की सच्ची परीक्षा उस वक्त होती है जब वह किसी बड़ी नाकामयाबी या मुसीबत का सामना करता है और याद रखना अगर आदमी धीरज रखकर पूरी बुद्धि तथा परिश्रम से काम करे तो वह बड़ी नाकामयाबी भी बड़ी कामयाबी में बदल जाती है।

सच बात यह है कि कामयाबी और नाकामयाबी सब मन का खेल है। जब तक तुम्हारा मन हार नहीं मानता, तुम्हें कोई नहीं हरा सकता।

जरा विचारिए! एक साठ वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति जो अपने गांव में एक प्रतिष्ठित साहूकार के रूप में जाना जाता है जिसके नाम की ख्याति आस-पास के गांवों तक थी। उसकी अपनी बड़ी-सी हवेली, खेत-खलिहान, घोड़े, गाय आदि पशुधन था, जिसका हजारों रुपया कर्ज के रूप में दूसरों के पास पड़ा था, उसे एक रात सब कुछ छोड़कर दिल्ली जैसे महानगर में भारत विभाजन की वजह से आना पड़ता है। **लेकिन इतना बड़ा संकट आ जाने के बाद भी वह निराश या दुखी नहीं हुए।**

यहां आकर उन्होंने हम सभी का हौसला बढ़ाया, परमात्मा को धन्यवाद दिया कि सारा परिवार सकुशल भारत आ गया। उन्होंने परिस्थितियों का विश्लेषण किया और कुछ गायें-भैंसें खरीदकर दूध बेचने का व्यापार पूरे उत्साह तथा आत्मविश्वास से शुरू किया। उन्होंने अपने नए व्यापार में भी **ईमानदारी, मेहनत और लगन** के कारण कामयाबी पाई।

आज मैंने और मेरे भाइयों ने जो धन, यश और समाज में प्रतिष्ठा पाई है उसके मूल में मेरे पूजनीय माता-पिता की प्रेरणाशक्ति तथा कठोर शिक्षा एवं अनुशासन ही है।

मेरे स्वर्गीय पिता श्री राजमल एक प्रसिद्ध शायर की पंक्तियां हमें सुनाया करते थे—

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है इंसान का,
जिस वक्त जीना गैर मुमकिन सा ले
उस वक्त जीना फर्ज है इंसान का।
लाजिम लहर से है तब खेलना
जब हो समुद्र पर चढ़ा नशा तूफान का।

□□

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

24

भाषण कला का जादू

—प्रभावपूर्ण बातचीत करना और भाषण देना ऐसे जादू हैं जो रोते को हंसा सकते हैं तथा हंसते को रुला सकते हैं। जिसने ये जादू सीख लिए उसे कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

—डॉक्टर एन.के. शर्मा

"जब मैं किसी डॉक्टर को आते देखता हूं तो मेरा मन उसे नमस्ते करने का नहीं होता... ।"

अस्पताल की एक मीटिंग में मेरे मित्र श्री के.एल. बग्गा अपने एक भाषण में कह रहे थे। मैं उनके इस वाक्य को सुनकर अचरज में पड़ गया। पता नहीं क्या कहना चाह रहे हैं। इतने में ही उन्होंने एक क्षण रुककर बड़ी श्रद्धा से कहा, "मेरा दिल करता है कि उसके पांव को छू लूं। डॉक्टर तो धरती पर परमात्मा का जीवित प्रतीक है, भगवान का दूत है वह रोगियों को नया जीवन देता है।"

उनकी भाषण शैली इतनी हृदयस्पर्शी होती है कि लगता है बस सुनते जाओ। अपने सरल शब्दों में वह ऐसा भाव भर देते हैं कि सुनने वाले उसके जादू में बंधते चले जाते हैं।

इसी प्रकार डॉ. ए.बी. घोष के एक काव्य संग्रह के विमोचन समारोह में वह बोले, "डॉक्टर साहब का नाम ए.बी. नहीं होना चाहिए। उनका नाम, सही नाम होना चाहिए। डॉक्टर ए. जेड. क्योंकि उन्होंने सभी मुख्य विद्याओं, कलाओं में महारत हासिल कर ली है। वे एक कुशल सर्जन हैं, अच्छे चित्रकार हैं, कवि व लेखक हैं। वे एक कुशल मास्टर भी हैं और गरीब बच्चों के लिए एक निःशुल्क स्कूल चलाते हैं। उन्होंने एक छोटा-सा मंदिर भी बना रखा है। अब आप ही बताइए ऐसे डॉक्टर का सही नाम ए.जेड. होना चाहिए न कि ए.बी.... ।" पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

"वास्तव में आज हमारे देश में जब अधिकांश लोग जातिवाद और अधिक से अधिक धन कमाने की अंधी दौड़ में देश प्रेम, मानव सेवा आदि के महान गुणों को भूल चुके हैं, डॉक्टर साहब प्रेरणा के एक प्रकाश स्तम्भ की तरह हैं जो चुपचाप अपने सृजनात्मक कार्यों में लगे हैं। डॉक्टर साहब जैसे महान व्यक्ति ही हमारे देश की अनमोल शक्ति हैं।"

उनकी भाषण शक्ति से प्रभावित होकर एक दिन मैंने पूछा कि यह कला उन्होंने कहां से सीखी?

बोले, "मुझे भी नहीं पता था कि मुझमें यह प्रतिभा है। पहली बार जब मैं श्री मुल्कराज सहगल की श्रद्धांजलि सभा में बोल रहा था तो भावावेश के मारे मेरा गला रुंध गया और आंखों से अश्रु टपक पडे। मैं उनके प्रति बहुत आदर तथा प्रेम-भाव रखता था। उन्होंने मुझे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी। मेरा बहुत ख्याल रखते थे। **मेरी भावनाएं और अभिव्यक्ति सच्ची थीं।** मेरी भाव भरी वाणी को सुनकर उस समय मॉडल टाउन स्थित आर्य समाज मंदिर में आए स्त्री-पुरुष और बच्चों की आंखें आंसुओं से नम हो उठीं।"

सभा के बाद लोगों ने मेरे भाषण की बहुत प्रशंसा की। उसके बाद मैं जन्मोत्सव, विवाहोत्सव, सभाओं आदि में आमंत्रित किया जाने लगा। इससे मेरी भाषण देने की कला का विकास हुआ। इस संबंध में मुझे **श्री लक्ष्मीनारायण भारद्वाज** से बड़ी सहायता तथा मार्गदर्शन मिला। वह हिन्दी के विद्वान और बहुत अच्छे वक्ता थे। यद्यपि वह मुझसे उम्र में कम थे पर मैं उन्हें हृदय से गुरु की तरह मानता था। मैं समय मिलने पर उनके साथ एकांत स्थानों जैसे—पहाड़ी, बाग आदि में जाता। वह मुझे भाषण कला के गुर समझाते, वहां मुझसे कहते जोर-जोर से ऐसे बोलो मानो किसी सभा के सामने खड़े होकर बोल रहे हो।

मेरे भाषण को सुनने के बाद श्री लक्ष्मीनारायण मुझे उसकी अच्छाइयां, खराबियां, गलतियां आदि के बारे में बताते। वह स्वयं बहुत प्रभावशाली शैली में भाषण देकर मुझे सिखाते थे।

श्री लक्ष्मीनारायण भारद्वाज हिन्दी साहित्य सम्मेलन के एक सक्रिय पदाधिकारी थे और प्रतिवर्ष कवि सम्मेलन आयोजित करते थे। उसकी संगत में रहने से मुझमें हिन्दी साहित्य तथा साहित्यकारों के प्रति प्रेम भाव का विकास हुआ।

उन्होंने मुझे बताया कि जीवन के अधिकांश क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए वार्तालाप करने और भाषण देने की कला में कुशल होना अत्यन्त आवश्यक है।

आज का युग 'सेल्स' का है। **आप अपनी वस्तु, गुण, विचार आदि बेचने में जितने कुशल होंगे उतने ही सफल सिद्ध होंगे। इसके लिए आपको अपने वार्तालाप द्वारा दूसरों को अपने मत या विचारों से संतुष्ट करने की कला आना आवश्यक है।**

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इसके साथ ही अगर आप भाषण देने की कला में निपुण हो जाएं तो अपनी योग्यता, उपयोगिता और प्रभावशक्ति बढ़ा सकते हैं। प्रभावपूर्ण बातचीत करने और भाषण देने की कला में निपुण व्यक्ति अपने पारिवारिक जीवन में ही नहीं वरन् सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में सरलता से सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

1. सर्वप्रथम यह समझना और अनुभव करना आवश्यक है कि प्रभावपूर्ण वार्तालाप तथा भाषण देने की कला में निपुण होकर आप अपने जीवन में महान सफलता, सुख एवं लोकप्रियता प्राप्त कर सकते हैं।

किसी भी गुण के महत्व को अनुभव करने से ही उसे सीखने की प्रेरणा शक्ति मिलती है। इस संबंध में निम्नलिखित पंक्तियां आपको इस दिशा में प्रेरित कर सकती हैं—

* **सत्यम् ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्**
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

(अर्थ—सच बोलो, मधुर बोलो, परंतु अप्रिय सत्य अर्थात् कड़वा नहीं बोलो।)

* *पहले तोल पीछे बोल। मीठे बोल हैं अनमोल*

* *केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषम्*
हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न सुमनं
नालंकृता मयूरध्वजा
वाणे का समलंकृतं पुरुषं या संस्कृत:
धारयते क्षीयन्ते खलुभूषणानि सततं
वाक् भूषणं भूषणम्।

इसका सार यही है कि वाणी का आभूषण ही सबसे मूल्यवान आभूषण है। पुरुष के लिए इसके समान अनमोल आभूषण (जेवर) कोई नहीं।

किसी लोककवि ने इस सत्य को अपनी सरल वाणी में इस प्रकार कहा है, '**बातन हाथी पाइये, बातन हाथी पांव।**' अर्थात् मीठी वाणी बोलने वाला हाथी (बहुत धन तथा सम्मान) पाता है और कटु या गलत ढंग से बात करने वाला हाथी का पांव अर्थात् मृत्युदण्ड पाता है।

ध्यान रखिए पिस्तौल से निकली गोली और मुंह से निकली बात कभी वापस नहीं आती।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी की इस कहावत को भी नहीं भूलना चाहिए कि "Speech is silver, silence is gold" हिन्दी में इसका अनुवाद हो सकता है **सही बोलने वाले की चांदी होती है और सही समय पर मौन रहने वाला स्वर्ण**

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राशि का स्वामी बनता है। अतः दूसरों की निन्दा या आलोचना मत करिए।

2. बोलने से पहले एक क्षण विचार कीजिए कि **आप क्या कहने जा रहे हैं?** उसकी दूसरों पर कैसी प्रतिक्रिया होगी? **कभी कड़वा सच मत बोलिए।**

भाषण देने से पूर्व अपने विषय पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें पढ़कर तथा उसके विशेषज्ञों से मिलकर अपना भाषण भली प्रकार लिख डालिए। शीशे के सामने खड़े होकर अभ्यास करिए। अपने भाषण को टेप करके उसे सुनिए। जहां कहीं भी सुधार की आवश्यकता हो उसे सुधार लीजिए।

3. **पूरे आत्मविश्वास से बोलिए।** सभा में बैठे लोगों की विद्वत्ता से भयभीत मत होइए। वे सब आपकी तरह ही साधारण व्यक्ति हैं।

4. बोलते समय सबकी ओर देखिए। उनकी प्रतिक्रियाएं जानिए पर किसी की नजर से नजर मत मिलाइए। मिल जाए तो फौरन हटा लीजिए क्योंकि इससे ध्यान टूटने से आपके बोलने के प्रवाह में बाधा पड़ सकती है।

5. अपनी बातों को **नई शैली में दिल छू लेने वाले तरीकों से कहिए।** सरल भाषा का उपयोग कीजिए।

6. बातचीत और भाषण दोनों में ही छोटी-छोटी कविताएं, दोहे, शेर आदि का उपयोग करने से उनमें नया प्रभाव आ जाता है। अतः उपयोगी काव्य पंक्तियों और शेरों को याद रखिए।

7. जरूरत से ज्यादा मत बोलिए। **मजा तब आता है जब** आपका भाषण समाप्त हो जाने के बाद भी लोग आपकी मधुर वाणी सुनने के लिए प्यासे रह जाते हैं।

8. अपनी आवाज को अपनी बात या कथन में **छिपे भाव के अनुसार** ही ऊपर उठाइए, धीमे बोलिए या केवल कुछ क्षणों के लिए चुप रह जाइए और फिर बोलिए।

9. सभा में उपस्थित **श्रोताओं की शिक्षा, संस्कृति और उनकी मानसिकता** का सदा ध्यान रखिए। उनकी भावनाओं को चोट पहुंचाने वाला कोई शब्द मत बोलिए। यदि ऐसी कोई बात गलती से निकल जाए तो तत्काल क्षमा मांग लीजिए।

10. भाषण देने से पूर्व आधे मिनट के लिए **अपने इष्ट देव-देवी या परमात्मा** का स्मरण कर उनसे वाक्‌शक्ति देने की प्रार्थना कीजिए।

11. भाषण की गति कभी तीव्र मत करिए। धीमे-धीमे **आराम** से बोलिए।

12. भाषण देने से पहले **माइक** को भली प्रकार चेक कर लीजिए।

13. भाषण के दौरान अगर कोई शब्द पंजाबी, हरियाणवी या अंग्रेजी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आदि का जिह्वा पर आ जाए तो उसे रोकिए मत, उसका **अनुवाद करने के चक्कर** में भी मत पड़िए।

14. **पूरे हृदय से** बोलिए। सुनने वालों की भावनाओं को छूने का प्रयत्न कीजिए दिमाग का नहीं।

15. यदि आप पहली बार किसी सभा में भाषण दे रहे हैं और किसी प्रकार का संकोच, भय या घबराहट अनुभव कर रहे हैं तो उसे छिपाने के बजाय श्रोताओं से स्पष्ट कह दीजिए कि मैं इस समय कुछ घबराहट/भय/ संकोच अनुभव कर रहा हूं। आशा है आप लोग मेरी गलतियों पर ध्यान नहीं देंगे। मुझे पूरा सहयोग देंगे। मैं इसके लिए आपका बहुत आभारी हूं और रहूंगा। ऐसा कहते ही आपमें एक नया आत्मविश्वास आ जाएगा और सुनने वाले भी आपको पूरा सहयोग देंगे।

16. जब कभी भाषण देने जाएं तो **समय तथा अवसर** के अनुसार प्रभावपूर्ण वेश-भूषा धारण करें।

17. आप **किस अवसर** पर भाषण दे रहे हैं, **किस समय** पर भाषण दे रहे हैं और **किस क्रम** पर बोल रहे हैं अर्थात् पहले या दूसरे अथवा तीसरे नंबर के वक्ता हैं, इन तथ्यों का ध्यान रखें। जो बातें आपसे पहले के वक्ता कह गए हैं उन्हें पूरा नहीं दोहराएं वरन् एक पंक्ति में कह दें कि मुझसे पूर्व इस विषय पर वक्ताओं ने जो कुछ कहा है उससे मैं सहमत हूं।

18. **आवश्यकता से अधिक समय तक नहीं बोलें।** आजकल सभी लोगों का जीवन व्यस्त रहता है और उनके पास बहुत कम समय होता है। अतः जितना भी बोलिए उसका **समय, स्थान और अवसर** के अनुकूल तथा **रोचक** होना आवश्यक है।

19. **बोले जाने वाले विषय को तीन-चार भागों में बांट लीजिए।** उदाहरण के लिए अगर मुझे किसी दुकान के उद्‌घाटन अवसर पर आमंत्रित किया जाता है तो मैं दो मिनट उस व्यक्ति तथा परिवार के बारे में बोलूंगा जिन्होंने मुझे आमंत्रित किया है। फिर दो मिनट उस प्रकार की दुकान तथा दुकानदारी की उपयोगिता तथा महत्व के बारे में। इसके बाद बताऊंगा कि किसी दुकान की सफलता के लिए धन, अनुभव, परिश्रम, व्यवहारकुशलता के साथ-साथ ईमानदारी की भी आवश्यकता होती है। अंत में दुकान की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दूंगा।

उद्‌घाटन होने के बाद मैं कोशिश करता हूं कि उस दुकान से कुछ चीजें रुपये देकर खरीद कर ले जाऊं।

श्री बग्गा को अपनी भाषण कला के विकास में जिन दूसरे सज्जन ने प्रेरणा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दी, वे हैं—श्री बलवीर सिंह भाटिया। वह 'फूड कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया' में मैनेजर के पद पर रह चुके हैं। उन्होंने अपना पदभार इतनी ईमानदारी और कुशलता से निभाया था कि सभी उच्च सरकारी अधिकारी तथा संबंधित मंत्री तक उनका सम्मान करते थे।

इसके अतिरिक्त वह 'बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन' और वेट लिफ्टिंग एसोसिएशन के भी जनरल सेक्रेटरी थे। भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उन्होंने अपना रिकॉर्ड बनाया था। अपनी मधुर वाणी और व्यवहारकुशलता के कारण वह बहुत लोकप्रिय बन गए थे। अनुशासन के इतने पक्के थे कि लड़कियों की खेल-टीम का मैनेजर प्राय: उनको ही बनाया जाता था। उन्होंने अपने चरित्र पर कभी कोई कलंक नहीं लगने दिया। उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अपनी बातचीत तथा भाषण कला से वे सभी लोगों को तत्काल प्रभावित कर लेते थे। सबसे प्रशंसनीय गुण उनमें यह था कि जैसे भी सभा, महफिल या गोष्ठी में जाते अपने को वैसा ही बना लेते। मदिरालय हो या मंदिर श्री बलवीर सिंह भाटिया हर महफिल में 'हीरो' बनने की कला में माहिर थे। वह मदिरापान कम करते थे पर शराब पर शेरो-शायरी ऐसे झूम के सुनाते कि लोग उनके दीवाने बन जाते। वह कहा करते थे कि बोलते समय शब्दों के चक्कर में मत पड़ो। मन में शुभ भाव रखो और जो शब्द दिल से निकले वही बोल दो। उदाहरण के लिए हिन्दी में बोलते वक्त अगर कोई अंग्रेजी या पंजाबी का शब्द आता है तो उसे बोलने में हिचको नहीं।

श्री के. एल. बग्गा को घर-परिवार एवं व्यापार में ही नहीं वरन् भाषण देने की कला के विकास में भी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा बग्गा ने सही सलाह देकर बहुत सहयोग दिया। उनके भाषण में कोई कमी या गलती रह जाती तो वह उसे विनम्रतापूर्वक बता देतीं। श्रोताओं के बीच बैठे रहने के कारण उनके द्वारा की गई टिप्पणियों की जानकारी भी देतीं। इनसे उन्हें अपनी भाषण कला में निरंतर सुधार करते जाने की प्रेरणा मिलती गई।

उनके पुत्र श्री राजन बग्गा और श्री बृजभूषण बग्गा भी उन्हें श्रोताओं के विचारों से परिचित कराते रहते। भाषण अच्छा तथा हृदयस्पर्शी होने पर सभी प्रशंसा करते। इससे उन्हें बहुत खुशी मिलती। इस प्रकार उनकी भाषण कला बराबर विकसित होती गई। इसमें उनके मित्र स्व. त्रिलोकचन्द जिन्दानी ने अपनी प्रेम तथा विनम्रता भरी समालोचनाओं द्वारा भी बड़ा योगदान किया।

आप भी अपनी वार्तालाप तथा भाषण कलाओं का विकास कर अपने मनोवांछित क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

□□

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

25

विजय पाने का रहस्य

—यह कितनी अद्भुत और रहस्यमय बात है कि अधिकांश ऐसे लोग जो विश्व के गण्यमान्य धनवानों या महापुरुषों के रूप में माने जाते हैं उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत घोर गरीबी और संकटों में की। एन्ड्रू कारनेगी शुरू में एक मजदूर था, लाल बहादुर शास्त्री (स्व. प्रधानमंत्री) ने अपनी बाल्यावस्था में बेहद गरीबी का सामना किया, हेनरी फोर्ड (फोर्ड कंपनी के संस्थापक) ने भी अपने जीवन का प्रारम्भ बहुत गरीबी में किया था। ऐसे हजारों उदाहरण हैं जिनमें महान बनने वाले युवकों की आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक स्थिति आपसे कहीं अधिक खराब थी। जब वे सफल हो गए, जब वे महान बन गए तो आप क्यों नहीं कामयाब हो सकते?

एक गरीब लड़का कंधे पर अपना खोंचा लटकाए रेलगाड़ी के डिब्बों में घूम रहा था। वह ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए जोर-जोर से आवाजें लगाता जा रहा था। एक बलिष्ठ आदमी इस लड़के की आवाजाही और आवाजों से क्रोधित हो उठा। उसने इस लड़के के गाल पर जोर का चांटा मारा और धक्का दे दिया, लड़का अचानक हुए आक्रमण से बहुत डर गया। उसके कान से खून रिसने लगा। उसके शरीर में गुम चोटें आईं। कानों में लगी चोट के कारण वह थोड़ा बहरा हो गया।

इस लड़के के माता-पिता के पास इतने रुपये नहीं थे कि वे उसे किसी स्कूल में भर्ती करवा सकें। अत: वह लोगों से किताब किराए पर लेकर रात में 'लाइट हाउस' की आग के सहारे पढ़ा करता था।

उसे विज्ञान में बहुत रुचि थी। वह तरह-तरह के वैज्ञानिक प्रयोग अपनी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

छोटी-सी घरेलू प्रयोगशाला में किया करता था। वैज्ञानिक पुस्तकें पढ़ने और वैज्ञानिक प्रयोगों को करने में उसे इतनी रुचि थी कि खाना-पीना और सोना तक भूल जाया करता।

एक वैज्ञानिक आविष्कार करने में वह दस हजार (10,000) बार असफल हुआ परंतु 10,001वीं बार सफल हो गया।

क्या आप जानते हैं यह कौन था? यह व्यक्ति था अमरीका का प्रसिद्ध और सबसे धनवान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन। अमरीका आज भी अपने इस वैज्ञानिक पर गर्व करता है। इस समय मैं इस पुस्तक को जिस विद्युत बल्ब की रोशनी में लिख रहा हूं उसका आविष्कारक यही महान वैज्ञानिक था।

थॉमस एडिसन की सफलता और यश से पूर्ण जीवनी हमें यह शिक्षा देती है कि चाहे **तुम हजारों बार नाकामयाब हो जाओ, असफल हो जाओ, हार जाओ पर हिम्मत न हारो, हौसला मत छोड़ो। हर असफलता से शिक्षा लो उस शिक्षा को अपनाकर फिर से कोशिश करो, पूरे उत्साह और विश्वास के साथ प्रयत्न करो। अगर तुमने अपने जीवन में इस नीति को अपना लिया तो एक न एक दिन कामयाबी जरूर तुम्हारे कदमों को चूमेगी।**

''मुझे अपने जीवन में थॉमस एडिसन से बहुत प्रेरणा मिली (फ्रांस के वीर नायक) नेपोलियन बोनापार्ट के जीवन में जहां सफलता पाने के बाद एक अहंकार आ गया था, वहीं एडिसन महान सफलता और यश पाने के बाद भी पहले जैसे ही विनम्र बने रहे। **वास्तव में सच्चा इंसान वही है जो कामयाबी पाने के बाद भी विनम्र बना रहे, अपनी इंसानियत को नहीं त्यागे।''**

यह विचार हैं इस पुस्तक के प्रणेता श्री के.एल. बग्गा के। उनको भी जीवन में कई बार असफलताएं मिलीं, अनेक संकटों का सामना करना पड़ा, कठिनाइयां और मुसीबतें उठानी पड़ीं, दिन-रात अथक परिश्रम करना पड़ा परंतु उन्होंने कभी अपना हौसला नहीं छोड़ा। हर नाकामयाबी से शिक्षा लेकर बार-बार प्रयत्न किए और एक दिन पूरे दिल्ली राज्य के प्रतिष्ठित-प्रसिद्ध और सफल व्यक्तियों की अग्रणी श्रेणी में गिने जाने लगे।

□□

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

26

जीवन की चुनौतियों का सामना कीजिए

ऑल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइसेंज के परिसर में स्थित रोटरी कैंसर हॉस्पिटल में इण्डियन ओस्टोमी सोसायटी उन लोगों की निःशुल्क सेवा करती है, जिन्होंने ओस्टोमी, इलास्टमी या यूरास्टमी का ऑपरेशन कराया हुआ है। इस सोसायटी में श्री के.एल. बग्गा, ट्रेजरार के पद पर 20 साल से सेवा कर रहे हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनके दो प्रेरणापूर्ण संस्मरण उन्हीं की लेखनी से।

इंडियन ओस्टोमी सोसायटी के सदस्यों का कार्य ओस्टोमेट्स को कम मूल्य पर अच्छे उपकरण दिलवाना ही नहीं है वरन् डॉक्टर द्वारा सलाह दिए जाने के बाद भी जो लोग ऑपरेशन करवाने से डरते हैं अथवा ऑपरेशन करवाने के बाद अपनी नई शारीरिक स्थिति तथा आवश्यकताओं के अनुसार अपने को मानसिक रूप से तैयार नहीं कर पाते अथवा डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं, उनको अपने अनुभवों तथा उदाहरणों से नई प्रेरणा एवं उत्साह देना भी है। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक सहायता और मानसिक शक्ति वही व्यक्ति दे सकते हैं जो ऑपरेशन के अनुभवों से गुजर कर एक खुशहाल जीवन जी रहे हैं।

मुझे दूसरे ओस्टोमेट्स साथियों से जो प्रेरणा तथा उत्साह मिला था, उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। इसी प्रकार मैंने भी अनेक ओस्टोमेट्स की इस बारे में यथायोग्य सेवा की है। इस संबंध में मुझे अपने एक साथी की याद आ रही है।

उन्होंने अपना ओस्टोमी का ऑपरेशन करवा लिया था और वह सफल

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रहा था। परंतु अपनी नई विकृत शारीरिक स्थिति के साथ वह समझौता नहीं कर पा रहे थे। यहां तक कि उन्हें अपने शरीर से इतनी घृणा हो उठी थी कि उन्होंने खाना-पीना और बात करना तक छोड़ दिया था। इस प्रकार वे स्वेच्छा से मृत्यु को गले लगाने के लिए तिल-तिल कर मर रहे थे।

मुझे उनके परिवार के सदस्यों ने यह सब हाल बताया। मैं उनके घर पहुंचा। सचमुच में वह एक कमरे में चुपचाप लेटे थे। बिल्कुल चुप, आंखों में घोर निराशा और आंसुओं की धार।

मुझे देखकर घर के सभी सदस्यों में उत्साह की एक हल्की-सी लहर जगी। पर उन्हें विश्वास नहीं था कि मैं कुछ खास कर सकूंगा।

मैंने उनके कमरे में जाकर कमरे के अंदर से चटखनी लगा ली। उन्होंने कुछ आश्चर्य से मेरी ओर देखा लेकिन बोले कुछ नहीं। उस कमरे में मेरे और उनके अलावा कोई नहीं था।

मैंने एक-एक कर अपने सब कपड़े उतार दिए और उन्हें अपने शरीर की दशा बताते हुए कहा, ''तुम बहुत कम रो रहे हो, मैं जब तुम्हारी जैसी हालत में था, मेरे आंसुओं से पूरा तकिया भीग गया था। **देखो! मेरी ओर! मेरी तथा तुम्हारी शारीरिक दशा में कोई फर्क नहीं है सिवाय इसके कि मैंने जीवन को पूरी जिन्दादिली से जीने का जो निश्चय किया था वह अब भी पूरे विश्वास से निभा रहा हूं। रोज व्यायाम करता हूं, खुश रहता हूं और ऐसा कोई काम नहीं जो मेरी उम्र का दूसरा आदमी कर सके और मैं न कर सकूं। आज मेरे होंठों पर मुस्कान है और तुम्हारे चेहरे पर दुख। आखिर क्यों? जब मैं जीवन को पूरी खुशी और उत्साह से जी सकता हूं तो तुम क्यों नहीं जी सकते?''**

कपड़े पहनकर मैं उसकी बगल में बैठ गया।

''अच्छा अब चलता हूं। तुम्हें जो ठीक लगे करो।'' मैंने कहा।

उसने मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में एक नई चमक आ गई थी।

मैंने पूछा, ''चाय पीने के लिए नहीं कहोगे?''

उसने बंद दरवाजे की ओर देखा। मैंने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। बाहर उसके माता-पिता, पत्नी, बेटा बड़ी आशा लिए खड़े थे। वे धीमे-धीमे अंदर आ गए।

उसने कहा, ''इनके लिए चाय लाओ।''

सबके चेहरे खिल उठे। वह कई दिनों बाद चार शब्द बोला था।

''मैं चाय अकेले नहीं पिऊंगा, तुम पिओगे तभी पिऊंगा।''

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कुछ देर में ही सारा माहौल बदल गया। अन्न-जल छोड़ मौत व्रत धारण करने वाला मरीज मेरे साथ बैठकर चाय-बिस्कुट ले रहा था। इस परिवर्तन से सभी खुश थे।

दूसरे दिन मैं उसे तथा उसकी पत्नी को अपने साथ ओस्टोमी सोसायटी के संरक्षक डॉ. बी.एम.एल. कपूर के पास ले गया। उनकी सलाह के अनुसार नए उपकरण खरीद कर और उनको इस्तेमाल करने का सही तरीका जानकर मरीज को बहुत खुशी हुई। नए उत्साह और खुशी से उसके चेहरे पर चमक आ गई और जीवन जीने की इच्छा जाग उठी।

घर लौटते समय उसने एक प्रसिद्ध मिठाइयों की दुकान के आगे कार रुकवाई और हम सभी ने सहर्ष जलपान किया और वहां से मंदिर में प्रसाद चढ़ाते हुए घर आ गए। उसकी आंखों में आया भाव स्पष्ट रूप से कह रहा था **मैंने जीवन को जिन्दादिली से जीना सीख लिया है, सत्य को स्वीकार कर लिया है। आज वह एक कोठी का** स्वामी है और एक सफल व्यापारी है।

हर दीपावली को वह मेरे घर मिठाई का डिब्बा लेकर जरूर आता है। यह एक मधुर प्रतीक होता है अपनी शपथ दोहराने का, जीवन की चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करने का।

उन्हें देखकर मुझे अंधी, बहरी, गूंगी विश्वप्रसिद्ध महिला हेलन केलर की याद आ जाती है। उसने अपने एक इंटरव्यू में कहा था—

''सुख का एक द्वार बंद हो जाए तो दूसरा खुल जाता है। परन्तु ज्यादातर हम बन्द द्वार की ओर देर तक ताकते रहते हैं कि परमात्मा द्वारा जो नया द्वार खोला गया है, उसे देख ही नहीं पाते।''

मैं इसके आगे एक पंक्ति और जोड़ना चाहूंगा—''कामयाब वही होता है जो नाकामयाबी मिलने के बाद भी उन्नति के नए द्वार के खुलते ही उसकी ओर बढ़ जाता है।''

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

27

एक पत्र जो पतवार बन गया

"मेरी पत्नी की हालत बहुत खराब है। डॉक्टर कहते हैं कि अगर उसने ऑपरेशन नहीं कराया तो वह बचेगी नहीं। वह पंत अस्पताल में भर्ती है। जिद कर रही है कि ऑपरेशन नहीं कराएगी चाहे मर जाए। आप उसे आकर समझाएं बहुत मेहरबानी होगी।" मेरे एक परिचित ने मुझसे दुख भरे स्वर में कहा।

"इसमें मेहरबानी की क्या बात! यह तो मेरा फर्ज है। मैं अभी आता हूं, आप चलें।" मैंने उत्तर दिया।

दस-पन्द्रह मिनट में अपना काम निपटाकर तथा अपने कर्मचारियों को उनके कार्य समझा कर मैं कार लेकर सीधे पंत अस्पताल पहुंच गया।

रोगिणी के पति तथा परिवार वाले मेरी प्रतीक्षा करते हुए बाहर ही मिल गए। उन सभी के चेहरों पर दुख की काली छाया स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मैंने उन सबको धीरज बंधाया, "आप लोग चिन्ता नहीं करें। मैं रोगिणी को ऑपरेशन करवाने के लिए राजी कर लूंगा।"

मैं जब रोगिणी के कमरे में पहुंचा वह दर्द से कराह रही थी। मुझे देखते ही बोली, "मैं ऑपरेशन करवाने से बेहतर मरना समझती हूं। ऑपरेशन के बारे में कुछ नहीं कहना।"

"बहन! तुम ठीक कह रही हो। मैं ऑपरेशन के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। मैं भी जब तुम्हारी तरह इस भयानक रोग से पीड़ित था तो मैंने भी ओस्टोमी ऑपरेशन करवाने से मना कर दिया था। पर मैं तुमसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूं।"

"पूछिए?"

"क्या तुम अपने पति और बच्चों से प्यार करती हो?"

"हां करती हूं।"

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

"जरा सोचो, तुम्हारे बिना उन छोटे-छोटे बच्चों और तुम्हारे पति का क्या होगा जो तुम्हें इतना प्यार करते हैं?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। बस आंखें बंद कर कुछ सोचने लगी। उसकी आंखों के किनारों से आंसुओं की रेखाएं फूट पड़ीं। कुछ क्षण चुप रहकर मैंने आगे कहा—"आजकल मेडिकल साइंस ने इतनी तरक्की कर ली है कि ऑपरेशन करवाने में कोई खतरा नहीं और सफल ऑपरेशन हो जाने के बाद तुम्हारे पति, बच्चों और परिवार वालों को कितनी खुशी होगी, जरा सोचो। मैं तुम्हें लिखकर देता हूं तुम्हारा ऑपरेशन पूरी तरह कामयाब होगा और तुम, तुम्हारा परिवार एक सुखी जीवन गुजारेगा।"

मैंने एक कागज उठाया और कलम से उसमें अपने कथन को पूरा लिख दिया। नीचे अपने हस्ताक्षर करके तारीख डाल दी।

उस कागज को रोगिणी के तकिए के नीचे रखते हुए मैंने कहा, "बहन! मैंने अपने वचनों को कागज पर लिखकर रख दिया है। मैं परमात्मा से तुम्हारे स्वास्थ्य लाभ और सुख के लिए प्रार्थना करूंगा।"

इतना कहकर मैं परमात्मा से उसके स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करते हुए बाहर आ गया।

दूसरे दिन मुझे उस रोगिणी बहन के एक रिश्तेदार ने फोन पर सूचित किया कि वह ओस्टोमी ऑपरेशन के लिए तैयार हो गई हैं। मुझे बहुत खुशी हुई और मैंने परमात्मा को धन्यवाद दिया।

इसके दो-तीन दिन बाद मुझे खबर मिली कि उसका ऑपरेशन हो गया और वह सफल रहा है। मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। मैंने मंदिर जाकर प्रसाद चढ़ाया और बंटवाया।

बात आई-गई हो गई। इण्डियन ओस्टोमी सोसायटी के हम सभी सदस्य कैंसर रोगियों के लिए इस प्रकार के सेवा और प्रोत्साहन के कार्य करते ही रहते हैं। यही हमारा धर्म है और कर्म भी। इससे हमें एक प्रकार की आध्यात्मिक खुशी मिलती है।

कई वर्ष बीत गए। एक दिन अचानक मैं उस बहन के घर के पास से गुजर रहा था। सोचा उससे भी मिलता चलूं। मैं उसके घर पहुंचा दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला, सामने वही बहन खड़ी थी। पूरी तरह स्वस्थ, सुंदर और खुश।

मुझे देखकर उसने बड़े प्रेम भाव से अभिवादन किया और ड्राइंग रूम में बैठा कर बोली, "भाई साहब, आपके आने से मुझे बहुत खुशी हुई। आप जरा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बैठिए। मैं अभी आती हूं।'' इतना कहकर वह ड्राइंग रूम से घर के अंदर चली गई।

मैं इंतजार करता रहा। शायद कोई मिठाई, पकवान या फल लाने गई हो। पर दस मिनट बीत गए वह नहीं आई। मैंने जोर से कहा, ''बहन कोई तकल्लुफ करने की जरूरत नहीं।''

''बस अभी आती हूं।''

कुछ मिनटों बाद जब वह वापस लौटी तो उसके हाथ में मिठाइयां, पकवान या फलों से भरा थाल था?

नहीं, उसके हाथ में इनमें से कुछ नहीं था। वहां था सिर्फ एक पुराना-सा कागज वही मेरा पत्र जिसमें मैंने उसे ऑपरेशन करवाने की प्रेरणा दी थी।

''भाई साहब! आपके पत्र ने मुझे और मेरे परिवार को नया सुख भरा जीवन दिया है। इसे मैं एक अनमोल खजाने की तरह संभाल कर रखती हूं।''

मेरा दिल परमात्मा के प्रेम और उसकी कृपा से भर उठा।

कवि उदयभानु हंस ने इस विषय में कितनी सुंदर पंक्तियां लिखी हैं—

''माना दुख का अंत नहीं है,
सुख का मधुर वसंत नहीं है,
आपस में यदि दर्द बांट लें
बोझ हृदय का कम हो जाए,
हर मावस पूनम हो जाए।''

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

28

जब मुझे परमात्मा का अनुभव हुआ

जाड़ों की एक रात, कड़ाके की सर्दी, साथ में हवा ऐसी बर्फीली कि ठंड से दांत किटकिटाने लगे। करीब 9 बजे का समय था। मैं रात्रि भोजन करके सड़क पर टहलने के लिए निकला।

थोड़ी दूर चलने के बाद मैंने देखा कि एक अधेड़ आदमी सड़क के किनारे पड़ा जोर-जोर से कराह रहा है। उसके पास जाकर पूछा, ''क्या बात है भाई उसने दर्द भरी आवाज में धीमे से उत्तर दिया।''

''एक गाड़ी ने टक्कर मार दी। मुझे बहुत चोट आई है, पैरों से उठा तक नहीं जाता। भगवान के लिए मुझे अस्पताल पहुंचा दो।''

''मैंने गौर से देखा। सचमुच में उसके पैर से खून निकल रहा था।''

''अच्छा! मैं अभी गाड़ी लेकर आता हूं।''

घर आकर मैंने अपनी कार निकाली। अपनी पत्नी से कहा कि अभी आधे घंटे में आता हूं और चल दिया।

मैं उस व्यक्ति को उठाकर अस्पताल ले गया। वहां उसका एक माह तक इलाज करवाया। जब वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया उसने और उसके घर वालों ने मुझे बहुत धन्यवाद दिया।

मुझे उस व्यक्ति की सेवा करते हुए ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं परमात्मा की सेवा कर रहा हूं। एक अपूर्व आध्यात्मिक आनन्द भाव से मेरा हृदय भर गया।

मैंने यह अनुभव किया कि जहां नित्य पूजा-पाठ करने से मनुष्य के मन को शांति मिलती है वहीं गरीबों, दुखियों, बीमारों और वृद्धों की सेवा करने से सच्ची आध्यात्मिक शांति तथा आनन्द का अनुभव होता है। इससे जीवन में उन्नति करने की शक्ति तथा प्रेरणा मिलती है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इस संबंध में मुझे एक घटना की याद आती है। मैं देहरादून में अपने घनिष्ठ मित्र 'दून दर्पण' समाचार पत्र के स्वामी श्री एस. वासु के साथ भोजन कर रहा था। हमारी बातचीत का केन्द्र था सच्चा सुख या आनन्द किसमें है?

वह बोले, "बग्गा सबसे मुख्य बात यह है कि सुख और आनन्द के भावों में मौलिक अंतर है। सुख का उल्टा दुख होता है और इनका आपस में निकट का संबंध है। दुख से सुख पैदा होता है और सुख से दुख। इनका चक्कर जीवन भर घूमता रहता है। परंतु मेरे विचार से आनन्द बिल्कुल अलग तरह का भाव है और यह उन क्षणों में अनुभव होता है जब हमारा अहम् पूरी तरह विलीन हो जाता है। उस समय न सुख रहता है और न दुख क्योंकि हम ही नहीं होते।"

"मैं आनन्द के भाव का अर्थ ठीक से नहीं समझा, कोई उदाहरण देकर बताइए।" मैंने कहा।

"**आपने कभी अनुभव किया होगा कि जब हम किसी दुखी, बीमार, घायल या गरीब आदमी की सेवा अपने अहम् या अहंकार को भूलकर निःस्वार्थ भाव से करते हैं तो एक प्रकार की अद्‌भुत खुशी मिलती है।** हमें दूसरे व्यक्ति को स्वस्थ, सफल और सुखी देखकर ऐसा अनुभव होता है मानो कुछ नई उपलब्धि हुई हो जिसका मूल्य नहीं लगाया जा सकता, यही भाव आनन्द का भाव है। **उस समय इतना दिव्य अनुभव होता है जैसे परमात्मा का प्रेम भरा स्पर्श मिल गया हो। आदमी लाख बड़ा बन जाए, धनवान और यशस्वी हो जाए लेकिन अगर उसने इस आनन्द का अनुभव नहीं किया तो समझ लीजिए उसका पूरा जीवन असफल हो गया।**"

जब इस प्रकार आनन्द भाव का अनुभव हो जाता है, आदमी सब कुछ छोड़कर अपना जीवन मानवसेवा में लगा देता है। अपना तन-मन-धन सब कुछ दीन-दुखियों की सेवा में समर्पित कर देता है। **संसार ऐसे ही व्यक्तियों को 'महान' शब्द से विभूषित करता है और वे सदा के लिए अमर हो जाते हैं।**

मैंने उनकी बातों से सहमति प्रकट करते हुए कहा, "आपकी बात सच्ची है लेकिन इसे समझता कौन है?" सब लोग अपने और परिवार के सुख के लिए ज्यादा से ज्यादा दौलत कमाने में जुटे रहते हैं। इससे आगे बढ़े तो अपने रिश्तेदारों को अपने व्यापार में लगा दिया। कुछ लोगों में परोपकार करने की अधिक भावना होती है, वे जात-बिरादरी की सेवा-सहायता में जुट जाते हैं। विरले ही लोग पूरी मानवजाति के कल्याण की बात सोचते हैं।"

"**इसीलिए महापुरुष भी विरले लोग ही बन पाते हैं। जिंदगी का असली**

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आनन्द मानवसेवा द्वारा महान बनने में ही है। ऐसे तो करोड़ों लोग रोज मरते-जीते हैं परंतु मदर टेरेसा, महात्मा गांधी, नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, हेनरी फोर्ड, एण्ड्रू कारनेगी जैसे लोग मरकर भी अमर बने रहते हैं। असंख्य लोग उनसे प्रेरणा लेते हैं, जीवन में नए उत्साह और शक्ति का अनुभव करते हैं।

यही कारण है कि किसी महान लेखक ने कहा था—''**महान पुरुषों का जीवन एक प्रकाश स्तम्भ की तरह होता है जो जीवन-सागर में भूले-भटके व्यक्तियों के जीवन को सदैव सही मार्ग पर चलने के लिए अपनी प्रकाश किरणों को बिखेरता रहता है।**'' मेरे मित्र श्री एस. वासु बोले।

उसी क्षण मैंने निश्चय किया कि मैं अपने जीवन को महान पुरुषों के द्वारा दिखाए गए आदर्शों के अनुसार बनाने का प्रयत्न करूंगा।

यहां मुझे अपने एक मित्र की कुछ प्रेरणापूर्ण काव्य पंक्तियां याद आ रही हैं—

समय की रेत पर पड़े
महापुरुषों के चरण चिह्न,
हमें देते हैं प्रेरणा
उस प्रकाशपथ पर
आगे बढ़ते रहने की, जहां
सबकी सुख-सफलता में
व्यक्ति का अहं भी मिट जाता है,
परमचेतना में घुल जाती है
व्यक्ति की आत्मचेतना।
रह जाता है शेष
केवल आनन्द, परमानन्द
यही तो है महामुक्ति का भाव!

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

29

कामयाबी के विविध रूप

"जीवन में किसी भी प्रकार की सफलता पाने के लिए यह पहली और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि व्यक्ति में उसके लिए एक ज्वलंत इच्छा हो और इस इच्छा पूर्ति के लिए वह सर्वस्व त्याग करने के लिए तत्पर हो। व्यक्ति में इतनी तीव्र इच्छा तभी हो सकती है जब उसका लक्ष्य उसे अत्यधिक प्रसन्नता तथा उपलब्धि का भाव देने वाला हो।"

—स्वेट मार्डेन

शरद् ऋतु की सुबह के 5 बजे थे, चारों ओर अंधेरा छाया था। एक व्यक्ति सुनसान सड़क पर तेज कदमों से बढ़ा जा रहा था। कहीं-कहीं उसे देखकर कुत्ते भौंकने लगते और उसकी ओर झपटते। वह शांत भाव से डबलरोटी के कुछ टुकड़े उनकी ओर फेंक देता। कुत्ते दुम हिलाते हुए रोटी खाने लगते। वह व्यक्ति आगे बढ़ जाता।

मार्ग में चलने वाले कई मकानों के आगे खड़े होकर वह व्यक्ति आवाज लगाता "चलो! समय हो गया।" कुछ व्यक्ति उसे रास्ते में ही मिल जाते और उसके साथ हो लेते। वे सब दिल्ली के शालीमार बाग क्षेत्र के किसी बाग में एकत्रित होते और व्यायाम करना प्रारम्भ कर देते।

ऊपर जिस व्यक्ति का वर्णन किया गया है, वह हैं श्री के.एल. बग्गा। उन्होंने सन् 1980 में कुछ गिने-चुने साथियों को लेकर व्यायाम विकास केन्द्र की इस इलाके में स्थापना की। इन साथियों में प्रमुख हैं—"**सर्वश्री बी.एम. बिग, के.के.वर्मा, ओ.पी. धवन, सुंदर लाल बंसल, इन्द्रजीत ग्रोवर** जिन्होंने इस कार्य में अपना पूरा सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त सर्वश्री **महेन्द्र नन्दा, सुधीर सचदेवा, बी.एम. भंडारी, एच-एस. वालिया, एच. आर. वधवा** ने भी उन्हें अपने सामूहिक प्रयासों द्वारा पूरा सहयोग दिया।"

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

श्री के.एल. बग्गा के एक अभिन्न मित्र स्व. श्री त्रिलोक चन्द जिंदानी प्रात:काल सदा उनके साथ घूमने जाया करते थे। श्री जिंदानी का पहले स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। परंतु नियमित रूप से प्रात:काल भ्रमण और व्यायाम करके उन्होंने पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लिया था। लगभग 86 वर्ष की आयु में उनका अचानक हृदयगति बन्द हो जाने से स्वर्गवास हो गया। अंतिम क्षण तक वह स्वस्थ रहे।

व्यायाम विकास केन्द्र से संबंधित यह सभी सज्जन अपने-अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और सांसारिक दृष्टि से भी उनकी गणना सफल व्यक्तियों में की जाती है। लेखक को इन सभी सज्जनों से मिलने तथा उनके विचार जानने के अवसर मिले हैं।

इन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अपने अनुभवों के अनुसार *संसार में किसी भी प्रकार की सफलता पाने के लिए शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य ही वह नींव है जिस पर सफलतारूपी महल खड़ा होता है।*

अगर व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं और वह अधिकतर रोगग्रस्त रहता है तो उसके लिए संसार की बड़ी से बड़ी सफलता भी व्यर्थ है।

प्रात:काल बागों आदि सुंदर एवं प्राकृतिक स्थलों पर जाकर व्यायाम करने से स्वास्थ्य ही अच्छा नहीं बनता वरन् नए लोगों से सामाजिक संबंध भी बनते हैं। **सफलता की चाह रखने वाले को चाहिए कि वह ऐसे लोगों से मित्रता बढ़ाए जो शुभ विचार (Positive Thinking) रखने वाले और महत्वाकांक्षी हों।**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह जैसी संगत में रहता है वैसा ही बन जाता है। अत: जहां तक हो सके व्यक्ति को चाहिए कि वह किसी ऐसे व्यायाम, योग, खेल-कूद क्लब, जिम्नेजियम, तरणताल आदि का सदस्य बने जहां उसे सज्जन, प्रतिष्ठित, शुभ विचार रखने वाले व्यक्तियों की संगत प्राप्त हो। ऐसे व्यक्तियों से मित्रता करके हम उनसे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में सलाह और सहायता ले सकते हैं। अच्छे मित्रों और विश्वसनीय व्यक्तियों की संगत में रहने से हमारा मनोरंजन भी होता है और जीवन में उन्नति करने की प्रेरणा भी मिलती है।

आज शालीमार बाग, पीतमपुरा, रोहिणी के पार्कों में लगभग बीस से अधिक स्थानों पर व्यायाम विकास केन्द्र की शाखाएं हैं जिनमें 500 से भी अधिक स्त्री-पुरुष भाग लेते हैं। श्री बग्गा और उनके सहयोगियों ने जनसाधारण में स्वस्थ तथा विधायक (Healthy & Positive life style) जीवन शैली अपनाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

का जो स्वास्थ्य आन्दोलन चला रखा है वह दिन-प्रतिदिन प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है।

वास्तव में स्वस्थ नागरिक ही किसी देश की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं और अगर आप इस दृष्टिकोण से देखें तो श्री के.एल. बग्गा ने इस दिशा में जो सराहनीय कार्य किए हैं वे सदैव आदर सहित याद किए जाते रहेंगे। लोग उनसे आज भी प्रेरणा ले रहे हैं और भविष्य में भी लेते रहेंगे।

व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, जापानी स्पर्श चिकित्सा रेकी आदि आपको जीवन में उन्नति करने के लिए कितनी शक्ति देते हैं, यह आप इनकी साधना करने के बाद ही जान सकते हैं।

व्यायाम विकास केन्द्र की गतिविधियों और स्वस्थ जीवन के नियमों पर प्रकाश डालने के लिए वह 'स्वास्थ्य संदेश' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित करते हैं।

समाज सेवा तथा समाज सुधार के अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा उन्होंने कभी नहीं की। शालीमार बाग, दिल्ली के सी.बी. ब्लॉक के सामने स्थित 'शालीमार पंजाबी सभा' का भव्य भवन इस तथ्य का जीता-जागता प्रमाण है। श्री के.एल.बग्गा इसके प्रधान संस्थापक हैं और अब संस्था के संरक्षक हैं। वह इस संस्था के प्रेसीडेण्ट रह चुके हैं। दिल्ली के प्रतिष्ठित क्लब 'शालीमार बाग क्लब' की स्थापना और विकास में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान किया है और आजकल इस क्लब के चेयरमैन हैं। रेकी—योग शोध संस्थान की स्थापना कर उन्होंने रेकी तथा योग के क्षेत्रों में शोध और नए प्रयोग करने व करवाने की दिशा में एक नया कदम उठाया है।

चाहे कोई धर्माचार्य हो अथवा राजनीतिक नेता, लेखक हो या कलाकार, समाज सेवक हो या शिक्षाविद् एक बार यदि वह श्री बग्गा के पास कोई उचित मांग लेकर जाता है तो निराश नहीं लौटता। अपनी बुद्धि और धन की सामर्थ्यानुसार वे सबकी यथायोग्य सेवा कर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

अंत में कविवर श्री जयशंकर प्रसाद की कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहूंगा—

''इस पथ को उद्देश्य नहीं है
शांति भवन में टिक रहना,
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं है।''

सफलता की राह पर चलने वाला अंतिम सांस तक उन्नति पथ पर आगे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बढ़ता चला जाता है, केवल अपने लिए नहीं पूरी मानवजाति की उन्नति और खुशहाली के लिए।

अपने लिए तो एक पशु भी जी लेता है। वास्तव में जीवन तो वही जीता है जो दूसरों के स्वास्थ्य, संपन्नता और खुशहाली के लिए जीता है। सच्चे अर्थों में ऐसा व्यक्ति ही सफल व्यक्ति है। आप भी ऐसे व्यक्ति बन सकते हैं।

उठिए! जागिए!! पूरे आत्मविश्वास और उत्साह से आगे बढ़िए!!! कामयाबी आपका इंतजार कर रही है।

पूरा विश्वास रखिए कि आप अपने लक्ष्य को पाने में कामयाब होंगे और आप यह देखकर चकित रह जाएंगे कि आप दिन-प्रतिदिन कामयाबी की ओर बढ़ रहे हैं।

जी हां, निश्चित रूप से आप होंगे कामयाब।

आपकी कामयाबी इसी पल से शुरू हो चुकी है। पूरे विश्वास से मन ही मन दोहराइए—

''परमशक्ति परमात्मा की कृपा से मैं दिन-ब-दिन कामयाबी की राह पर आगे बढ़ता जा रहा हूं।''

अब परमात्मा का नाम लेकर पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ अपने कर्मों को पूर्ण कुशलता से करने में जुट जाइए। इतने लगन और एकाग्रता से जुट जाइए कि आप कामयाबी या नाकामयाबी तो दूर अपने अहं को ही भूल जाएं।

और तब उसी क्षण कामयाबी खुद आपकी तरफ बढ़ना शुरू कर देगी।

यकीन रखिए। पूरा यकीन रखिए—

'आप होंगे कामयाब'

❑❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सद्‌गुणों का विकास

कामयाबी के नियमों को ही साधारण भाषा में गुण कहते हैं। इनका विकास तभी संभव होता है, जब इन्हें सही खाद मिले, सही पर्यावरण मिले, सावधानीपूर्वक इनकी देखरेख की जाए। क्या यह सही नहीं है कि किसी सद्‌गुण को विकसित करने के लिए दुर्गुणों को तिलांजलि दी जाए।

जरा सोचें कि बाग के माली का क्या काम है? वह पौधों की देखभाल करता है, इसलिए कि खर-पतवार (अनावश्यक झाड़-झंखाड़) न पनपें और मुख्य पौधा उस मिट्टी या खाद से अपना पर्याप्त पोषण प्राप्त कर सके।

- हमें अपने मन के बगीचे की निराई कर खर-पतवार रूपी विकारों को उखाड़कर फेंकते रहना चाहिए तभी हमारी बुद्धि का पौधा समुचित विकास पा सकेगा।
- यदि मन में विकार होंगे, तो वे विचारों को अवश्य ही प्रभावित करेंगे, अत: विकार से मुक्ति आवश्यक है।
- कुछ प्राप्त करना है, तो कुछ छोड़ना होगा, यही प्रकृति का नियम है।
- यदि आप दुर्गुणों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो अपने भीतर सद्‌गुणों को अधिक से अधिक स्थान दें। जब सद्‌गुण आने लगते हैं तो अवगुण स्वयं दूर भाग जाते हैं।

सद्‌गुणों में यूं तो ढेरों गुण हैं, किन्तु सफलता के लिए आवश्यक हैं— शिष्ट व्यवहार, कर्मठता, कथनी-करनी, सत्य और ईमानदारी।

जिस व्यक्ति के जीवन में इन पांच गुणों का समावेश हो जाता है, बाकी बचे गुण उसमें स्वयं आ जाते हैं। तमाम गुणों के मूलाधार हैं ये पांच सद्‌गुण।

शिष्ट व्यवहार

किसी व्यक्ति को व्यवहार से होने वाले हानि-लाभ का अनुमान लगाना बेहद कठिन है। फिर भी हमें एक नजर में यह अवश्य ही देखना होगा कि शिष्ट

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

व्यवहार या अशिष्ट व्यवहार से हमारा जीवन किस प्रकार प्रभावित होता है—

- व्यवहार से ही हम प्रसन्न या खिन्न होते हैं। शिष्ट व्यवहार से हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है और अशिष्ट व्यवहार से खिन्नता।
- व्यवहार ही हमें ऊपर उठाता है और व्यवहार ही नीचे गिरा देता है। शिष्ट व्यवहार उन्नति का द्योतक है और अशिष्ट अवनति का।
- बहुत शक्ति लगाने पर भी जो काम नहीं होता वह शिष्टाचार के द्वारा सहज ही हो जाता है।
- व्यवहार के कारण ही हम सभ्य या असभ्य कहलाते हैं। जिस प्रकार वायुमंडल का सब पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार हमारे व्यवहार का प्रभाव हम पर तथा हमारे आसपास रहने वालों पर पड़ता है।
- समाज के सब कलह, शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार से दूर हो जाते हैं और सब एक दूसरे को अपना समझने लगते हैं।

शिष्टाचार जैसी उत्तम कोई नीति नहीं, क्योंकि जहां बढ़िया-बढ़िया बातों से भी कोई काम नहीं बनता, वहां शिष्टाचार विजयी होता है। लोगों को खुश करने की कला यदि आप जानते हैं, तो आप आगे बढ़ सकते हैं, क्योंकि यही आगे बढ़ने की कुंजी अथवा मूलमंत्र है।

यदि व्यक्ति ईमानदार है, परिश्रमी है, परन्तु उसका व्यवहार अभद्र है, तो बड़े से बड़ा सद्गुण भी बेकार हो जाता है। इसके विपरीत यदि व्यक्ति का व्यवहार शिष्ट है तो बहुत से दोषों के रहते भी हर स्थान पर न केवल उसका आदर होता है बल्कि उसे अपने अधिकांश कार्यों में सफलता भी मिलती है।

आपकी उन्नति या प्रगति में आपका व्यवहार मील का पत्थर साबित होता है। सद्गुणों में यह सबसे महान गुण है और सफलता के लिए एक अति आवश्यक योग्यता भी।

कर्मठता

व्यवहार कुशलता के उपरांत कर्मठता का भी विशेष महत्व है।

आपका लक्ष्य चाहे कोई भी हो, कैसा भी हो, यदि आप कर्मठ नहीं हैं तो अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएंगे।

- कर्मठ व्यक्ति के पास यदि धन-दौलत न हो और केवल आत्मविश्वास, शिष्टता हो, तब भी वह बड़े-बड़े कार्य करने में सफल हो जाता है।
- कर्मठ व्यक्ति की कार्यशक्ति ही उसकी पूंजी होती है।

संसार के सभी सम्पन्न एवं यशस्वी व्यक्तियों की एक ही कहानी है। जो

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जितना अधिक कर्मठ था, उसे उतनी ही प्रसिद्धि मिली, वह उतना ही महान बना और उतनी ही अधिक धन-सम्पत्ति अर्जित की।

सैलेस्ट ने एक स्थान पर लिखा है—"हर व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है।"

सैलेस्ट ने बिल्कुल सही लिखा है। कुछ लोग कल्पनाओं में अपने भाग्य का निर्माण करते हैं किन्तु कर्मठ व्यक्ति सपनों में नहीं भटकता। वह अपनी कर्मठता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अपने भाग्य का निर्माण कर लेता है।

- श्रम ही इस संसार में ऐसा प्रमाणपत्र है, जिसे कहीं भी और किसी भी क्षण दिखाकर आप मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकते हैं।
- आप अपने सामने यह संदेश लिखकर रख लीजिए—"जहां श्रम नहीं, वहां सफलता नहीं।"
- सफलता रूपी भवन के द्वार का दरवाजा प्रत्येक व्यक्ति अपने श्रम से खोलता है। उसके भीतर जाने पर वह दरवाजा स्वत: ही बंद हो जाता है ताकि कोई दूसरा बिना श्रम किए उसमें दाखिल न हो सके, यह कुदरत का नियम है।
- कोई किसी दूसरे के लिए सफलता रूपी भवन का द्वार नहीं खोल सकता। पिता पुत्र के लिए भी नहीं।
- जो कर्म करेगा, वही प्रवेश पाएगा।

चींटी से प्रेरणा लें

कर्म करने की प्रेरणा हमें दुनिया के सबसे छोटे जीव चींटी से लेनी चाहिए। चींटी सदा कार्यरत रहती है। सही अर्थों में वही हमें यह संदेश देती है—"आराम हराम है।"

आप किसी चींटी को देखिए, रात हो या दिन, सुबह हो या शाम वह कर्म करती दिखाई देगी। किसी एक चींटी को भी आपने आज तक सोते हुए नहीं देखा होगा। वह धुन की पक्की होती है। वह विफलता से हताश नहीं होती। दाना लेकर वह दीवार पर चढ़ती है, बिल के नजदीक जाकर गिर जाती है। इस पर वह अफसोस करने या मार्ग की किसी बाधा को कोसने में वक्त जाया नहीं करती, दोबारा श्रमशील हो उठती है। दाना मुंह में दबाती है और पुन: दीवार पर चढ़ने लगती है।

इसी प्रकार वह बीसियों बार गिरती है, मगर हिम्मत नहीं हारती।

अत: हमें चींटी को इस मामले में अपना प्रेरणास्रोत बना लेना चाहिए।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कर्मशील ही देखते हैं सफलता का सूरज

जो व्यक्ति छोटे-छोटे कामों को ईमानदारी से करता है, वही बड़े कामों को भी ईमानदारी से कर सकता है।

—सैमुअल

कर्मठ, इहलोक-परलोक का ध्यान कर कर्म नहीं करता, वह तो बस क्रियारत रहता है।

—भरत मुनि

जो एक दिशा में नहीं बल्कि इधर-उधर दौड़ता है, वह जीवन में खाली रह जाता है।

—नजरुल इस्माइल

जिसके मन में लगन है, उसके लिए हर मुश्किल आसान है।

—जेम्स एलेन

असफलता का प्रधान कारण प्रायः धनाभाव नहीं अपितु शक्ति और सामर्थ्य का अभाव होता है।

—डेनियल वेब्स्टर

कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है।

—विनोबा भावे

कर्मशील व्यक्ति के लिए हवाएं मधु बहाती हैं, नदियों में मधु बहता है और औषधियां मधुमय हो जाती हैं।

—ऋग्वेद

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

श्रम के संदर्भ में कबीर जी कहते हैं—

श्रम से ही सब होत है, जो मन राखे धीर।
श्रम ते खोदत कूप ज्यों, थल में प्रगटै नीर॥

अर्थात्— श्रम से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं, बिगड़े काम भी सुधर जाते हैं यदि मन में धैर्य हो। जैसे परिश्रम से कुआं खोदने पर, पृथ्वी के कठोर तल से भी पानी निकल आता है। तात्पर्य यह है कि जीवन में पुरुषार्थ और परिश्रम से अवश्य ही सफलता मिलती है।

कथनी-करनी

(कथनी) वचनबद्धता आपकी सफलता के लिए ही नहीं बल्कि सामाजिक मान-प्रतिष्ठा के लिए भी बेहद आवश्यक है।

वादा निभाना, किसी भी सूरत में, किसी भी हाल में। हमारे भारत में वचनबद्धता को कोई अधिक महत्व नहीं दिया जाता, इसलिए व्यक्ति विफल होता है।

ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो वादे के पक्के हों। ऐसे लोग किसी भी क्षेत्र में अधिक नहीं टिक पाते। लोग उनकी असलियत जान लेते हैं और फिर उनसे कतराने लगते हैं। ऐसे लोग कोई काम शुरू तो बड़े जोर-शोर से करते हैं, मगर फिर असफल होकर अपना बोरिया-बिस्तर समेट लेते हैं।

व्यक्ति को अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं रखना चाहिए। जो कर सकता हो, जो निभा सकता हो, उस वचन को कहें। जो वचन निभा न सकता हो, उसे भूलकर भी मुंह से न निकालें।

ऐसे ही वादे के झूठे लोगों के विषय में जनमानस को सचेत करते हुए कबीर दास जी ने कहा है—

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय।
कथनी से करनी करें, विष से अमृत होय॥

कबीर जी कहते हैं कि ऐसे कपटी लोगों से सावधान रहना चाहिए जिनकी कथनी खांड जैसी मीठी होती है, परन्तु उनकी करनी विष की भांति दुखदायी। यदि कथनी के अनुसार करनी भी की जाए तो विष जैसी करनी भी अमृत बन जाती है।

वाणी का भी महत्त्व है

वाणी जिह्वा से प्रसारित होती है और जिह्वा के संदर्भ में बहुत कुछ कहा गया है। कहते हैं जिह्वा वाणी-कुवाणी बोलकर भीतर चली जाती है और उसका

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असफलता का अर्थ

असफलता व्यर्थ नहीं जाती। असफलता अनुभव देती है, जिससे प्रेरणा लेकर सफलता को और निश्चित किया जा सकता है। असफलता अस्थायी होती है। एक बार असफल होने का अर्थ यह नहीं कि वह जीवन में ही असफल हो गया। इसी प्रकार किसी एक कार्य में सफल होने का भी यह अर्थ नहीं कि वह जीवन में सफल हो गया।

सुफल या कुफल बाकी शरीर को भोगना पड़ता है।

इस संदर्भ में मुझे एक कथा याद आ रही है।

पुराने समय की बात है। अरब देश के एक खलीफा का एक गुलाम बड़ा ही बुद्धिमान था। सभी उसकी बुद्धिमानी की दाद देते थे। एक दिन खलीफा ने भरे दरबार में उसे बुलाया और कहा कि अगर तुम मेरे एक सवाल का मुझे जंचता-सा उत्तर दोगे तो मैं तुम्हें गुलामी से मुक्त कर दूंगा। गुलाम ने अदब से सिर झुकाकर कहा—''हुजूर सवाल करें, खुदाबंद ने चाहा तो उत्तर ठीक ही होगा।''

खलीफा ने कहा—''शरीर का सबसे बेहतर अंग कौन सा है ?''

गुलाम ने तपाक से कहा—''जुबान।''

''और शरीर का सबसे बद्तर अंग ?''

''हुजूर वह भी जुबान है।''

यह सुनकर सभी दरबारी अचरज में पड़ गए। तब खलीफा ने गुलाम से इस बात का खुलासा करने को कहा। तब गुलाम बोला—''हुजूर! इसे सबसे बेहतर अंग मैंने इसलिए कहा है कि यदि जुबान से मीठा बोलें तो फूल झड़ते हैं। इंसान को इनामोइकराम हासिल होता है और इसी जीभ से अगर कड़वा बोलें तो लानत-मलानत मिलती है और हुजूर कभी-कभी इस जुबान के कारण ही आदमी फांसी के फंदे तक पहुंच जाता है।''

यह सुनकर खलीफा बेहद खुश हुआ और उसने उसे गुलामी से मुक्त कर दिया।

इस प्रकार केवल वाणी के बल पर उस गुलाम ने मुक्ति पा ली। अत:—

''किसी शिल्पकार की भांति वाणी को सदा, तराशते रहना चाहिए। पहले कर्कशता को तराशकर अलग कर दें, फिर कठोरता की छंटाई करें। इसके बाद

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इसमें मिठास और शालीनता रूपी रंग भरकर एक अद्वितीय पेंटिंग की भांति सजा-संवारकर आप जिस किसी के सामने भी प्रस्तुत करेंगे, वही वाह-वाह कर उठेगा और आपकी सफलता का मार्ग सरल-सुगम होता जाएगा।''

सत्य

गुणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण है—सत्यता।

सत्य जीवन में हर किस्म का प्रकाश फैलाकर अंधकार को निगल जाता है और जिसके जीवन में अंधकार नहीं है, जो भीतरी प्रकाश से सराबोर है, उसके मार्ग में बाधाएं नहीं आतीं।

सत्याचरण करने वाले व्यक्ति के साथ स्वयं ईश्वर होते हैं।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय सांच है, ताके हिरदय आप॥

जीवन हजारों घटनाओं से मिलकर बनता है। ऐसा कभी नहीं होता कि कोई व्यक्ति हर कार्य में हर बार असफल होता हो या हर बार, हर समय सफल ही होता रहे, ध्यान जीवन की सफलता पर देना चाहिए।

—एन.एल. दशोरा

सत्य के लिए सब कुछ त्यागा जा सकता है, पर सत्य को किसी भी चीज के लिए नहीं छोड़ा जा सकता।

—स्वामी विवेकानंद

असत्य के समान पातकपुंज नहीं है। समस्त सत्कर्मों का आधार सत्य ही है।

—महर्षि वाल्मीकि

हमारे समस्त दुखों का प्रमुख कारण यह है कि हम स्वयं अपने प्रति सच्चे न रहकर दूसरों को खुश करते रहते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

ऐसा सत्य बोलना चाहिए जो हित, मित, ग्राह्य हो।

—स्वामी महावीर

इस संसार में केवल दो ही तत्व हैं—सुन्दरता और सत्य। सुन्दरता वह है जो प्रेमियों के हृदय में निवास करती है और सत्य वह है जो कृषकों की बाजुओं में निवास करता है।

—खलील जिब्रान

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कबीर साहेब कहते हैं, इस जग में सत्याचरण जैसा कोई तप नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्यभाव स्थित है, वहां सत्य स्वरूप परमात्मा स्वयं ज्ञान प्रकाश रूप में प्रकट हैं।

अत: सत्य को जीवन में अपनाएं।

ईमानदारी

'ऑनेस्टी इज द ज्वैलरी ऑफ ह्यूमैन।'

ईमानदारी मनुष्य का आभूषण है।

ईमानदारी का जीवन में बड़ा महत्व है और जो व्यक्ति सफलता का इच्छुक है, उसे ईमानदार बनना ही होगा। बेईमानी के रास्ते पर चलकर कोई व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। बेईमानी अपनाकर कुछ लोग यदि थोड़ा-बहुत कुछ हासिल कर लेते हैं, तो उसे सफलता नहीं कहा जा सकता। वह धोखा होता है।

ऐसा धोखा, जो बेईमान व्यक्ति स्वयं को ही दे रहा होता है।

यहां एक बात उल्लेखनीय है कि जो व्यक्ति ईमानदार नहीं है, वह आत्मविश्वासी भी नहीं हो सकता, क्योंकि बेईमान में आत्मविश्वास होता ही नहीं। ईमानदार व्यक्ति आत्मविश्वास से भरपूर होता है। लोग उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं। लोग उसकी ईमानदारी और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसकी ओर खिंचे चले आते हैं।

ईमानदार व्यक्ति की हर चेष्टा से भरपूर आत्मविश्वास झलकता है और ऐसे ही व्यक्ति को लोग अपना नेता मानकर उसका अनुसरण करते हैं। ऐसे व्यक्ति के मित्रों की सीमा नहीं होती।

प्रत्येक व्यक्ति ईमानदार व्यक्ति से व्यवहार करना पसंद करता है। हर कोई उसके करीब आना चाहता है।

व्यवसाय की यदि हम बात करें तो उसके व्यावहारिक नियमों में भी पहला नियम ईमानदारी ही है।

- सभी धर्मों में ईमानदारी को धार्मिक आज्ञा के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- जीवन में कुशलता और खुशहाली के लिए ईमानदारी आवश्यक है।
- संसार में ईमानदार व्यापारियों व कर्मचारियों की सदा मांग रहती है।
- जो लेन-देन में खरे नहीं होते, अपने वचन के प्रति ईमानदार नहीं होते, उन्हें अक्सर असफलता का मुंह देखना पड़ता है।
- ईमानदार व्यक्ति बिकाऊ नहीं होते।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अत: जीवन में ईमानदारी को प्रश्रय दें। यदि आप ईमानदारी से किसी कार्य को करते हैं, तो आधी सफलता पहले ही प्राप्त कर लेते हैं।

हमारा विचार है कि जो व्यक्ति ईमानदारी पर दृढ़ रहता है, उसे बिना प्रयास के ही बहुत कुछ मिल जाता है। इस संदर्भ में याद करिए उस लकड़हारे की कहानी, जिसे ईमानदारी के कारण सोने और चांदी की कुल्हाड़ियां वन देवता ने वरदान के रूप में दी थीं।

आइए, अब उन अवगुणों पर विचार करें, जो आपकी सफलता के मार्ग में बाधक बनते हैं। यूं तो बहुत सारे अवगुण हैं, किन्तु मुख्य रूप से चार अवगुण अधिक प्रभावशाली माने गए हैं—काम, क्रोध, मद, लोभ। शेष अवगुणों को इन्हीं की अभिव्यक्ति माना गया है।

काम

कामी पुरुष के संदर्भ में कहा गया है कि ऐसा व्यक्ति सदा अशान्त रहता है। वह हर पल, हर घड़ी काम की ही चिन्ता से अशान्त रहता है। जितनी तल्लीनता से वह काम के विषय में सोचता है, उतनी तल्लीनता से वह किसी दूसरे कार्य का चिन्तन नहीं कर सकता, इसलिए कामी पुरुष का किसी भी क्षेत्र में सफल होना मुमकिन नहीं है।

- जिस प्रकार लोभी व्यक्ति हर पल, हर घड़ी धन का चिंतन करता है, उसी प्रकार कामी पुरुष काम का चिंतन करता है।
- भोगों में लिप्त रहने से मनुष्य को शारीरिक सुख भले ही प्राप्त हो जाए, उसकी आत्मिक उन्नति नहीं हो सकती।

कामातुराणां न भयं न लज्जा

कामी को न भय होता है और न लज्जा।

कामी के विषय में कबीर जी कहते हैं—

कामी कुत्ता तीस दिन, अन्तर होय उदास।
कामी नर कुत्ता सदा, छहरितु बारह मास॥

अर्थात्—कुत्ता बारह मास में तीस दिन ही विषय भोग करता है, फिर उदास होकर उस वृत्ति से दूर हो जाता है, पर कामी पुरुष तो ऐसा भ्रष्ट है कि वह बारह महीने और छ: ऋतुओं में सदैव कुत्ते जैसा ही बना रहता है।

क्रोध

यदि इसे बुराइयों व दुर्गुणों का राजा कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जब तक मनुष्य के मन में काम, क्रोध, अहंकार और लोभ की अल्पमात्रा भी शेष है, तब तक पण्डित और मूर्ख दोनों एक समान हैं।

—संत कबीर

जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो।

—कन्फ्यूशियस

क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति नष्ट हो जाती है।

—महर्षि वेद व्यास

इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि इस पर युगों से लिखा जा रहा है और युगों-युगों तक लिखा जाता रहेगा, किन्तु इसकी बुराइयों का अन्त नहीं हो पाएगा।

आइए देखें, विश्व की इन महान विभूतियों ने क्रोध के कैसे-कैसे रूप पेश किए हैं—

महान विभूतियों के क्रोध के संदर्भ में जो विचार हैं, वे उनके अनुभव सिद्ध हैं। इन विचारों को चैलेंज नहीं किया जा सकता, क्योंकि जिन परिस्थितियों में इन अमूल्य विचारों का जन्म हुआ होगा, वे परिस्थितियां आज बदल नहीं गई हैं। हां, इन अमूल्य विचारों ने लोगों के जीवन अवश्य बदल दिए हैं। जिन्होंने इन विचारों को शिक्षा मानकर जीवन में अपनाया, वे आज सफल हैं।

जो शिक्षापूर्ण वचन को एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं, वे मूढ़ हैं। मूढ़ व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता।

आज भी जब हम सुबह-सुबह समाचार पत्र का अवलोकन करते हैं तो अक्सर ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते हैं कि किसी ने क्रोध में आकर किसी को चाकू घोंप दिया या गोली मार दी।

ऐसे कार्य करने वाले जितने भी शख्स हैं, उनके सम्बन्ध में मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि सभी कमजोर हृदय के होते हैं। उनमें आत्मबल की कमी होती है, शरीर दुर्बल होता है। ऐसा दुस्साहसपूर्ण कार्य ऐसे लोग क्रोध में ही कर सकते हैं, क्योंकि क्रोध की यह विशेषता होती है कि वह व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति का हरण करके उसे पशु बना देता है। किसी पशु से किसी ऐसे ही कार्य की आशा की जा सकती है, जो इंसानियत के विरुद्ध हो।

इस प्रकार आत्मनियंत्रण खो देने वाले व्यक्ति अपना जीवन बरबाद कर लेते हैं और क्षणिक आवेग उन्हें जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा देता है।

यदि हम जेलों में जाकर कैदियों एवं सुधार गृहों में जाकर बाल अपराधियों

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सफलता-असफलता

सफलता और असफलता के पीछे कई प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारण होते हैं जिनको मनुष्य कभी जान ही नहीं सकता। सफल होने पर मनुष्य उसे अपना पुरुषार्थ मान लेता है और असफल होने पर भाग्य को दोष देता है। सफल होने पर वह जिस प्रकार अपने आपको श्रेय देता है, उसी प्रकार उसे चाहिए कि असफल होने पर अपने दोषों को देखे। उन गलतियों को ढूंढ़कर दूर करे जिनके कारण वह असफल हुआ। भाग्य को कोसना गलत है। अपने दोषों को सहज रूप से स्वीकार कर लेने से ही मनुष्य पुनः प्रयास करके सफलता पा सकता है।

—स्वर्णसूत्र

से बात करें तो उनमें से अपने गुनाह के लिए अधिकांश का यही उत्तर होगा कि हमें पता नहीं कि क्या कैसे हुआ। बस, गुस्से में ऐसा हो गया।

अब आप स्वयं सोचिए कि एक क्षण का क्रोध और जीवन भर का कलंक। इसलिए क्रोध से आपको यथासम्भव बचना चाहिए।

- क्रोध आपकी सफलता के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।
- यह बनते काम बिगाड़ देता है।
- क्रोध से आपकी उस शक्ति का ह्रास होता है, जो आपकी सफलता में आवश्यक होती है।
- क्रोध आपके आत्मबल को कमजोर करके आपको निर्बल बनाता है।
- यदि आप क्रोधी हैं तो इस बुरी आदत को तुरन्त त्याग दें। दिखावे के लिए भी यदि क्रोध करते हैं, तो भी यह बुरा है। क्रोध का हर रूप बुरा है। यह आपकी मानसिक शक्ति का नाश करता है। आपको जो शक्ति काम में लगानी चाहिए, वह क्रोध की आग में जलकर राख हो जाती है।

और अन्त में होरेस फ्लेचर का यह कथन याद रखें—

"क्रोध एवं चिंता के कारण व्यक्ति केवल निराश ही नहीं होता बल्कि कई बार तो क्रोधावेग में उसकी मृत्यु तक हो जाती है।"

क्रोध के संदर्भ में कबीर जी कहते हैं—

क्रोध अगनि घर-घर बढ़ी, जलै सकल संसार।
दीन, लीन निज भक्त जो, तिनके निकट उबार॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

क्रोध की अग्नि घर-घर में बढ़ी हुई है, हर मानस मन में सुलग रही है और इससे सारा संसार जल रहा है, परन्तु विनम्र भक्त अपनी ज्ञान भक्ति की साधना में लीन हैं, उनकी सत्संगति में ही उद्धार है अर्थात् इससे बचने का उपाय है।

मद

अहंकार को मद भी कहते हैं। मद अर्थात् नशा।

अहंकार व्यक्ति का नाश कर देता है। मद में, गर्व में चूर व्यक्ति अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता। वह अपने आपको सर्वश्रेष्ठ व दूसरों को छोटा समझता है। अपनी तुलना में दूसरे को मूर्ख व अज्ञानी समझता है। दूसरे की बात नहीं सुनता और मदांध होकर अनेक उल्टे-सीधे काम करके अपने काम बिगाड़ लेता है।

ऐसे अहंकारी व्यक्ति के सम्बन्ध में कबीर जी ने कहा है—

मद अभिमान न कीजिए, कहै कबीर समुझाय।
जा सिर अहं जु संचरे, पड़ै चौरासी जाय॥

जो बहुत घमंड करते थे, वे ही अपने घमंड के कारण गिरे, इसलिए किसी को बहुत घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड ही हार का द्वार है।

—शतपथ ब्राह्मण

अभिमान ही पराभव का द्वार है।

—शतपथ ब्राह्मण

मुझे अभिमान नहीं है—ऐसा भासित होने सरीखा भयानक अभिमान और कोई नहीं है।

—विनोबा भावे

किसी भी दशा में अपनी शक्ति पर घमंड न कर। वह बहुरूपिया आकाश हर पल सहस्त्रों रंग बदलता है।

—हाफिज

अहंकार करना मूर्खों का काम है।

—शेख सादी

जिसने अहंकार का त्याग कर दिया, वह भव सागर से तर गया।

—योग वसिष्ठ

अहंकार देवताओं का भी सर्वनाश कर देता है।

—ऋषि अंगिरा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अर्थात्—मद-अभिमान का त्याग कर दो। कबीर साहेब समझाते हुए कहते हैं कि जिसके मस्तिष्क में अहंकार का प्रवेश हो जाता है। वह सदा चौरासी के फेर में पड़ा रहता है।

घमंड आदमी के विवेक को धुंधला कर देता है, क्योंकि घमंडी व्यक्ति अपना मूल्य अधिक आंकता है। वह स्वयं को दूसरों से बढ़िया और ऊंचा आदमी समझता है।

- अहंकारी यदि शक्तिशाली हो तो वह अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों को सताने में करता है।
- अहंकारी सदा अविवेकपूर्ण कार्य करता है।

इसलिए सफलता के इच्छुकों को अहंकार का त्याग कर देना चाहिए। अहंकार व्यक्ति का विनाश कर देता है।

लोभ

चौथा सबसे बड़ा अवगुण है लोभ।

लोभ को लेकर बहुत सी किंवदंतियां मशहूर हैं। एक कहावत तो बड़ी ही मशहूर है कि लोभी की चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए। लोभी व्यक्ति आवश्यक-अनावश्यक का भेद नहीं समझता। वह हर चीज में लोभ करता है। यहां उल्लेखनीय है कि लोभ केवल धन का ही नहीं होता, लोभी हर बात में लोभ करता है। मेहनत में लोभ करता है। श्रम बचाता है। शरीर की देखभाल तक में कंजूसी करता है।

लोभ का एक अर्थ लालच भी है। व्यक्ति को लोभ-लालच से यथासम्भव बचना चाहिए। जो आवश्यक कार्य है, उनमें खर्च अवश्य करना चाहिए।

बंहुत से लोग इसलिए असफल हैं कि वे 'कुछ' खर्च ही नहीं करना चाहते। इस कुछ में सब कुछ है, धन भी और श्रम भी।

वे चाहते हैं कि कोई दूसरा पैसा लगा दे और हम श्रम लगाएं। अगर कामयाब हो गए तो अच्छा है और अगर डूब गए तो अपना क्या गया? ऐसे एक नहीं, हजारों लोग आपको मिल जाएंगे। दबा-कुचला जीवन बिता लेंगे, लेकिन लोभवश गांठ का पैसा लगाकर कुछ अच्छा करने की चेष्टा नहीं करेंगे।

इसका कारण यही है कि असफल हो जाने का खौफ उनके दिलो-दिमाग पर हावी रहता है। वे उस 'थोड़े से' के लोभ में फंसे रहते हैं, जो उनके पास होता है। आगे बढ़ने से डरते हैं।

लोभी के विषय में कहा गया है—

"लोभी व्यक्ति दूसरों को मिथ्या प्रलोभन देकर भी अपने लाभ के लिए सदैव लालायित रहता है।"

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

लोभ से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होने से लज्जा, लज्जा नष्ट होने से धर्म तथा धर्म नष्ट होने से धन और सुख नष्ट हो जाते हैं।

—स्वामी विवेकानंद

विश्व में अत्याचार, अनीति, अधर्म, असमाधान का कारण व्यक्ति का अधिक लोभी होना है।

—श्री ब्रह्म चैतन्य

अधिक लोभ (लालच) से बुद्धि का अंधा हो जाना किन मुसीबतों का कारण नहीं है?

—कथा सरित्सागर

लोभ की पूर्ति कभी नहीं होती, इसलिए लोभ के साथ क्षोभ सदा रहता है।

—समर्थ गुरु रामदास

लोभी पूर्ण संसार पाने पर भी भूखा रहता है, किन्तु सन्तोषी एक रोटी से ही अपना पेट भर लेता है।

—शेख सादी

लालची व्यक्ति दान व उपभोग से रहित होकर, अत्यन्त दुख सहकर भी दूसरों के लिए धन की रक्षा करते हैं, यह विचित्र ही है।

—राज तरंगिणी

"लोभी व्यक्ति के हृदय में दूसरों का धन-वैभव पाने की अनधिकार हीन कुचेष्टा सर्पिणी की भांति रहती है, जो अवसर पाते ही डस लेती है।"

"लोभ रजोगुण से उत्पन्न, अज्ञान से पोषित, निर्लज्ज और निर्दयी होता है, इसलिए लोभी व्यक्ति सदा अशान्त, असंतुष्ट तथा दयनीय स्थिति में रहता है।"

संत कबीर ने लोभ के विषय में कहा है—

बहुत जतन करि कीजिए, सब फल जाय नसाय।
कबीर संचै सूम धन, अन्त चोर ले जाय॥

अर्थात्—लोभी के बहुत जतन-उद्योग से संग्रह किए गए धन का सब फल अन्त में नष्ट ही हो जाता है। कबीर साहेब कहते हैं कि कंजूस लोभ करके जीवन भर धन जोड़ता रहता है और अन्त में उसे (धन को) चोर-लुटेरे ले जाते हैं। अर्थात्, वह स्वयं भी उसका उपभोग पूर्णतः नहीं कर पाता।"

❑ ❑ ❑

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

विश्वप्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डेन

तथा उनकी ही शैली में लिखित अन्य ऐसी अनमोल पुस्तकें जो निराशा छोड़ जीना सिखाएं

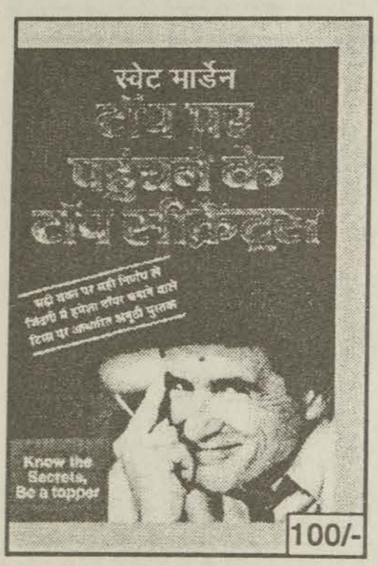

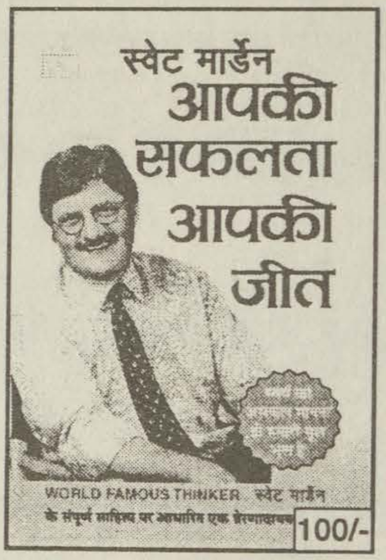

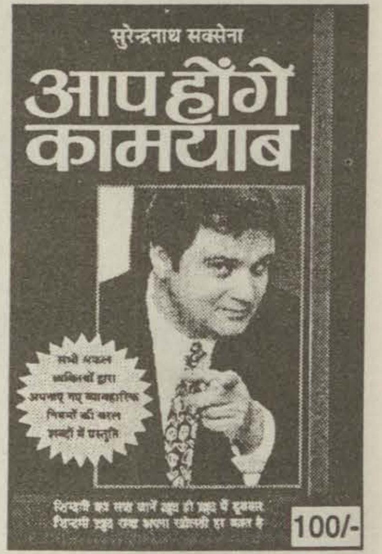

स्वेट मार्डेन

❑ टॉप पर पहुंचने के टॉप सीक्रेट्स	100.00	❑ आत्मविश्वास कैसे बढ़ाएं	50.00
❑ आपकी सफलता आपकी जीत	100.00	❑ चिंता छोड़ो, सदा खुश रहो	50.00
❑ आप होंगे कामयाब	100.00	❑ चलो चांद को छू लें	50.00
❑ आत्मविश्वास आपकी जीत	80.00	❑ भाग्य को बदलो	50.00
❑ व्यवहार कुशल कैसे बनें	50.00	❑ उन्नति कैसे करें	50.00
❑ सफलता की चाबी	50.00	❑ आज की बचत कल का सुख	50.00
❑ सफल कैसे बनें	50.00	❑ अपनी शक्ति को पहचानो	50.00
❑ सुख की खोज	50.00	❑ निराशा एक अभिशाप	50.00
❑ हंसते-हंसते जीना सीखो	50.00	❑ जीवन में सफलता कैसे पाएं	50.00

कुछ अन्य

❑ सफलता के 101 अनमोल सूत्र	60.00	❑ जीवन को कैसे जीएं	50.00
❑ स्मरणशक्ति कैसे बढ़ाएं	60.00	❑ सच्चा सुख सच्ची शांति कैसे संभव	50.00
❑ पर्सनैलिटी डवलपमेंट कोर्स	60.00	❑ आपकी खुशियां आपके हाथ	50.00
❑ इम्प्रूव योर ब्रेन पावर	60.00	❑ करोड़पति कैसे बनें	50.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हिंदी के पाठकों के लिए

शरत्चन्द्र | रवीन्द्रनाथ टैगोर | बंकिमचन्द्र

की कालजयी कृतियों की अनुपम प्रस्तुति

टैगोर साहित्य

☐ गीतांजलि (दो रंगों में)	60.00	☐ कुलवधू	60.00
☐ गोरा	60.00	☐ आंख की किरकिरी	60.00
☐ नाव दुर्घटना	60.00	☐ रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षाप्रद कहानियां	60.00

शरत् साहित्य

☐ पथ के दावेदार	60.00	☐ मझली दीदी	50.00
☐ गृहदाह	60.00	☐ देवदास (फिल्मी फोटो फीचर के साथ)	50.00
☐ चरित्रहीन	60.00	☐ देवदास	40.00
☐ श्रीकांत	60.00	☐ परिणीता	40.00
☐ कमला	50.00	☐ बिराज बहू	40.00

बंकिम साहित्य

☐ आनन्द मठ	50.00	☐ सीताराम	40.00
☐ राजमोहन की स्त्री	40.00	☐ राजसिंह	40.00
☐ कपाल कुण्डला	40.00	☐ चन्द्रशेखर	40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

विश्वप्रसिद्ध साहित्य, अध्यात्म एवं नीतिशास्त्र

साहित्य जहां आईना है किसी समाज का, वहीं अध्यात्म और नीतिशास्त्र कराते हैं सही दिशा का ज्ञान

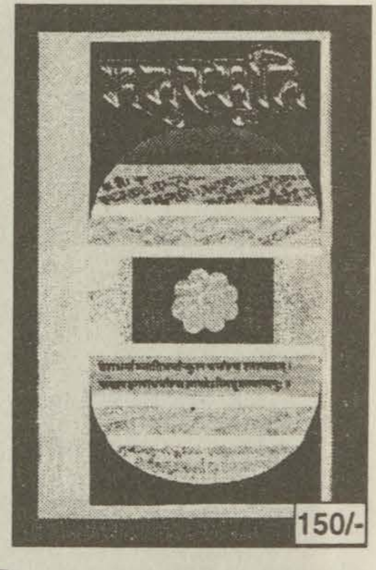

विश्वप्रसिद्ध साहित्य

- ❑ नेपोलियन बोनापार्ट 150-00
- ❑ कुमारसम्भव 100-00
- ❑ जयशंकर प्रसाद की श्रेष्ठ कहानियां 60-00
- ❑ टॉलस्टाय की श्रेष्ठ कहानियां 60-00
- ❑ उमरावजान 'अदा' 50-00
- ❑ गॉडफादर 50-00
- ❑ खलिल जिब्रान की श्रेष्ठ कहानियां 50-00
- ❑ लोलिता 50-00
- ❑ शेक्सपीयर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 50-00

अध्यात्म एवं नीतिशास्त्र

- ❑ अष्टावक्र महागीता 150.00
- ❑ मनुस्मृति (दो रंगों में) 150.00
- ❑ शुक्र नीति 100.00
- ❑ महान लोगों की वाणी 80.00
- ❑ भर्तृहरि शतक 60.00
- ❑ क्या है वेदों में ? 60.00
- ❑ क्या है उपनिषदों में ? 60.00
- ❑ चाणक्य नीति (नया टू कलर में) 50.00
- ❑ सम्पूर्ण चाणक्य सूत्र 40.00
- ❑ सम्पूर्ण चाणक्य नीति 40.00
- ❑ विदुर नीति 40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आप होंगे कामयाब

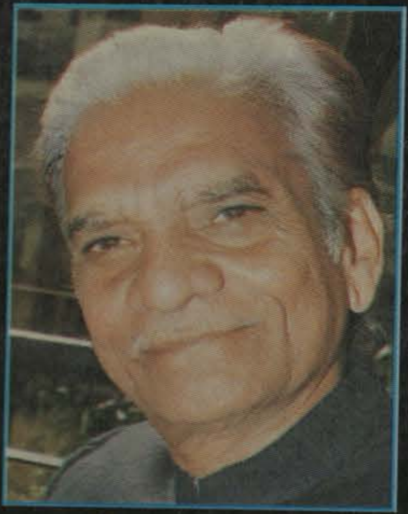

सुरेन्द्रनाथ सक्सेना

लोकप्रिय लेखक सुरेन्द्रनाथ सक्सेना हरियाणा साहि
अकादमी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ऑल इण्डिया आर्टि
एसोसिएशन तथा ऑल इण्डिया जर्नलिस्ट वेलफे
फाउंडेशन दिल्ली द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित हैं। इन
द्वारा लिखित पुस्तकें पाठकों में एक नवीन उत्साह, शक्ति
एवं आत्मविश्वास का संचार करती हैं। ज़िन्दगी
कामयाबी पाने के व्यावहारिक ज्ञान से पूर्ण यह पुस्त
इतनी हृदयस्पर्शी तथा प्रेरणापूर्ण शैली में लिखी गई
कि आपमें एक अटूट आत्मविश्वास भर देगी औ
कामयाबी आपके क़दम चूमेगी।

आप कामयाबी का जो राज़ खोजने के लिए बेचैन हैं, वह आपके ही पास है, लेकिन आपने उसे आज तक नहीं पहचाना। यह प्रेरणादायक पुस्तक आपको वही राज़ बताएगी। इसके बाद आपमें एक ऐसा आत्मविश्वास और साहस जागेगा कि स्वास्थ्य, सफलता, धन, यश तथा ख़ुशहाली आपके चरण चूमने लगेगी।

के. एल. बग्गा

मैंने इस पुस्तक में दिए गए नियमों को पूरी गहराई से पढ़ा ही नहीं, वरन् उन्हें अपने जीवन में आज़माया भी है और यह पाया कि जो भी व्यक्ति उनके अनुसार चलेगा, वह यक़ीनन कामयाबी हासिल करेगा। हर कामयाब आदमी इस पुस्तक में अपने जीवन की एक झलक पाएगा। उसे भी नई-नई कामयाबियों के रास्ते सुझाएगी यह पुस्तक।

परमात्मा आपकी सहायता कर रहा है।
जागिए! उठिए और आगे बढ़िए—
आप होंगे कामयाब!

मनोज
पब्लिकेशन्स

Rs. 100/-

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/